गन्ध

कथा संग्रह

सुजीत कुमार झा

प्रकाशक

श्री रामानन्द युवा क्लब

जनकपुरधाम

गन्ध
कथा संग्रह

कथाकार : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल

विक्रम सम्वत : २०७०

प्रति : १०००

मोल : २००।- टका

प्रकाशक : श्री रामानन्द युवा क्लव, जनकपुरधाम

ISBN : 978-9937-2-6420-4

मुद्रक : हिसि अफसेट प्रिन्टर्स जमल, काठमाण्डू

न ज ढ ल म ज

A Collection of Maithili Stories

By : **SUJEET KUMAR JHA**

समर्पण

परम श्रद्धामूर्ति पितृत्व श्री
रमेश झाक ओहि पावन
चरणमे समर्पित, जकर
चिन्ह चिन्हक अनुगामी
होएबाक प्रयत्नमे हमर
जीवन अपन धन्यता
खोजैत रहल ।

प्रकाशकीय

हमर कार्यकालक प्रारम्भ पुस्तक बिमोचनसँ भेल छल। फेर ओ पुस्तक युवा पत्रकार सुजीत कुमार झाक छलन्हि। आ फेर कार्यकालक अन्तमे सेहो पुस्तकके लऽ कऽ आएल छी। मैथिली पुस्तक निकालए प्रति सरकार उदासिन रहल समयमे मैथिलीक लेल काज करएवला संघसंस्थेकेँ काज करए पड़ि रहल अछि। हमसभ इहे मान्यता अनुरुप पुस्तक प्रकाशन करैत आबि रहल छी। ओना ई काजक लेल अपनाकेँ गौरवान्वित महसुस करैत छी।

फेर हमरसभक संस्था पुस्तक प्रकाशनधरि मात्र सीमित नहि रहैत अछि। मैथिली भाषा साहित्य, कला, संस्कृति आ खेलकूदक लेल निरन्तर काज करैत रहैत अछि। सामाजिक क्षेत्रमे काज करएबला अग्रणी संस्था अछि। अर्थात हमसभ कोनो काजमे पाछा नहि रहैत छी।

हमरसभक ई अभियानके आगा बढ़ाबएमे आम लोककेँ बड़का योगदान अछि। छोटसँ बड़काधरिके सभ काजमे आमलोककेँ अत्यधिक सहयोग भेटैत अछि। ई सहयोग सभ एहिना भेटैत रहए एकर अपेक्षा करैत छी। 'गन्ध' कथा संग्रह प्रकाशनक लेल साहित्यकार एवं पत्रकार सुजीत कुमार झा हमरासभक संस्थाकेँ अवसर देलन्हि ताहिलेल हुनका आभार प्रकट करैत छी।

क्लबक आगा बढाबएमे क्लबक पदाधिकारी प्रकाश मिश्र, मनमोहन साह, अनरुद्ध साह, खेमकान्त शर्मा, अजित तिवारी, राजेश दास, जितेन्द्र साह, सुनिल मिश्र, रामबालक मिश्र, रीना यादव, रामपुकार यादव संगहि पूर्व अध्यक्ष जीबनाथ चौधरी, अबधेश पोखरेल आ अशोक दत्तक सहयोग आ सहकार्यक भूमिका नहि बिसरल जा सकैत अछि।

अन्तमे ई पुस्तक केहन लागल से सल्लाह अवश्य पठाबी से अपेक्षा अछि।

नवीन कुमार मिश्र
अध्यक्ष
श्री रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम

सुजीतक कथा संग्रह गन्धक प्रसंग एक विमर्श

❐डा.रेवती रमण लाल

पत्रकार सुजीत कुमार झाक चारिम कथा संग्रह 'गन्ध' हमरा हातमे अछि। बालकथा संग्रह 'कोइली घूरि आउ' हम पढने तऽ नहि छी मुदा हिनक चिड़ै आ जिद्दी पढने छी। एहि तीनू कथा संग्रहमे विशेष अन्तर नहि देखना जाइछ। 'गन्ध' कथा संग्रह नेपालक कथाकार लोकनिमे दोसर पाँतीक कथाकार रमेश रञ्जन, डा. सुरेन्द्र लाभ, श्याम सुन्दर शशि आदि कथाकार लोकनिक धारक अछि जे डा. धीरेन्द्रक कथाकारसँ बिलग धारक बुझाइत अछि।

सुजीत कुमार झाक 'गन्ध' कथा संग्रहमे १२ गोट कथा संग्रहित अछि। एहिमे अधिकांश कथासभ महिला पर केन्द्रित, प्रेम ओ वासना पर आधारित अछि। एहि तरहक कथा लिखैतकाल ई बात ध्यान देल जएबाक चाही जे कथाकार कथाक भीतर पैसि कथाक यौन मनोविश्लेषणात्मक भावनाक डोरि कतहुँ छिटैक नहि जाए, रोमानीक पनक गन्ध लेने ई कथासभ युवा मोनके गुदगुदबैत अछि , हृदयमे टीस उठैत छैक, तन आ मनके झनकृत तऽ करैत छैक मुदा ओ उन्माद बनि मानवीय मूल्य बोधक सीमाके पार नहि भ ऽ जाए तकर ध्यान राखब आवश्यक अछि।

सुजीतजीक कथा संग्रह एहि सम्वेदनशीलता प्रति सचेष्ट देखल जाइत अछि। प्रत्येक कथा मानव मूल्यप्रति सजग एवं सचेष्ट अछि से कहबामे हमरा कोनो आपति नहि अछि।

एहि संग्रहक कथा गन्ध उर्दू कथाकार मन्टोक कथा 'बु' मोन पाड़ि दैत अछि। मन्टोक कथामे गन्ध ओहि छौड़ीक छलैक जकरामे ईछाइनि गन्ध

होइतो कथा नायकके नीक लगलै ओहि गन्धमे कथा नायक डूबल रहए चाहैत छल मुदा एहि कथा नायकके ई होस नहि छलै जे ओकर केश पाकि गेल छैक ।

मोनीक सम्पर्क मनोहरबाबूके मनके रोमानी बना दैत छैक आ विवाह नहि करबाक प्रतीज्ञा कएने मनोहरबाबू विवाह करबाक इच्छा प्रकट कऽ दैत छथि । मोनीक देहक सुगन्ध हुनका आकर्षित कऽ लैत अछि । एहिकथामे ई बात तऽ निश्चित रुपसँ कहल जा सकैछ जे अँग्रेजीक कहबी छैक The Love know no bonds अर्थात प्रेमक आकर्षणक कोनो सीमा नहि होइ छैक । एक हिन्दी गजलक पाँती छैक, 'न उम्र की सीमा हो, न जन्म का बन्धन, जब प्यार करे कोई तो देखे केवल मन...' जखन प्रेमाकर्षण होइ छैक तऽ जाइत पाइत उमेर, कोनो प्रेमकबाट मे नहि अबैत छैक ।

दोसर कथा हम 'दर्दक कहानी' के लै छी, प्रेममे विश्वास घात नहि होएबाक चाही मुदा से होइत रहलैक अछि । नगिना सुमितसँ प्रेम करैत छल आ सुमित सेहो ओकरा पर मोहित छला मुदा लन्दन गेलाक पश्चात ओ त कोइलीक सँग विवाह कलेला मुदा नगिना प्रतीक्षा करैत रही गेलीह । ई केहन विडम्बना ? ई कथा कोनो सिनेमाक प्लट जेकाँ लगैत अछि ।

कथा 'सुलेखा दीदी' सेहो एक गोट प्रेम कथा अछि । एहिमे समाजक बन्धनक कारणे प्रेमी आ प्रेमिका दुनूके मृत्यु भऽ जाइत अछि । प्रेमिकाके तऽ विवाहोपरान्त मृत्यु होइत छैक मुदा प्रेमीके पहिने, ई असफल प्रेमक कथा अछि ।

कथा 'अपन सिन्धुली' मे सेहो असफल प्रेमक कथा अछि । केदार आ सम्फनाक प्रेमक माओवादी जनयुद्धमे दुनूक परिवार छिनभिन कऽ देलक । केदार परिवार सहित समाप्त आ सम्फना अर्थात प्रेमिका अपन बाबूसँग भागिकऽ काठमाण्डू चलि गेल । माओवादी जनयुद्धक त्रासदी पूर्ण कथा अछि ।

'मीना कुमारी' कथामे फेकनक नाच ओकर कलाकारिता एवं

नृत्यक कारणे मीनाक कुमारी नामसँ ओकर नाच पार्टीक जानल जाए लागल छलैक। से अपन बेटीक विवाह ओहि कारणे रोकल जएबाक अवस्था धरि पहुँच गेलैक। कलाकारक हेतु ओकर कला, ओकर जीवन होइत छैक आ ओकरा जखन कोनो कलाकारसँ अलग कऽ देल जाएत से ओकर मृत्युतुल्य भऽ जाइत छैक। सएह भेलैक फेकनके।

'पोस्टमार्टम' कथामे आशंका छलै जे चन्दाक हत्या मन्त्रीजी द्वारा कराओल होइक मुदा जखन चन्दाक प्रेमी महेशके ढाल बनाओल गेल। जखन ओ पकड़ा गेल त मन्त्रीजी स्वयं ओकरा छोरा अनलथि आ एक गोट साक्षत्कारमे जखन हुनका पत्रकार पुछलन्हि तऽ ओ चन्दासँ अपन सम्बन्धप्रति अनभिज्ञता जनबैत कहैत छथि, 'हम कोनो चन्दाके जनबे नहि करैत छी।

कथा बोझमे ई अछि जे माएबाप बेटाबेटीके कष्टसँ जनबा पालि पोसि जुआन बना पैघ लोक बनबैत छथि। कनिको कष्ट बुझाएला पर माएके असिम पीड़ा होबए लगै छै आ ओहे माए जखन कोनो रोगक शिकार भऽ जाएत अछि तऽ अपन जनमल हेतु कतेकटा बोझ साबित होइत छैक ? मुदा जीवनभरि सँग विवाहक हेतु सीउथ छुने पतिके पत्नीक दुर्दशामे चुपे–चुपे कानएके हेतु बाध्य होबए पड़ैत छैक।

'चेचक दागबाला' कथामे चेचक दागवला युवक रेखाके असमंजसमे पारि दैत छैक। ओ भारी अन्तरद्वन्दक चपेटमे पड़ि जाइत अछि। ओ बेर–बेर किए अबैत छैक ? हुनक प्रशंसा किए करैक छैक ? रेखा एक गोट वियाहलि स्त्री अछि हुनक अपन पति सेहो अछि। हुनका होइत अछि जे वियाहल सँ किओ प्रेम कऽ सकैत अछि ? ओ ई बात अपन पतिसँ पुछि दैत छथि मुदा हुनकर पति सेहो कहैत छन्हि जे वियाहलसँ किओ प्रेम कऽ सकैत अछि। तखन ओकरा मनमे आओर झनझवाट उठैत अछि।

हम उपर लिख चुकल छी जे प्रेम जीवनमे कोनो अवस्था कोनो उमेरमे ककरोसँ भऽ सकैत अछि। 'मुनिछुक मानस मनमथ जाग...' विद्यापतिक ई पाँती प्रेमक सास्वत सत्य दिस संकेत करैत अछि। मुदा पूर्वीय संस्कृतिमे विवाहक पश्चात् प्रेम कएल जएत छैक आ पाश्चात्

सभ्यतामे विवाहसँ पहिने ।

युवकक व्यवहार, ओकराद्वारा होइत शब्दाबलीक व्यवहार ओकरा लेल प्रेमक अभाष बुझाइत अछि मुदा फेरु रेखाके होइछैक कि वियाहलसँ किओ प्रेम करै छैक । प्रश्न उठैत अछि ओकरामे आओर अन्हर आबि जाइत छैक । जखन ओकर पति सेहो ओकरा पुछला पर कहैत छैक वियाहलिसँ युवक प्रेम कऽ सकैत अछि । कारण कोनो युवक तऽ फेन्टेसीमे जीबैत अछि । रेखाके होइत छैक की युवकक व्यवहार फेन्टेसीसन लगै छैक कहल गेल अछि 'प्रेमन बाड़ी उपजै प्रेम न हाट बिकाए' मुदा ई केहन आकर्षण छैक ? ओहि युवकमे रेखाक आकर्षण बेसी बुझाइत अछि ।

एहि कथामे देखैत छी तऽ बुझाइए समय परिवर्तनशील होइत छैक । लोक दू गोट संसारमे जीबैत अछि । एक गोट बाहर संसार आ दोसर भीतरक संसार । मनुष्य बाहरक संसारमे आएल परिवर्तन अनुसार अपनाके बनबैत अछि मुदा भीतरक संसारके ओ की करत ? इएह त ओकर मूल उपस्थित छैक । हमरा विचारमे रेखाक ई कथा मूलक वापसी बुझाइत अछि ।

अन्तिम साँझक कथामे सम्पूर्ण परिवार एक गोट अन्तरद्वन्दक अवस्थामे पड़ि जाइत अछि । २२ वर्षक दीदीके काँलेजक एक गोटे मुसलमान विद्यार्थीसँ प्रेम छैक । ओकरासँ विवाह करब परिवारक प्रतिष्ठाक प्रश्न आ विवाह नहि करब एक गोट युवतीक जीवन प्रश्न एहि उधेर बुनमे परिवार रहि जाइत अछि । एहि कथामे किछु पाँती एहन लगैत अछि जे कविता पढ़ैत होइक । कविता तऽ सुजीत जी ओतेक नहि लिखलन्हि मुदा हुनकामे कवि हृदयक अभाव नहि छन्हि ।

सुजीत जीक कथाके एक गोट विशेषता ई देखबामे अबैछ जे हिनक कथाक पात्र सभमे अधिकांश पात्र जीवनक उहापोह किम्बा अन्तरद्वन्दमे फसैत अछि जे आधुनिक कथाक एक गोट विशेष गुण मानल जाइछ । इएह गुण पाठकके ओझरोने रहैछ अन्तधरि । ई गुण सुजीतजीक कथाक कतेको पात्रक जीवनमे देखना जाइछ । हिनक यात्रा एहिना चलैत रहन्हि आ मैथिली साहित्यके नीक–नीक कथा परसैथि से अपेक्षा करैत छी ।

जनकपुरधाम

सम्मति

❐डा. कमलकान्त झा

वर्तमान नेपालीय मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे श्री सुजीत कुमार झा एकटा सशक्त कथाकारक रुपमे उभरिकऽ समक्ष एलाह अछि। एखनधरि हिनक चिड़ै, रिपोर्टर डायरी, जिद्दी आ कोइली घूरि आउ छैप चुकल छनि। कथाक दृष्टिसँ गन्ध हिनक चारिम कथा संग्रह छनि। कथा गढ़बाक हिनकामे अद्‌भूत क्षमता देखाइ पड़ि रहल अछि।

रेडियो मिथिला, दैनिक समाचार पत्र मिथिला डटकम आ एभिन्यूज टिभीक माध्यमसँ हमरा लोकनिक समक्ष एकटा युवा पत्रकारक रुपमे जानल जाइत छलाह। आब चारिटा कथा संग्रहमे अर्थात ६ दर्जन सँ अधिक कथाक माध्यम सँ ई आब पत्रकारसँ अधिक कथाकार बनि चुकलाह अछि। एतेक तीव्र गतिसँ कथा लेखन कम लोकसँ सम्भब भऽ पबैत अछि। हिनक कल्पनाशीलता अद्‌भूत अछि। मानव मनक सूक्ष्मतम सम्वेदनाकेँ ई छूबि सकैत छथि। कोनहुँ सामान्यहुँ घटनाकेँ बिलक्षण कथाक रुपमे प्रस्तुत करबाक क्षमता रखैत छथि। कोनहुँ कथाक अन्तमे तेहन अद्‌भूत घटना वा परिवर्तन देखा दैत छथि जे पाठकक हृदय ओ मनमस्तिष्ककेँ हिला दैत अछि। हिनका हृदयसँ आशीर्बाद दैत छियनि- बढ़ैत रहथि आ एकदिन उच्चकोटिक साहित्यकार रुपमे जानल जाइथ।

अवकाश प्राप्त विश्वविद्यालय प्राचार्य
लनामिवि दरभंगा

साहित्यक क्षितिज पर एकटा नवतारा

❐राजेश कुमार कर्ण

मैथिली भाषा साहित्यमे वर्षोसँ रुचि राखएबाला सुजीत आब साहित्यकारक दर्जामे आबि गेल छथि। बहुते कम समयमे सुजीतके ई सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। जेना सुजीत पत्रकारिताक क्षेत्रमे प्रतिबद्ध पत्रकारक रुपमे स्थापित छथि आ पत्रकारिताक मार्फतसँ अन्य विषयक अतिरिक्त मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक उत्थानक लेल निरन्तर अपन कलम चलबैत आबि रहल छथि तहिना मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे सेहो सुजीतके नजरअन्दाज नहि कएल जा सकैत अछि।

बहुत कमे लोक किछुए समयमे साहित्यकारक रुपमे अपनाके परिचित कराबएमे सफल होइत अछि आ से सौभाग्य सुजीतके सेहो प्राप्त भेल अछि। डेढ़ वर्ष पूर्व धरि मैथिली भाषा आ साहित्यक लेल सुजीतके छोट–छोट रचना मात्र बाहर भेल छल, ओहो पत्र पत्रिकाक मार्फत मात्र। मुदा आब एहि डेढ़ वर्षक अवधिमे सुजीतके चारिटा महत्वपूर्ण पुस्तक बाहर आएल अछि। जाहिमे तीनटा कथा संग्रह र एकटा रिपार्टर डायरी अछि।

तेज गतिसँ पुस्तक प्रकाशन करएबालामे सुजीत अपन नाम अंकित करएमे सेहो सफल भऽ रहल छथि। सुजीतक पुस्तकक बारेमे चर्चा कएल जाए तऽ हुनक पहिल कथा संग्रह 'चिडै' छल, जाहिमे अधिकांश कथा महिला के नायिका बना कऽ लिखल गेल छल आ महिलाप्रति समाजक दृष्टिकोण एवं महिलाके समाजप्रतिक दृष्टिकोणक बारेमे स्पष्ट रुपसँ चित्राकिंत कएल गेल छल तऽ दोसर कृति रिपोर्टर डायरी मादे सुजीत झा जनकपुर क्षेत्रके अवस्था, ऐतुका समस्या, राजनीतिक दल आ स्थानीय संघ संस्थाक क्रियाकलाप एवं एकरसभक दशा आ दिशाक बारेमे स्पष्ट

कएने छथि ।

तहिना रिपोर्टर डायरीक बाद प्रकाशित भेल 'जिद्दी' कथा संग्रहमे आधुनिक जनजीवन आ परिवेशके बारेमे विश्लेषण कएल गेल अछि तऽ पछिलाबेर प्रकाशित भेल 'कोइली घूरि आउ' बाल कथा संग्रह सेहो बहुत नीक आ पठनीय अछि । जाहिमे हमरा आहाँक गाम घरमे प्रचलित कथा कहबीके स्थापित करबाक प्रयास कएने बुझना पड़ैत अछि ।

एहि प्रकारे देखल जाए तऽ सुजीत किछुए समयमे कथा मादे समाजक विभिन्न वर्ग समुदाय आ क्षेत्रक बारेमे चर्चा करबामे सफल भेल छथि । ताहिसँ हुनका युवा साहित्यकारक रुपमे मैथिलीक साहित्य क्षेत्रमे चिन्हल जा रहल अछि आ सुजीत साहित्यिक क्षितिज पर एकटा नवतारा भऽ उभैर रहल छथि ।

सुजीत कुमार झाक सभ कृति पढ़बाक अवसर भेटल आ संगहि आब प्रकाशित होबएबाला मैथिली कथा संग्रह गन्धक पाण्डूलिपि सेहो पढबाक अवसर प्राप्त भेल अछि । एहि कथा संग्रहमे १२ टा कथा रखबाक योजना सुजीत कएने छथि जे किछुए समयमे प्रकाशित भऽ अपनेसभके हातधरि अवश्य पहुँच जाएत ।

सुजीतक आबएबाला कथा संग्रह 'गन्ध'क बारहु कथा अलग–अलग विषय, प्रसंग आ बातसँ सम्बन्धित अछि जे हमरा अहाँके समाजमे घटि रहल अछि आ कोनो ने कोनो रुपसँ हमर अहाँक समाज ओहि कथा सभक अंश अछि । खासकऽ कथा संग्रहक शीर्षक कथा गन्धके बात करी जाहिमे एकटा एहन परिवेश आ व्यक्तिक बारेमे सुजीत चर्चा कएने छथि जे कथा नायक समाजके सुधारके लेल अपन परिवारके सभ दायित्व छोड़ि दैत अछि, राजनीतिक पार्टी प्रति समर्पित भऽ जाइत अछि आ अपन विवाह सेहो नहि करैत अछि मुदा अचानक उमेर बीतैत गेला पर एकदिन कोना ओहि व्यक्तिके विवाह करबाक मोन होइत अछि आ एकटा विशेष प्रकारक गन्ध कोना हुनका परेशान करैत अछि ताहि सम्बन्धमे नीक जेकाँ चर्चा कएल गेल अछि । संगहि हुनकर सभसँ निकटक कार्यकर्ता आ हुनका बीच मनोद्वन्दके सेहो एहि कथा मादे चित्रण करबाक प्रयास कएल गेल अछि । मुदा अन्ततः उमेर बीतलाक बाद किछु इच्छा कोना दबाबए पड़ैत अछि सेहो कथामे नीक जेकाँ व्याख्या कएल गेल अछि ।

एहिसँ पूर्व सुजीतद्वारा लिखित कथासभमे कथाक विषयवस्तुके सीधा सपाट ढंगसँ आगू बढ़ैत छल आ कथाके निष्कर्ष किछुए पढ़लाक बाद अनुमान कएल जाए सकैत छल । मुदा एहि बेरक कथा संग्रह गन्धके कथा सभके सीधा सपाट ढंगसँ प्रस्तुत नहि क' एकटा नव ढंगक उपचार खोजएमे सुजीत सफल भेल छथि आ कथाक बीच भाग सस्पेन्स एवं विभिन्न मानसिक द्वन्द आ भावसभसँ भड़ल रखने छथि त' अन्तमे मात्र कथाक वास्तविक निष्कर्षके उद्‌घाटन होइछ, जाहिसँ लेखनक विशिष्टता आ कथाक विशिष्टता सेहो बढ़ि गेल अछि ।

जहिना-जहिना सुजीतद्वारा रचित कृतिसभ बढ़ि रहल अछि तहिना–तहिना हुनका भीतर कथाक विषय वस्तुसँ उपचार करबाक नव–नव पद्धतिसभके सेहो जन्म भ' रहल अछि । ई एकटा नीक आ शुभ संकेत अछि जे सुजीतके एकटा नीक साहित्यकार आ कही त' कथाकार बनबामे सहयोगी सिद्ध होएत ।

सुजीतक कथा संग्रह 'गन्ध'मे चेचक दागबला, गन्ध, मीना कुमारी, सुलेखा दीदी, दर्दक कथा, अन्तिम साँझ, पोष्टमार्टम, अनार, बोझ, अपन सिन्धुली, परिवर्तन आ बादल नामक कथासभ समाविष्ट अछि । गन्ध कथा संग्रहमे प्रकाशित होबएबाला सभ कथाक बारेमे एतए चर्चा करबाक सम्भव नहि अछि मुदा ई स्पष्ट कहल जा सकैत अछि जे सुजीतक एहि बेरक कथा संग्रह विगतके कथा संग्रहसभसँ फराक अवश्य अछि आ अपनेसभके अवश्य नीक लागत । ओना सुजीत माझल साहित्यकार जेकाँ लगैत छथि लेकिन सुक्ष्म ढंगसँ बिश्लेषण करलापर एकटा नव साहित्यकारक किछु गुण–अवगुण एवं प्रवृति सुजीतमे स्पष्ट देखल जाइत अछि ।

सुजीतक 'गन्ध' अपनेसभक बीच एकटा नव सुवास अवश्य विस्तार करएमे सफल हएत आ विगत जेकाँ इहो कथा संग्रह चर्चित रहत से विश्वास अछि ।

केन्द्रिय उपाध्यक्ष
ब्रोडकास्टिङ्ग एशोसिएशन अफ नेपाल

दू आखर

❐सुजीत कुमार झा

एकबेर फेरसँ कथा संग्रह लऽ कऽ आएल छी। हमर प्रकाशित पाँच कृतिमेसँ ई चारिम कथा संग्रह अछि। एहि ठामक समस्या सभकें समाचारक अतिरिक्त कोनो माध्यमसँ हमरा कहए पड़ैत अछि तऽ ओ अछि कथे, जाहिमे कनि सहज होइत अछि।

कवितो लिखैत छी, लेख निबन्ध सेहो, मुदा कथा लिखएमे जतेक आनन्द कोनोमे नहि।

हिन्दीक चर्चित लेखक जैनेन्द्र कुमार एक बेर कथाक विषयमे लिखने छलथि, 'कथा एकटा भूख अछि जे निरन्तर समाधान प्राप्त करएमे लागल रहैत अछि।' हम जैनेन्द्रक बातसँ सहमत छी। हम किछु सम्प्रेषण करए चाहैत छी तऽ ओकर प्रमुख माध्यम कथा होइत अछि।

'गन्ध' कथा संग्रहक कथासभ 'कोइली घूरि आउ' बालकथा संग्रहक कथेसँग लिखाएल छल। मित्र राजेश कर्ण, राम अशिष यादव आ भाइ सुधिर चन्द्र आचार्य पहिने 'गन्ध' कथा संग्रह निकालल जाए एकर पक्षमे छलथि, मुदा 'कोइली घूरि आउ' क प्रकाशक जल्दी भेटलाक कारण उएह पहिने निकलि गेल।

प्रसन्नताक बात ई अछि जे 'कोइली घूरि आउ' बालकथा संग्रहकें लोक बेस प्रशंसा कएलक। एतेक धरि जे धनुषा आ महोत्तरीक किछु विद्यालयमे पढ़ाई सेहो शुरु भऽ गेल।

ओना गन्धक लेल जहिना राजेशजी आ राम अशिषजी दवाव दैत

छलाह तहिना प्रकाशक सेहो खोजि देलन्हि । तकरालेल दुनू गोटेप्रति आभार व्यक्त करैत छी ।

रामानन्द युवा क्लव जे हमर एहि पुस्तककेँ प्रकाशन संस्था अछि ओकर अध्यक्ष नवीन कुमार मिश्र, पूर्व अध्यक्षत्रय जीवनाथ चौधरी, अशोक दत्त आ अवधेश पोखरेल प्रति सेहो आभार प्रकट करैत छी ।

ओसभ आई जिम्मा नहि लेने रहितथि तऽ आई ई किताब अपनेसभक सोझाँ नहि आबि सकैत ।

एहि किताबमे रेडियो मिथिलाक सहकर्मी अमरकान्त अमरक बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि । सम्पूर्ण कथाकेँ टाइपसँ लऽ कऽ अन्तधरि ओ सुझाब दऽ कथाकेँ बढ़िया बनाबएमे महत्वपूर्ण योगदान देलैन्हि । तहिना पत्रकार कैलाश दास जे हमर अन्य किताब जेकाँ एकरो डिजाइन कऽ देलन्हि ताहि लेल हुनको धन्यवाद दैत छी । भाइ सुधिरचन्द्र आचार्य आ हुनक भाइ रुन्नुजीकेँ सेहो धन्यवाद दैत छी ।

एहि संग्रहमे भूमिका लिखएबला डा.रेवती रमण लाल, डा. कमलकान्त झा आ राजेश कुमार कर्ण प्रति हृदयसँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी । डा. राजेन्द्र विमल, समाजसेवी अमरचन्द्र अनिल आ मानवअधिकारकर्मी विजय दत्तप्रति सेहो आभार प्रकट करैत छी । ओ तीनू गोटेक आशीर्वाद प्रेरणाक काज करैत रहैत अछि ।

ई पुस्तक कतेक शीघ्रतामे निकैलि जाए ताहि लेल बेर–बेर खोज खबरि लेबएबाली हमर माय जयमंगला देवी, बाबूजी सुखेन्द्र झा, पीसा चन्द्रमोहन झा 'पड़वा' आ ससुर विनय कान्त ठाकुरप्रति हृदयसँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी ।

आफन्त नेपालक कार्यक्रम संयोजक जय प्रकाश मण्डल, उपाध्यक्ष प्रदीप यादव आ रामानन्द युवा क्लवक उपाध्यक्ष प्रकाश मिश्र, रेडियो मिथिलाक सहकर्मीसभ विनोद कुमार महतो,किरण कुमार कर्ण, विपिन कुमार मिश्र आ प्रतिभा झाक योगदान सेहो विसरल नहि जा सकैत अछि । अन्तमे अपनेसभक आशीर्वाद एहिना प्राप्त होइत रहए एकर अपेक्षा करैत छी ।

sujitjha100.80@gmail.com

कथाक्रम

चेचक दागबाला	१७
गन्ध	२४
मीना कुमारी	३६
सुलेखा दीदी	४१
दर्दक कथा	४८
अन्तिम साास	५७
पोष्टमार्टम	६६
अनार	७५
बोझ	८५
अपन सिन्धुली	१०४
परिवर्तन	१०९
बादल	११७

चेचक दागबला

किछु दिनसँ ओ हुनकर घर आबि रहल छल। लगातार नहि, कहिओ-कहिओ। आश्चर्य सन, लजाएल, सज्जन युवक। युवके तऽ ओकरा कहती ओ। उमेरमे ओकरासँ दू वर्ष जेठ छथि, मुदा ई विवाहिता छथि। बच्चा भलेही हुनका नहि भेल हुए मुदा तैयौ ओ महिला छथि। आ ई जे युवक अछि हरेक दोसर तेसर दिन कोनो ने कोनो बहाना बना हुनकर घर आबि जाइत छन्हि।

पहिने हुनका आन्टी कहैत छल, फेर दू तीन दिनक बाद ओकर प्रमोशन भऽ गेल। आन्टी सँ भौजी आ फेर धीरे-धीरे मैडम। ओ..हो कतेक आकर्षक सम्बोधन, जेना मैडम वाइ..., मैडम एक्स.... मैडम......जेड पता नहि की की उटपुटाङ्ग सोचि रहल छथि आइ मैडम रेखा।

थिएटर संसारो गजब अछि। झूठ एक्टिङ्ग, झूठ हँसब कानब, मुदा झूठो एतेक सजिवताकसँग देखाओल जाइत अछि की देखएबलाकेँ भावुक कऽ देल जाइत अछि।

मोहित भेल व्यक्ति दोसर दिन अहाँक दलान पर पहुँचि जाइत अछि। इहे तऽ कलाक शिखर अछि जे दर्शक अभिनयसँ एहि प्रकार प्रभावित भऽ जाए जे हरेक व्यक्तिसँ कलाकारक घर आ ठेगाना पूछए लागए, टेलिफोन डाइरेक्ट्री खोजए लागए।

एखने ओ युवक चाह पीबि कऽ गेल अछि। रेखा शिथिलसंग शोफापर पसरि गेल छथि।

विश्लेषणक लेल हुनका लग ई बढ़िया समय अछि। नहि तऽ एहन फुर्सत कतए ?

हँ, तऽ ओ सोचि रहल छलीह ओहि युवकक विषयमे। ओहि युवकक नाम गोपी अछि। अछि तऽ सुन्दर, स्मार्ट युवक मुदा ईश्वर कनिक अन्याय कऽ देने अछि ओकरा संग। ओ ई अछि जे बच्चामे ओकरा चेचक भेल छल आ ओकर मुहँपर अपन छाप छोड़ि कऽ चलि गेल छल। रेखा अपन सोचल बातपर स्वयं हँसि पड़ली, मुदा किछुए देरमे अपन हँसीपर लजासन गेलीह।

हुनका एना नहि सोचबाक चाहैत छल। ओ एक प्रगतिशील, पढ़ल लिखल आ बुधियारि महिला छथि। समाज सुधार कार्यमे बढ़ि चढ़ि कऽ सहभागि होइत छथि। निम्न श्रेणीक लोकक बीच सेहो घुलि मिलि कऽ घूमैत छथि। फेर ओ तँ एक उच्च वर्गिय समाजक युवक अछि, चेचककेँ दाग भेल तऽ की भेल ? मनुष्यकेँ हृदय एतेक विशाल होएबाक चाही जे मनुष्यकेँ देखएबला ऐब ओकर सोचपर असर नहि कऽ सकए बल्कि ककरोमे यदि कोनो मानसिक कमजोरी वा ऐब हेबो करए तऽ हमरासभकेँ हीनभावनासँ ग्रस्त लोककेँ मानसिक रुपसँ उपर उठाबए लेल हुनकर आगा अपन हाथ बढ़ेबाक चाही।

गोपी सेहो हीन भावनासँ ग्रस्त अछि, चेहराक दाग शायद ओकर भावनाकेँ चोट पहुँचौने अछि। प्रगतिशील सोचकेँ दम्भ मारएबला हमरा सभ सन लोक। एहन लोककेँ हाथ पकड़ि कऽ ओकरा दोसर कतारमे ठाढ़ होबए लेल प्रेरित करबाक चाही। कतेक धरि सोचि गेलीह मैडम रेखा, मुदा अन्तिम बातपर रुकि गेलीह।

ओकरा हाथ पकड़ि कऽ आगा चलबाक लेल प्रेरित करब ठीक अछि मुदा यदि ओ बाँहि पकड़ि लिए तँ ?

सहीमे शारीरिक रुपमे हुनकर पकड़मे नहिओ आबए तैयो मानसिक रुप सँ ओ यदि जकड़ि लिए तँ ? एहन स्थितिमे सेहो प्रगतिशील सोच कोना काज कऽ सकैत अछि। मैडम रेखाक माथ भारी भऽ रहल छल। अनावश्यक विचार हुनका थका देने छल, पता नहि आइ ओ एतेक किए सोचि रहल छथि शायद ओ युवकक कारण। मुदा ओ तऽ बहुत सुन्दर आ सभ्य युवक अछि। मैडमजी-मैडमजी कहैत रहैत अछि।

कहैत अछि, हमरा अहाँक उच्च विचार बढ़िया लगैत अछि। हम अहाँकेँ बहुत सम्मान करैत छी..........।

कतहुँ ई पहिल चालि तऽ नहि, दोसर चालिपर कहि उठए , हम अहाँकेँ पसिन करैत छी आ ....फेर तेसर चालिपर कहए हम अहाँसँ विवाह ....? नहि नहि...हम तऽ विवाहित छी।

ओ अपने बातसँ घबड़ा जाइत छथि। साँझमे पतिसँ पुछैत छथि जे कोनो युवक विवाहिता महिलासँ प्रेम कऽ सकैत अछि ?

'किए नहि ! युवक तऽ जीबे करैत अछि फाइन्टेसीमे ....की अहाँकेँ तऽ नहि भेटि गेल अछि किओ ?'

ओ हँसय लगलथि। हुनका दया आबि जाइत अछि अपन पतिपर ....बेचारा बुझबे नहि करैत छथि। मुदा बुझबो कोना करैथि ? ओ अपन पतिकेँ ओ युवककेँ बिषयमे बहुत किछु कहबै नहि कएने छथि !

मुदा पतिकेँ कहल बात बेर-बेर हुनक मोनसँ टकरा रहल छल। युवक जीबे करैत अछि फाइन्टेसीमे ....तऽ की ओ युवक सेहो रेखाकेँ लऽ कऽ कोनो फाइन्टेसी पालने अछि ? नहि ....नहि ....., एना नहि भऽ सकैत अछि ? एना भेल तऽ ओ रेगिस्तानमे भटैकि जाएत, मृगतृष्णाक पाछु। ई मृगतृष्णा जीवनकेँ भटका सकैत अछि। मुदा कोनो दिसा नहि दऽ सकैत अछि।

ओ परेशान छथि, मुदा एहिमे ओकर अपन दोष छैक कतहुँ ओ स्वयं जानि बुझि कऽ वा बीना बुझने एहि रेगिस्तानमे पानिक भ्रम दऽ देने अछि। कतहुँ ओकर अपन कोनो जड़ि बालुकेँ जेकाँ रौदमे नहि चमैक उठल ? मुदा ओ बालुक छल....., एहि गरम बालुकेँ छुलासँ आंगुरक चमरापर छाला पड़ि जाएत.....कोना बाहर निकलए एहि चक्रव्यूहसँ ?

गोपी आब जखन आएत तऽ बेमोनेसँ ओकरा आगु आएब। हुनकर शिष्टाचार लऽ कऽ ओ गलत बुझलक तऽ बुझौक। ओ किए कोनो समस्यामे फँसैथि। हुनकर एकटा प्रशन्नचित घर अछि। प्रेम करएबला पति अछि फेर विवाहित जीवन तऽ बारुदक ढ़ेर जेकाँ होइत अछि, सावधानी आ समझदारी सँ निमाहए पड़ैत अछि। गल्तीसँ सेहो कोनो

लुती एहि बारुदपर पड़ि जाए तऽ घातक आ तबाह करएबला विस्फोट भऽ सकैत अछि। रेखा अपन घरक देबाल निहारैत छथि। पुरे घर आ देबालमे लकड़ीकेँ फिनिसिङ्ग अछि। एहि द्वारे लुतीसँ एकरा बचा कऽ रखबाक चाही। ई देवालमे बहुत जल्दी आगि पकड़एबला अछि। एकरा हृदय सँ देखरेख करए पड़त।

दू दिन शान्तिसँ बीत गेल। युवक नहि आएल। बढ़िएँ भेल, चलू पाछु तऽ छूटल, नहि तऽ प्रत्येक दिन कोनो ने कोनो बहाना। मैडम दियावाती अछि, शुभकामना देबए अएलहुँ अछि ..., मैरिज एनिवर्सीकेँ शुभकामना ...., अहाँक जन्म दिन अछि, अपने बिसरि गेल हएब, हम तऽ नहि बिसरल छी ..., ई फल अनलहुँ अछि , ई मिठाई अछि...., भेटएकेँ सय बहाना।

तमसा उठलीह रेखा। मनुष्य नहि अछि मानू कम्प्युटर अछि। पूरे संसारक गते ओकरा स्मरण अछि। मानु हमर ओ सेक्रेटरी अछि। भूठफूसक निजी जीवनमे हस्तक्षेप करए चलि अबैत अछि।

'चारि दिन भऽ गेल नहि अएला, पता नहि कतए चलि गेल। कतहुँ गाम तऽ नहि चलि गेल अछि। कतएकेँ लोक हमरा कपार पर चलि आएल अछि,' ओ सोचए लगलीह।

....एक दिन जखन नाटक कऽ थिएटरसँ बाहर निकलली तऽ आगा ओ लड़का ठाढ़ छल, दुनू हाथ जोड़ि कऽ प्रणाम कएलक। फेर रेखाकेँ प्रशंसाक पुल बान्हि देलक। रेखा ओहिना ओकरा भिजिटिङ्ग कार्ड दऽ देलीह।

हुनका की पत्ता छल जे ओ दोसरे दिन एकटा फूलक दौड़ा लऽ कऽ घरक आगा पहुँचि जाएत। पता नहि कोन पहाड़ी इलाकाक अछि। एतए नोकरी करैत अछि। कहैत अछि ओ हुनकर प्रेरणा अछि। मुदा एतेक दिनसँ एतए आएल किए नहि ? बढ़िए भेल। हमरा की लेना देना ? हमर कोनो सरकुटुम्ब अछि ? हएत कोनो प्रशंसक ओ सोचि रहल छलीह।

बातचित करैत ओ हरेक समय हुनका दिस देखैत रहैत अछि , जेना नजरि हटाएब बिसरि गेल हुए।

एक दिन कहि रहल छल मैडम हमर इच्छा होइत अछि बहुत उपरधरि पहुँची ।

रेखा जखन पुछलीह जे कतेक उपर जाए चाहैत छी तऽ ओ आकाश दिस इशारा कएलक । रेखा हड़बड़ा गेलीह । हमर मतलब अछि हमहुँ नाटकमे अभिनय करए चाहैत छी । एहि बातपर रेखाकेँ कनिक मोन शान्त भेल । हुनका लगैत छल जे ई युवक आँखिसँ किछु बाजि रहल अछि ..., एकटा आश्‍चर्य जनकसन व्यवहार ओकर आँखिसँ निकलि रहल छल, ईन्द्र धनुष जेकाँ । रेखा एहि व्यवहारकेँ सामना नहि कऽ सकैत छलीह आ माफ करब कहि भीतर चलि जाइत छलीह ।

वाशवेशीनपर बढ़िया जेकाँ मुहँ धोइत छलीह आ बाहर निकलि कऽ देखैत छलथि ओ लड़का चलि गेल कि नहि । बढ़िए भेल दोबारा ओकर सामाना करएसँ बचि गेलहुं । स्टेजक एतेक बड़का कलाकार, हजार लोकक भीड़मे सेहो कहिओ हकलेलथि नहि मुदा एहि सामान्यसन व्यक्तिक आगा बात–बात पर हकला जाइत छथि । ओ बात– बात पर चौंकि जाइत छथि । ओहि राति मैडम रेखा सूति नहि सकलीह ।

ओ बराबर अपन चेहराक कुरुपताक चर्चा करैत अछि । ओ अपन भीतरक आगिकेँ शब्दक माध्यमसँ मैडम रेखाक आगा चर्चा करैत अछि आ रेखापर मानवीय सहानुभूति हाबी भऽ जाइत छन्हि । ओ भीतर-भीतर सुलगैत एहि ज्वालाकेँ देखैत शायद हीनभावनाक कारण अन्तरमुखी बना देने अछि । ओकर भावना, सपना, आकांक्षा लाबा जेकाँ भीतरे–भीतर फुटि रहल अछि ।

मैडम रेखाक शब्दमे ममता आ स्नेहसँ मिठास भरि जाइत अछि । ओ ओकरा उत्साह बढाबएकेँ तथा हारि नहि मानएकेँ साहनूभुति दैत छथि मुदा ओहि समय फेर रेखाकेँ ओहे सतरंगी बात भीतर सिकुरब अनुभवसन होइत छन्हि ।

ओ सोचैत छथि, किए अबैत अछि ओ एतए बेर-बेर चेचककेँ दागबला चेहरा लऽ कऽ । जखन ओ ओकरा चाहक कप पकड़बैत छथि तऽ हुनकर हाथ काँपए लगैत अछि । कतेक कड़ा हाथ.... भगवान ! ककरो

बाँहि पकड़ि लए तऽ बाँहिए टुटि जाएत मुदा ओकर पकड़ ढील नहि भऽ सकैत अछि। ओ पता नहि किए आँखि मुनि लैत छथि।

..... रेखा फेर सोचए लगैत छथि एहि बेर ओ किए नहि आएल ! ओकर दागबला चेहरा, लापरबाह जेकाँ दाढ़ी आ सशक्त हाथ हुनकर ध्यान खीच लैत अछि। एक दिन अपन पतिसँ कहलीह, 'गोपी प्रत्येक दिन अबैत अछि, कोना मना करिऔक ओकरा.... हम नहि चाहैत छी हमर निजी अवसरपर फूल वा मिठाई लऽ कऽ आबए।'

पति हँसि पड़ला,' ओ अहाँक प्रशंसक अछि। आबए दिऔक, ओ अहाँकें की बिगाड़ि रहल अछि।'

रेखा अपन पतिक आँखि चोरबैत बजलीह,' अहाँकें खराब नहि लगैत अछि, अहाँ एक दिन बुझबै।'

' नहि। हम बुझैत छी गोपीसन देखाइए देबएबला व्यक्ति अहाँक हृदयमे पैसिए नहि सकैत अछि। ओहि ठाम तऽ हमरा सन चेहराबला हैंडसम व्यक्तिकें आब मात्र आज्ञा अछि।'

कनिक रुकैत ओ फेर बजला,' गोपीसँ हमरा कोनो परेशानी नहि अछि। ओ बेचारा अपन कल्पनामे जीबैत अछि तऽ जीबए दिऔक। अहाँकें की जाइत अछि ?'

आब पति वेचाराकें की पता जे किछु तऽ जाइते अछि। झूठफूसक पीड़ा हृदयमे बैसि जाइत अछि। मुदा हुनका मौनमे अबैत अछि, ओ आब ओकरासँग कठोर व्यवहार करतीह। मुदा .....ओ आएल किए नहि।

दू दिन आओर बीत जाइत अछि।

आश्चर्यसन हालत अछि हुनकर। जकरा ओ पसिन नहि करैत छथि जकर बात हुनका आकर्षित नहि करैत अछि जे पतिसन सुन्दर चेहरा आ शरीरक मालिक नहि अछि। ओ ओकर विषयमे किए सोचि रहल छथि। ओ गलत तऽ नहि छथि ? ओ टूटल भावनात्मक सम्बन्धक शिकार तऽ नहि छथि ? हुनका कोनो परेशानी आ दुःख सेहो नहि, फेर रातिमे जखन चारु दिस अन्हार पसैड़ि जाइत अछि तऽ कोनो छोटकासन भगजोगनी हुनकर बन्द खिड़की आ गेटक भीतर रुममे कोना आबि आगा पाछा भुक

भुकाए लगैत अछि। ई बात रेखा सन प्रगतिशील आ बुधियारि महिलाक बुझबसँ बाहर अछि।

अचानक गेटपर ढ़क-ढ़क होइत अछि। ओ कुदि पड़ैत छथि। शायद उएह युवक अछि। ओ कहिओ घण्टी नहि बजबैत अछि, सीधे प्रवेश करए चाहैत अछि। मैडम रेखा हड़बड़ाकऽ गेट खोलैत छथि। आगा हुनकर पति ठाढ़ भऽ बिहुँसि रहल छथि। रेखा कनिक रुकैत छथि आ फेर हुनकर बाँहि मे लेपटा जाइत छथि।

गन्ध

नहेलाक बाद ओ अन्डरपेन्ट आ गन्जी पहिर धोती लपेटि लेलन्हि। बाथरुमक गेट खोलब सँ पहिने ओ प्रत्येक दिन जेकाँ कंगही उठौलन्हि आ वाशवेसिनकेँ उपर लागल सीसा दिस तकैत केशपर कंगही फेरए लगलथि। एकाएक एकटा वाक्य हुनकर कानमे खौरए लागल। हिनकर केश तऽ पूरा-पूरा उज्जर भऽ गेल अछि।

हुनका भीतर कोनो चीज टीस छोड़ैत उपरसँ नीचाधरि दौड़ए लागल। हुनकर कंगहीवाला हाथ धीरे-धीरे चलि रहल छल। एहि काजमे हरेक समय किछुए समय लगैत छल। ओ बाथरुमसँ बाहर निकलैत छला तऽ रुममे कार्यकर्ता सभदिन हुनका प्रतीक्षा करैत रहैत छल। ओ ठीकसँ धोती बान्हि कऽ लगेमे रहल खादीक कुर्ता पहिर लैत छलाह। एहि बीच भनसीया जलपान लगा दैत छल। ओ सभक संग बैसि कऽ जलपान करैथि आ कार्यकर्तासभसँ दिनभरिक कार्यक्रमक सम्बन्धमे बात करए लगैत छलथि।

आइ एना नहि भेल। ओ कतेको समयधरि ऐनाक आगाँ ठाढ़ केशपर कंगही फेरैत रहला। हुनकर मोन सीसाक आगाँसँ हटएकेँ लेल तैयार नहि छल। ओ वाक्य हुनका भीतर बेर-बेर आबि रहल छल, 'हुनकर केश एकदम उज्जर भऽ गेल अछि .....एक दम उज्जर भऽ गेल अछि।'

ओ अपन आँखि गड़ाकऽ केशकेँ देखलन्हि सहीमे उज्जर भऽ गेल छल। हुनका बहुत मोनमे तामस भेल। बाथरुमसँ बाहर अएला तऽ उएह संसार छल, अपन पार्टी, अपन कार्यकर्ता, अपन कार्यक्रम आ अपन महान लक्ष्य जकर प्राप्ति सभकेँ भीतरधरि श्वास जेकाँ बसल छल।

जलपानक टेबुलपर नरेश बाजल, 'नेता जी बेरियाक भोजन जगदीशजीक घरपर, एकरबाद एहि क्षेत्रक पार्टीक प्रत्येक गाविस अध्यक्षसभक बैसार ५ बजे। ई बैसार ७ बजेधरि चलत। साँफमे चाह पीलाक बाद हमसभ मन्दिरमे पहुँचब। ओहिठाम किछु बुद्धिजीवी सभकसँग बिमर्श हएत। रातिक भोजन मदनबाबूक निवासपर हएत। अपनेक सुतबाक व्यवस्था सभ दिन जेकाँ एहि ठाम हएत।'

पूरे दिन निर्धारित कार्यक्रम अनुसार बीत गेल। मदन बाबू नगरक बहुत बड़का व्यावसायी छलथि। ओ आ हुनक पूरा परिवार एहि बातसँ बहुत गर्ब अनुभव कऽ रहल छलाह जे मनोहर बाबू सन बड़का नेता आइ हुनका घरपर भोजन करए आएल छथि। मनोहर बाबूकसँग २०/२५ कार्यकर्ता सेहो, जिनकर एहि नगरमे बहुत सम्मान अछि। मदन बाबूकेँ लागि रहल छल जे नगरमे एका एक हुनक उँचाई बढ़ि गेल अछि।

मनोहर बाबू एहि नगरमे जखन अबैत छलथि, जगदीशजीक घरपर रुकैत छला। जगदीशजी अपन निवासक भीतर एकटा बड़का रुम, जाहिमे सभ सुबिधा छल, पार्टीक बरिष्ठ नेतासभक लेल छोड़ि देने रहथि। ओ नगरक चर्चित वकील छथि।

पार्टीक कोनो नेता जखन हुनकर निवासपर रहैत छल तऽ चहल-पहल बढ़ि जाइत छल। कार्यकर्ताक भीड़ मनोहर बाबूसन नेताक दर्शन करए, हुनक चरण स्पर्श करए, हुनकासँ दूटा बात करबाक लेल निवासक बाहर रहल मरबापर घण्टो बैसि कऽ प्रतीक्षा करैत रहैत छल।

मनोहर बाबू बाहर अबैत छला। एकटा खास मुद्रामे हाथ जोड़ैत, 'प्रणाम ....प्रणाम' हुनकासभक बीचसँ निकलैत छलाह। कार्यकर्तासभ फटाफट दू भागमे बाँटि कऽ बाट बना दैत छल। नरेश इशारासँ सभकेँ पाछू करैत जाइत छल।

एक दिन एकटा बृद्ध कार्यकर्ता आगाँ बढ़ि कऽ बाजल,' मनोहर बाबू, अहाँ हमरा क्षेत्रमे बहुत समयसँ नहि अएलहुँ अछि। कार्यकर्ता अहाँसँ भेटबाक लेल व्याकुल रहैत अछि।'

मनोहर बाबू रुकि गेलथि। ओ नरेश दिस तकलथि। नरेशक मुहँपर

किछु भाव आएल । ओ धैर्यताक संग बाजल, 'एहि बेर अहाँक कार्यक्रम तय भऽ गेल । दोसर महिनामे अपने आबहे बला छियैक । राम प्रसादजीक बेटीक विवाहक अवसरपर । ओहि समयमे फूदनजीक क्षेत्रमे चलबाक कार्यक्रम बनाओल जा सकैत अछि ....की फूदनबाबू ......'

फूदन बाबू एकदमसँ घबड़ा गेलथि, 'जेना अपने सही बुझी, नरेशजी एक बातक स्मरण राखब । मनोहर बाबू बेरियाक भोजन हमरे कार्यकर्ताक संग करता ।'

नरेश मनोहर बाबू दिस देखलक हुनकर चेहरापर सभ दिन जेकाँ मुस्कान पसरल छल । बजला, 'राम प्रसाद जीकेँ पूरे बिद्य रातिमे हएत दिनक समय फूदन जीक संग...'

फूदनजी एक दम प्रसन्न भऽ कऽ बाजल,' हम धन्य भऽ गेलहुँ मनोहर बाबू ।' ओ दुनू हाथ जोड़ि कऽ माथ झुका लेलक ।

मनोहर बाबू हाथ जोड़लन्हि आ तेजीसँ बाहर दिस बढ़ि गेला । नरेश स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता अछि आ मनोहर बाबूक विशेष प्रिय सेहो । गोर रंग, लम्बा सुन्दर, बहुत मधुर आवाजक संगहि अत्यन्त व्यबहार कुशल । सभ लोक ई मानैत छल अपन संगठनमे नरेश बहुत आगाँ बढ़त ।

कतेको बेर चारु दिस हरियरे हरियर देखाइ दऽ रहल छल । चारु दिस बहुत जीवन्तसँ बनाओल गेल बड़का उद्यान, ओहिमे बड़का छोट बहुत रासे गाछ, फूलसँ भड़ल गाछ झूमैत देखाइ दऽ रहल छल । फूलक किआरीसँ पूरे बाट भरल नजरि आबि रहल छल । बुस्टर पम्पसँ धर्तीक भीतर दुधिया जलक मोट धार निकलैत होइक आ एहि सभक बीच अपन एकटा कुटियाबला घर होइक तऽ केहन लागत ? एहने जीवन छल एहि संगठन आ एहिसँ जुड़ल कार्यकर्ताक । हुनकासभकेँ लक्ष्य आ उद्देश्यक अतिरिक्त किछु नहि देखाइ दऽ रहल छल । ईहो सत्य छल जे गर्मी हुनका तपाएत जकरा हरियरीमे रहबाक आदति भऽ गेल हुए ।

एक दिन मनोहर बाबू नहा धो कऽ बाथरुमसँ निकलला तऽ देखलन्हि, रुममे नरेशक अतिरिक्त किओ नहि अछि । मनोहर बाबूकेँ ईहो अनुभव भेल जे एकटा एहन गन्ध अछि, हुनकर लग पासमे रहएबला गन्धसँ

अलग ।

हुनकर चेहरापर किछु टेन्शन देखि कऽ नरेश बाजल, 'मनोहर बाबू हम नीचा दिस खुल्ला लाँनमे कार्यकर्ताकेँ बैसबाक व्यवस्था कऽ देने छी । हुनकर सभक उपस्थितिमे अपनेक जलपान ठीकसँ नहि भऽ पबैत अछि ......। गजबकेँ धरफरी रहैत अछि । लाँनमे कार्यकतासभकेँ सेहो खुलिकऽ बातचित करएकेँ अवसर भेटि जाइत अछि .....आ बीना कोनो व्यावधानक अपनेक कार्यक्रम तए भऽ जाइत अछि ।'

मनोहर बाबू किछु नहि बजला, मुदा हुनका मोनमे कोना-कोना भऽ रहल छल । ओ जलपान कऽ रहल छलथि । घरक नोकर आलु कोबीक तरकारी बहुत बढ़िया बनौने छल । ओ एक बेर परसनो लऽकऽ खेलथि । फेर एकाएक हुनक नजरि खिड़कीसँ बाहर गेल, ओ देखलन्हि जगदीशजीक बड़की बेटी मोनी उम्हरसँ आबि रहल छल । ओ नरेशसँ कहला,' कनी मोनीकेँ बजाउ ।'

नरेश खिड़कीए लगसँ आवाज देलक, 'मोनीजी नेताजी अहाँकेँ बजा रहल छथि ।'

मोनी किछु हड़बड़ाएल जेकाँ भीतर चलि आएल आ मनोहर बाबूक पाएर छू कऽ प्रणाम कएलक । मनोहर बाबूकेँ लगलन्हि किछु देर पहिने जाहि गन्धकेँ अनुभव कऽ रहल छी, मोनीके अएलाक बाद फेरसँ उएह गन्ध रुममे पसरि गेल अछि, 'मोनी, जगदीशजी कहिआ आओता ?'

'नेपालगन्जसँ काल्हि भोरधरि आबि जएता ।'

'अहाँक मम्मी सेहो गेल अछि ?'

'जी ....काकाकेँ बेटाक विवाह छल ।'

'ठीक अछि .....पढ़ाई कोना चलि रहल अछि ?'

'जी एम्मे तऽ भऽ गेल अछि, आगाक विषयमे किछु सोचलहुँ अछि नहि.... ।'

'जगदीशजी की कहैत छथि ?'

'हुनकर इच्छा छन्हि हम काठमाण्डू जा कऽ लँ मे पढ़ी ।'

मनोहर बाबू हँसला, 'लगैत अछि, जगदीशजी अहाँकेँ वकीले बनाबए

चाहैत छथि ! '

मोनी बिहुँसल। मनोहर बाबूक ध्यान ओम्हरो छल जे मोनीक उपस्थितिमे नरेशक चेहराक क्रम केहन भऽ रहल अछि।

नरेश पूरापूरी निर्बिकार बैसल छल। ओ बातचितमे कोनो प्रकारसँ भाग नहि लेलक। मोनी सेहो एको बेर नजरि उठाकऽ नरेश दिस नहि देखलक।

मोनी चलि गेल। मनोहर बाबूकेँ ओ गन्धक लगातार अनुभव भऽ रहल छल। आब हरेक बेर हुनका अनुभव भऽ रहल छल। जखन कखनो एहि शहरमे अबैत छला। एकटा बड़का उत्तेजक जेकाँ गन्ध हुनका संग तिरैत अबैत छल।

हुनकर दिनचर्या पूरापूरी निर्धारित छल। ओ भोरे ५ बजे उठि जाइत छलथि, बीना कुर्रा कएने तीन चारि गिलास पानि पीबि लैत छलथि। कब्जियतक शिकायत हुनका बच्चेसँ छल। पानि पीलाक बाद किछु देर व्यायाम करैत छलथि, फेर ओ मर्निङ्ग वाकमे निकलि जाइत छलथि। ओतएसँ एलाक बाद एक कप चाह पीबैत छला। आधा एक घण्टा अखबार पढ़यमे लगा दैत छला।

सात साढ़े सात बजेक बीच बाथरुममे चलि जाइत छलथि। ओतएसँ स्नान कएने अबैत छलथि।

नरेश सभ दिन जेकाँ सात बजैत-बजैत हुनका लग पहुँचि जाइत छल। हुनका हाथमे किछु पत्रिका रहैत छल आ ओ पत्रिकाक किछु कटिङ्ग होइत छल। नगरमे होबएबला कार्यक्रमक तथ्यांक होइत छल। मनोहर बाबू नरेशकसँग चाह पिबैत छला। भोरक समाचार आ पत्रिकामे छपल समाचारपर चर्चा करैत छलथि आ कार्यक्रमक रुप रेखापर विचार करैत छलथि फेर ओ बाथरुम चलि जाइ छलथि। हुनका बाथरुममे रहैत काल हुनका रुममे किछु भऽ रहल सन लगैत छल। हुनकर बाथरुममे जाइत एकटा गन्ध रुममे प्रवेश करैत छल आ ओतबे काल ओतए रहैत छल जतेक काल ओ बाथरुममे रहैत छला। गन्धकेँ बुझल छल जे ओ नहा धोकऽ कखन बाहर आओता। ओ किछु मिनट पहिने रुमसँ बाहर चलि

जाइत छल। कतेको बेर हुनका मोनमे आएल की कोनो बहानामे बाथरुमसँ आबि जाइ आ देखी जे ओतए कि भऽ रहल अछि। हुनका आगा नरेश आ मोनीकेँ कतेको आकृति आबि जाइत छल। हुनका लगन्हि, ई ठीक नहि हएत। जीवनमे हम कतेक सुखसँ जीबैत छी ई जनितो हम कतेक पर्दाक पाछु जीबि रहल छी, एहिमे कनिको अबेर नहि लगैत अछि। कनी आगा बढ़ि कऽ पर्दा हटा दिऔक। मुदा बास्तविकता तऽ एहिसँ बहुत खराब होइत अछि। हुनका आगा कतेको महल ढहए सन लगैत अछि। धर्ती एकदम सपाट देखाए लगैत अछि। धर्ती कतेक खराब आ भयावह होइत अछि। ओहिमे किओ जीबए नहि चाहैत अछि। बाथरुममे एहि बातक कल्पना हुनका बहुत बेचयन कऽ दैत अछि जे बाहर रुममे किछु भऽ रहल अछि। हुनकर शरीरमे एहन तरंग फेकए लगैत अछि जकर हुनका बहुत अनुभव नहि छल।

बीए पास कएलाक बाद ओ अपन माता पितासँ स्पष्ट कहि देलन्हि,' हम अपन सम्पूर्ण जीवन पार्टीकेँ समर्पित करबाक निर्णय लेलहुँ अछि। हम जीवनभरि अविवाहित रहब आ पार्टीक अतिरिक्त किछु नहि सोचब।'

माए बाबू, एकटा बड़का भैया आ दूटा छोट बहिनकेँ हुनकर निर्णय सुनि कऽ आश्चर्य नहि भेल छल। अपन विद्यार्थी कालहिमे हुनकर अधिक समय पार्टीक काजमे जाइत छल। पिता एकटा छोटसन पानक दोकान कएने रहन्हि आ बड़का भैया ओहिमे सहयोग करैत छलथि। दू बहिनकेँ विवाहक जिम्मेवारी छल मुदा ओ स्पष्ट कहि देलन्हि, 'ई जिम्मेवारी आब अहींसभ पूरा करु। हमरा आगा दू नहि बहुतो बहिनक भविष्यक प्रश्न अछि।'

फेर ओ पार्टीक लेल समर्पित भऽ गेलथि। पार्टीओमे हुनक जिम्मेवारी बढ़ैत चलि गेल।

पहिने हुनका छोटका क्षेत्रमे पार्टीकेँ विस्तार करबाक जिम्मेवारी देल गेल। धीरे-धीरे जिल्ला प्रमुख बनि कऽ देशक बहुतो जिल्लामे काज कएला आ आइ ओ पार्टीक केन्द्रीय महासचिव भऽ गेल छथि। देशमे पार्टीक हजारो सक्रिय कार्यकर्ता अछि। अनगिनत लोक पार्टीक सहयोगी आ

समर्थक अछि । हुनका पार्टीमे समाजक सभवर्गक लोक अछि । हुनकासभक बीच मनोहर बाबू भगवान जेकाँ सम्मान, आदर आ श्रद्धाक स्थान रखैत छथि ।

२५ बर्ष पहिने ओ अपन घर छोड़लन्हि । एहि अबधिमे ओ ५/६ बेर मात्र अपन घर गेल छथि ।

पहिने बड़का भैयाक विवाहक अवसरपर, फेर पिताक निधनक अवसरपर, आ फेर एकटा बहिनक विवाहपर । दोसर बहिनक विवाहक समय हुनकर पार्टीक राष्ट्रीय सम्मेलन चलि रहल छल ओ बहुत व्यस्त रहथि एहि कारण ओ नहि पहुँचि सकला । पाँच वर्षक बाद माएक निधनपर गेल रहथि । फेर जाएब सम्भव नहि भेल ।

मुदा ई चिन्ता हुनकर भीतर बहुत खराब जेकाँ मथि रहल छन्हि । वर्षोसँ संजोगल छोट-छोट लहरा बला पानिमे किओ दारुसँ भड़ल ड्राम उझलि देने छल । ओ बाथरुममे लागल फोहाराकेँ नीचामे ठाढ़ भऽ किछु मिनटमे स्नान कऽ लैत छलथि । आब ओ कतेको बेर फोहाराक नीचा ठाढ़ रहैत छथि । उपरसँ खसैत पानि हुनका सुख दैत छल ।

कार्यकर्ताकेँ एहि बातक कनि आश्चर्य होइत छल जे मनोहर बाबूकेँ एहि नगरमे आगमन जल्दी-जल्दी भऽ रहल अछि । नगरमे पार्टीक काज बढ़िया अछि मुदा मनोहर बाबू अपन प्रत्येक आगमनपर एहि बात पर बल दैत छलथि जे कार्यक दृष्टिसँ एहि नगरकेँ आदर्श बनाओल जाए ।

जहिआ ओ एतए अबैत छलथि शरीरक जकरन बढ़ि जाइत छलन्हि । हुनका लागए लगैत छल कोनो एहन चीज अछि जे हुनकर खुनमे तेजी आनि दैत अछि, हुनकर नशकेँ मरोड़ि दैत अछि, हुनकर श्वासक गतिकेँ बढ़ा दैत अछि ।

एका एक एक दिन ओ निर्णय लेलन्हि, ओ किछु दिनक लेल अपन घर जएता, अपन बड़का भैया लग ।

वर्षो बाद भैया-भौजी, भतिजा-भतिजीक बीच हुनका लागल, अलग ई संसार अछि । हुनकर समय कार्यकर्ता बीच बीतैत छल । बौद्धिक चर्चामे कतेको बड़का-बड़का समस्याकेँ ओतए विश्लेषण होइत छल ।

हुनकर चारु दिस कतेक भीड़ रहैत छल । एतए ओना किछु नहि अछि । एतए भौजी छलीह एकटा भरल पुरल महिला, जिनकर हाथक चूड़ीक झनझनाहट हरेक समय सुनाइ दऽ रहल छल । हुनकर जवान होइत बेटा बेटी छल जे हुनका एतेक निकटसँ नहि देखने छल ।

एक दिन साँझमे दुनू भाई दलानपर बैसल छला । पारिवारिक बात भऽ रहल छल, हुनकासभक बातमे नहि देश, नहि समाज, नहि राजनीति छल, हुनकर बातमे बहुत छोट-छोट मुद्दा छल । बेटा बीएमे पहुँच गेल अछि । बेटी १२ कक्षामे पढ़ि रहल अछि । दू तीन वर्षमे ओकर विवाह कएल जाएत । बाबूजी हुनका कतेक स्मरण करैत छलाह । ओ छोटकी बहिनक विवाहपर नहि पहुँचि सकल छलाह, बहिन कतेक कानल छल ।

एका एक मनोहर बाबू बजला, ' भैया, अहाँसँ एकटा बात कहए चाहैत छी ।'

बड़का भैया हुनका दिस गम्भीरतापूर्वक तकला, 'की बात अछि ?'

'आब हमरा मोनमे विवाह करबाक इच्छा होइत अछि ।'

भैया हाथमे चाहक कप पकरने छला हुनकर कप हिलए लागल छल,' मनोहर ......की कहैत छअ ?'

ओ कनि बिहुँसैत धीरेसँ बजला, 'हम बुझैत छलहुँ हमरा बात सुनि कऽ चौकि जाएब । बस ....ओहिना...। अपने एकरा हमर दुर्बलता मानि लिअ मुदा बीतल किछु समयसँ हम अनुभव कऽ रहल छी आब हमरा विवाह कऽ लेबाक चाही ।'

बड़का भैया एखनधरि हुनके दिस ताकि रहल छला, ' कोनो खास घटना भेल अछि कि ?'

' नहि ...एहन कोनो बात नहि भेल अछि । मुदा आब गृहस्थ जीवन जीबएकेँ मोन करैया ।'

'तोँ ४५ बर्षक भऽ गेल छह । हम ठीक कहलियह ने ?'

मनोहर बाबू किछु चौकिकऽ भाइ दिस तकला, 'कि हमर आयु बहुत बड़का बाधक अछि ?'

' नहि ...एहन बड़का बाधा नहि छअ । तोरासँ बेसी उमेरगर लोक सेहो

विवाह करैत छथि आ सुखी गृहस्थ जीवन जीबैत छथि, मुदा उमेर अनुकूल मैचिङ्ग सेहो होएबाक चाही। तो १८/२० वर्षक लड़कीसँ विवाह करए नहि चाहबा।'

मनोहर बाबु हँसि पड़ला, 'हम ई बात बढ़िया जेकाँ बुझैत छी। एतेक कम उमेरक कनियासँ विवाह करएकेँ सोचिओ नहि सकैत छी। हमरा उमेरक अनुकूल निसन्तान विधवा हौक ......वा परित्यक्ता हुए तऽ ठीक रहत।'

बड़का भैया सोचए लगला। एकाएक हुनकर दिमागमे एकटा बात आएल। 'सुनह तोहर भौजीक पिसीकेँ एकटा लड़की छैक कोनो क्याम्पसमे पढ़बैत छथि ....उमेर हएत इहे ३५/३६। ओ घरमे सभसँ बड़का छथि। हुनकर छोट पाँच भाय बहिन अछि। बाबूजी एकटा प्राइभेटमे नोकरी करैत छलाह। घर चलाएब कठीन छल। भाय बहिनकेँ पढ़ाबएकेँ जिम्मेबारी ओहे लड़कीपर चलि आएल छल। भाए बहिन तऽ पढ़ि लेलक, कामकाजमे सेहो लागि गेल दुनू छोट बहिनकेँ विवाह भऽ गेल मुदा ई बेचारी कुमारिए रहि गेल।'

मनोहर बाबूक चेहरापर बहुत सहज मुस्कान चलि आएल, ' लड़की अहाँ देखने छियैक ?'

'केहन बात करै छह मनोहर...लिए, तोँ अपन भौजी सँ पुछि लह, 'ओ आवाज देला, ' कान्ति...!'

' कान्ति ....ई अपन कवितासँ .....अहाँक पिसिऔत बहिनक .....कतेक उमेर हएत ? '

कान्ति बहुत सहज ढंगसँ बजलीह, ' इहे ३७ क लग पास। किए आइ ओकर स्मरण भेलैक ?'

'कान्ति ....अहाँकेँ एकटा खुश खबरी देबए चाहैत छी, मनोहरकेँ मोनमे गृहस्थ जीवनमे प्रवेश करबाक इच्छा जागि गेल अछि। ई विवाह करए चाहैत अछि।'

'...सहीमे ....?'कान्तिक आँखि आश्चर्यसँ उपर उठि गेल ।

मनोहरबाबू बजला, 'हँ भौजी, भैया ठीके कहि रहल छथि।'

कान्ति किछु आश्चर्यसँ बजलीह,' की अहाँक पार्टी एहि लेल अनुमति देत ? अपन केन्द्रीय अध्यक्षसँ पूछिलेने छी?'

एखन तऽ नहि पुछलहुँ अछि मुदा समय अएलाक बाद हुनकासँ पूछि लेब। हमरा विश्वास अछि ओ हमरा आदेश देता।'

एक दिन पीसी आ कविताकेँ कान्ति अपन घरपर बजौलीह। ओ कविता सँ कहलीह,' मनोहर बाबूक नाम तऽ सुनने हेबही ! पार्टीक लेल ओ विवाह नहि करैत छलथि। आब गृहस्थ जीवनमे आबए चाहैत छथि।'

पीसी आ कविता ओहि दिन ओहि घरमे कतेको घण्टा बितेली। सभगोटे भोजन सेहो कएलक। साँझमे जखन पीसी आ कविता जाए लगलथि तऽ कान्ति कवितासँ बाहरमे लऽ जा कऽ पुछलीह, 'की विचार छौक तोहर ....?'

कविता चुपचाप किछु देर ठाढ़े रहलीह, फेर बजलीह, 'दिदी, हुनकर केश तऽ पूरापूरी पाकि गेल अछि।'

कविता चलि गेलीह। कविता की कहलन्हि, ई मनोहर बाबूकेँ पता लागि गेल। दोसर दिन ओ अपन कार्यक्षेत्रमे घूरि गेला।

हुनकर भीतरधरि सुन्नसन बुझाए लागल। बुझएमे नहि आबि रहल छल जे ई सभ कोना भेल ? ई कि ठीक भेल की नहि ? ओ तऽ सम्पूर्ण जीवन कोनो उद्देश्यक लेल समर्पित कएने छला फेर ई सभ कोना भेल ?

कार्यक्षेत्रमे अविते कार्यक्रमक क्रम शुरु भऽ गेल। ओ अपन संसारमे फिर्ता चलि आएल छला। फेरसँ मनोहर बाबू ....आदरणीय मनोहर बाबू......सम्माननीय मनोहर बाबू........देवतातुल्य मनोहर बाबू........कें प्रतिध्वनि हुनकर कानमे गुन्जय लागल।

जहिआसँ मनोहर बाबू अपन घरसँ फिर्ता आएला अछि , नरेश हुनका किछु बदलल जेकाँ लागि रहल छल। ओकरामे पहिने जेकाँ उष्मा नहि अछि। गपसप्प किछु उखरल–उखरलसन करैत अछि।

बीच-बीचमे बिसरि जाइत अछि आ पुछए लगैत अछि एखन हम की कहि रहल छी। एक दिन जगदीशजीक घरपर मनोहर बाबू आ जगदीशजी चाह पीब रहल छला। जगदीशजी बात चलौलन्हि, 'मनोहर बाबू, मोनीक

लेल एकटा बढ़िया लड़का नजरि आएल अछि। अपने चौधरीजीकें तऽ जनिते छियैक ओ शहरमे तऽ हुनकर जोड़ाकें दोसर नहि छथि।'

नरेश अनुभव कएने छल मनोहर बाबू ओकरा दिस कनखीसँ देखि रहल छलाह। ओ बहुत उत्साहसँ जगदीशजीक बातकें समर्थन कएलन्हि,' ओतेक बढ़ियाँ परिवारसँ विवाहक बात होएब बढ़ियाँ बात अछि।'

जगदीशजी ईहो कहलन्हि,चौधरीजीक लड़का होनहार अछि। एलएलएम कएलाक बाद ओतएकें एकटा क्याम्पसमे लँ पढ़बैत अछि आ पिताक संग प्राक्टिस सेहो करैत अछि।

ओहि दिन पार्टीक जिल्ला कार्यालयमे नरेश हुनकर आगामे बैसल छल। ओ बजला, 'एहि नगरमे अहाँ बढ़ियाँ काज कएने छी नरेश। एतए अपन जनाधार बहुत बढ़ल अछि, हम आब अहाँकें एकटा एहन स्थानपर पठाबए चाहैत छी जतए काज नहि चलि रहल अछि। हम चाहैत छी ओतए जा कऽ काज सम्हारु आ गाड़ीकें ठीकसँ पटरीपर लाउ। हमरा विश्वास अछि जे ई काज अहाँ बहुत बढ़िया ढ़ंगसँ कऽ सकैत छी।'

हुनकर बातसँ नरेश चौंकल। एक क्षणक लेल ओकर मोन कतेको खण्डहर खधियामेसँ भटैक आएल। ओ मनोहर बाबू दिस आँखि गरा कऽ तकलक आ फेर जल्दीए आँखि झुका लेलक।

'जेना अपनेकें ठीक बुझाए मनोहर बाबू।'

दोसर दिन ओ भोरे भोर जगदीशजीक निवासपर पहुँचल। ओकर हाथमे प्रत्येक दिन जेकाँ पत्रिकासभ छल। मनोहर बाबू एक कप चाह पीलन्हि आ रुम दिस टहलए लगला।

'आउ नरेश !' ओ अपन चीरपरिचित मुद्रामे बजला आ नरेशद्वारा लाओल गेल पत्रिका देखए लगला। नरेशक नजरि इम्हर उम्हर दौड़ रहल छल।

मनोहर बाबू एकबेर नरेश दिस तकला आ ओकराद्वारा पत्रिकाक कटिङ्गपर आँखि दौड़ाबए लगला।

'जगदीशजी तऽ अपन बेटीक विवाहमे बहुत व्यस्त भऽ जएता।'

'बात कि फाइनल भऽ गेल छैक ?' नरेश पुछलक।

मुदा हुनका लागल ओकर आवाज सामान्य नहि छल आ श्वास सेहो रुकि-रुकि कऽ चलि रहल छल ।

'पक्के बुझू,' मनोहर बाबू बजला, 'चौधरीजी सेहो अपने लोक छथि एहन सम्भावना तऽ नहि अछि कोनो कठिनाइ हुए ।'

ओ नरेश दिस देखए लगला ।

'जगदीशजी अपन भैयासँ सलाह लेबाक लेल नेपालगञ्ज गेल छथि संगहि मोनीकेँ सेहो संगे लऽ गेल छथि । ओतए जुड़े महादेवकेँ कबुला छलन्हि । '

रुम एकाएक सान्त भऽ गेल, मनोहर बाबू कटिङ्ग देखए लगला । नरेश एकटा पत्रिका उठा लेलक । दुनू गोटेक बीचमे एकटा चुप्पी छल जे लगातार बाजि रहल छल । ओ मनोहर बाबूकेँ भीतर धीरे-धीरे बाजि रहल छल मुदा नरेशक भीतर बहुत जोर-जोरसँ बाजि रहल छल ।

मनोहर बाबू बाथरुमक लेल उठला, 'नरेश अहाँ अपन नव कार्यभार सम्हारए लेल कहिआ जा रहल छी ? '

'अपने जखने कहबैक ?'

'हम सूचना पठा देने छी ओतए लोक प्रतीक्षा कऽ रहल हएत ।'

मनोहर बाबू बाथरुमक गेट खोलि कऽ भीतर जा रहल छलथि कि हुनका नरेशक आवाज सुनाइ देलक, 'हम सोचैत छी एखने निकलि जाइ ....यदि अपने आज्ञा दी तऽ ....।'

'ठीक छैक ....आइए चलि जाउ ।' कहैत ओ भीतर सँ बाथरुमक गेट बन्द कऽ लेलन्हि ।

मीना कुमारी

ओ समय भोरक छल, मुदा फेकनकेँ हुनके बड़का बेटा प्रदीप आ छोटका उदित बहुत कड़ैक कऽ धमकौलक, एकरबाद खोपड़ी लग पासक समय गरमा गेल छल। फेकन आश्चर्यमे छला। दुनू बेटा हुनक कमाइसँ किनल गेल टाटा सुमोमे बैसि कऽ धरधरबैत निकलि गेल।

फेकनकेँ नाचए गाबएकेँ लऽ कऽ बेटाक ई व्यवहार बराबर देखएमे अबैत छल। मुदा आइ जाहि प्रकारे हुनकासँग व्यवहार कएल गेल एकर आशा फेकनकेँ नहि रहन्हि।

मुदा फेकन तऽ फेकने छथि। हुनका किछु नहि चाही। दुःख पड़ल वा सुख मात्र गएता आ नचता। तुरन्ते सभ किछु बिसैरि कऽ फेकन हरमुनिया उठौलन्हि आ भगबतीक गीत शुरु कऽ देलन्हि।

फेकन गरीब माएवापक असगरुवा बेटा छला। बच्चेसँ हुनका गाबएकेँ सख छलन्हि। महिसक पीठपर बैसि कऽ जखन फेकन मुक्त कण्ठसँ आलाप लैत छलथि तखन जेना लगैत छल महिसक पीठ नहि राजाक दरबार हुए आ ओ स्वयं फेकन नहि तानसेन रहथि। गाबएकेँ भूत सवार एहि प्रकार रहन्हि, फेकन घरसँ भागि कऽ एकटा नाच पार्टीमे सहभागी भऽगेला।

किछु दिनक प्रशिक्षणक बाद नाचक पक्का नचनियाँ बनि गेलथि।

मलंगवामे उचित लालजीक बेटीक विवाहमे फेकन पहिलबेर पूरे मेकअपक संग स्टेजपर उतरल रहथि। माछ आ रसगुल्लाक बीचमे फेकन बरीयातीसभकेँ एहि प्रकारसँ मोन मोहलन्हि एकरबाद ओ एरियामे, दोसर नाच पार्टीक कार्यक्रम नहि देखाएल।

फेकन अपन जीवनक ओ पहिल बेजोड़ प्रस्तुतिक अन्तिममे जखन

'इन्ही लोगो ने लेन्हा दुपट्टा मेरा...' गेला तऽ लड़काक काका उचित लालजी संगे अपने मञ्चपर चलि अएला आ खूब नाच कएलन्हि ।

लड़काक काका हरिओनक अपन पाँच कठ्ठा जमीन फेकनकेँ नाम कऽ देलन्हि । संगहि फेकनक नाम मीना कुमारी राखि देलन्हि ।

लोक बुझि गेल छल जे लड़काक काका आइ होशमे नहि छथि ।

फेकनक नामक संगहि ओ नाच पार्टीक नाम 'मीना कुमारी नाच पार्टी' भऽ गेल । लोक अपन घरक विवाह उपनयनमे मीना कुमारीक नाच कराबएमे अपन शान बुझए लागल । ओहि समयमे नहि जाइन कतेको व्यक्ति कबुला पूरा भेला पर रामजी, दूर्गाजी आ हनुमानजीक आगा मीना कुमारीसँ नाच करौलन्हि ।

समयक संग फेकनक नाम आ प्रतिष्ठा बढ़ैत गेल । कतेको पीढ़ीसँ आबि रहल दरिद्रता दूर भऽ रहल छल । नाचक मेनेजरक बेटीसँ फेकनक विवाह भेलन्हि । अपने विवाहमे फेकन पहिने खूब मोनसँ नचला, तकरबादे विवाहक बेदीपर बैसलथि ।

समयक संग फेकनक घरमे दू टा बेटा आ एकटा बेटीसँ भरि गेल छल । फेकनक मीना कुमारी नाच पार्टीक प्रतिष्ठा बढ़िते जा रहल छल । लोक कहैत अछि उचित लाल एकबेर काठमाण्डूसँ आएल नेताकेँ प्रसन्न करबाक लेल नवलपुरमे मीना कुमारीक नाच करबौलन्हि जकर पुरस्कार स्वरुप उचित लालजीकेँ एमपीकेँ टिकट देल गेल छल ।

आब फेकन बहुत व्यस्त रहए लागल छलथि ।

नाचे हुनका लेल सभ किछु छल । बच्चा बड़का भेल । दुनू बेटाक विवाह भेल, फेकन एहि विवाह सभमे पाहुने जेकाँ सहभागी भेल रहथि । ओना यदि फेकन स्मरण करैत छथि तऽ बहुत कठिनसँ बहुत बात स्मरण अबैत छन्हि । जखन हुनकर बाबूजीक निधन भेलन्हि तऽ सिरहाक रामपुरमे नाचि रहल रहथि । मायक मृत्यु भेलन्हि तऽ जयनगरक एकटा वकीलक घरपर शोहर गाबि रहल रहथि । आ जखन हुनक कनियाँ हुनकर जीवनसँ जा रहल छलीह तखन जलेश्वरक एकटा नेताजीक कनियाँक स्वागतमे बधाई गाबि रहल रहथि ।

फेकनक बड़का बेटा प्रदीप फेकनेकेँ रुपैया पानि जेकाँ बहा कऽ जिल्ला विकास समितिक इलाका सदस्य आ छोट बेटा उदित गाविस अध्यक्ष भेल छल। बेटासभक सामाजिक हैसियत बदैलि गेल अछि। आब ओकरासभकेँ फेकनक नाच गान बढ़िया नहि लगैत अछि। ओसभ नचनियाँक बेटा कहब पसिन नहि करैत अछि। ओसभ एहिकेँ लऽ कऽ अपन बाबूकेँ बेर-बेर सम्झबैत रहैत अछि। फेकन, बेटाक गाइर सुनैत छला आ नचैत छला। परेशान भऽ कऽ बेटा हुनका हुनके बनाएल घरसँ बाहर कऽ देने अछि। बीना कोनो शिकायतकेँ फेकन गामक चौक लग एकटा खोपड़ी बना कऽ रहए लागल छथि। ओ ओतहिसँ नाचक सौख पूरा करैत छथि।

नाचक कमाइसँ ५ गाममे जमीन किनने रहथि आ घर बनौलन्हि आ सभ किछु छोड़ि देलन्हि जेना छलहे नहि आब। मात्र एकटा अभिलाशा रहि गेल छन्हि जे बेटीक विवाह भऽ जाए आ अन्तिम समयधरि नचैत गबैत रही।

बेटाक विवाह फेकनक धनक बलपर भऽ गेल। मुदा लड़कीक विवाह फेकनक नाच गान बाधा बनि गेल अछि। इहे बात छल जे प्रदीप आ उदितक नजरिमे फेकनकेँ साँप बना देने छल। फेकनकेँ अपन प्रतिष्ठापर कलंक मानैत दुनू बेटा हुनकापर बराबर अपन तामस उतारैत रहैत अछि।

फेकन बुझि नहि पाबि रहल छथि नहि जाइन कतेको बेटीक विवाहमे नाचैत रहैत छथि मुदा हुनके बेटीक विवाह नचनियाँ होएब बाधा कोना भऽ गेल ? प्रदीप तऽ तामसमे आब फेकन पर हाथ उठाबए लागल अछि। फेकन चुपचाप मारि खाइथ छथि आ असगरे पड़लापर खूब कानथि छथि।

आब फेकन स्टेजपर अपन बेटीकेँ विवाहक तपस्या करैथि छथि तऽ लोककेँ लगैत अछि जे फेकन नाचि रहल छथि। आराधना करैत छथि तऽ लोककेँ लगैत अछि फेकन पाठ खेला रहल छथि, अपन बेटीक दुःखमे कनैथि छथि तऽ लोककेँ लगैत अछि फेकन गाबि रहल छथि।

बेटीक विवाहक बात कतहुँ बनि नहि रहल अछि। एहि बातकेँ लऽ कऽ फेकनक बेटासभ हुनकासँ पूरापूरी सम्बन्ध तोड़ि लेने अछि। आ फेकन बहुत असगरे भऽ गेल छथि।

कोनो तरहेँ प्रदीप पड़ोसक जिल्लामे अपन बहिनक विवाहक बात चलौलक। ओ लड़कावालासभसँ कहलक जे लड़कीकेँ माय बाबू दुनू मरि गेल अछि। लड़कावाला बीना माय बापक लड़कीकेँ दयासँ बुझू वा बढ़िया तिलक तैयार भऽ गेल रहथि।

विवाहक बात तए कऽ बेटासभ सीधे फेकनक खोपड़ी लग आएल। प्रदीप बहुत तमसा कऽ सम्झौलक, 'विवाहसँ कोनो मतलब नहि रखिह। लड़काबलासँ कहि देल गेल अछि जे लड़कीक माय बाप मरि गेल अछि ...।'

फेकनकेँ ई बात सुनिते करेन्ट जेकाँ लागल। ओ एतेक धरि बजलथि, 'हम तऽ जीबिते छी, तखने उदित गरदनि पकड़ि लेलक,' तो मरबहक मुदा हमरासभकेँ मारि कऽ.....'

फेकनकेँ गला अबरुद्ध भऽ गेल रहन्हि उदित तामसमे छल।

'तोहर इच्छा की छह बेटीकेँ जीवन भरि कुमारीए रखबहक, नचनियाँक बेटा बनि कऽ तऽ हमसभ जीबि रहल छी मुदा नचनियाँक बेटीसँ किओ विवाह नहि करतह।' ई कहैत उदित फेकनक पेटमे जोड़सँ लात मारलक।

फेकन दर्दसँ हुकरए लगलथि। आइ बहुत दिनक बाद फेकनकेँ अपन माय बाबू स्मरण आबि रहल छलन्हि ।

प्रदीप फेकनकेँ घसीटैत खोपड़ीसँ बाहर निकालि देलक। फेर एक-एक कऽ नाचक सभ सामान खोपड़ीक बीचमे जमा करए लागल। नाल, नगारा, हरमुनियम, नाचक पर्दा, कपड़ासभ किछु। अन्तमे उदित फेकनकेँ मेकअप बक्स उठौलक जकर जादूसँ मीना कुमारीमे बदलि जाइत छलथि। फेकन अपन आँखि मुनि लेलथि। प्रदीप खोपड़ीमे आगि लगा देलक। अन्तमे तमसाकऽ उदित ओ बक्साकेँ आगिमे फेकि देलक। फेकनक चेतना शुन्य भऽ गेलन्हि ओ अपन जीवनक एक-एक आशाकेँ

छाउरमे बदलैत देखि रहल छलाह। एकर बाद किओ फेकनकेँ नचैत गबैत की बात,बातो करैत नहि देखलक। लोकक मोनमे आब मीना कुमारीक नाच पार्टीक बात इतिहास मात्र रहि गेल छल।

लड़काबलाकेँ घरमे तिलककेँ तैयारी भऽ रहल छल। तिलकसँ पहिने जलपानक कार्यक्रम शुरु भेल। मन्त्रोचारणक बीच जहिना तिलक लगाबए लेल उठल ओहिना लड़काक बाबा प्रदीपकेँ टोकलक,' एखन कनि रुकू पहिने हमर एकटा सर्त पूरा करए पड़त।'

प्रदीप घबड़ा गेल। 'देब लेबकसभ बात भऽ गेल छैक तखन आब केहन सर्त ?'

बाबा बजला, 'हमर असगरुवा पोता अछि एकर जन्मपर एकर दाई कौबुला कएने छल, पहिने ओकरा अहाँ पूरा करएकेँ वचन दिअ तखने विवाह हएत।'

प्रदीप अपन पैसाक बलपर बाजल, 'बाबा अपन शर्त कहल जाओ, गाड़ी घोड़ाबला बात छैक की ?'

बाबा अपन अभिमानकसँग कहला, 'शर्त ई अछि हमर पोताक विवाहमे मीना कुमारीक नाच होएबाक चाही।'

प्रदीप आ उदित एक दोसर दिस ताकए लागल। ओकरा फुराइए नहि रहल छल कि कहल जाए। फेर बाबा बजला, 'अपनेकेँ स्टेजक व्यवस्था मात्र करए पड़त मीना कुमारीकेँ हम अपने सट्टा देब।'

कनी कालक बाद तिलकक काज शुरु भऽ गेल।

ᘓᘏᘍ

सुलेखा दीदी

हमर आंगुर पकरने भीतर गेलीह। फेर बामा मुड़ली आ एकटा सीट पर बैसि रहलीह। हम हुनकर कोरामे बैसले छलहुँ की अचानक आगामे पर्दापर रंगक ईन्द्रधनुष उतरि आएल। जे संगीत बजि रहल छल, ओकर झनकार हमरा रंगक रथपर बैसा कऽ दोसर संसारमे लऽ जा रहल छल। हम सिनेमा हाँलमे बैसि कऽ अपन जीवनक पहिल सिनेमा देखि रहल छलहुँ। सिनेमाक नाम छल 'दूधक कर्ज'।

सुलेखा दीदीक घर हमरासभक ठीक आगामे छल। हुनकर बाबू नहि छलन्हि। माय आ भैया मिल कऽ घर चलबैत छलीह। भैया भूजा बेचैत छल। बेरिएसँ हुनकर माय भूजाक लेल प्याउजसभ काटब शुरु कऽ दैत छलीह। साँझ होइते हुनकर भैयाक ठेलापर भूजा आ मसालासभ सजाओल जाइत छल आ ओ चौक दिस बेचए लाए निकलि जाइत छलथि।

सुलेखा दीदीक उमेर ओहि समय १५/१६ वर्षक छल हएत। हम तीन कक्षामे पढ़ैत छलहुँ आ सुलेखा दीदीसँ बहुत घनिष्टता छल। सिनेमा हुनकर प्राण छल।

हमर घरक लगहिमे हनुमान टाँकिज छल, जाहिमे सुलेखा दीदी नियमित रुपसँ सिनेमा देखए जाइत छलीह। हम हरेक समय हुनका सँगे जाइत छलहुँ। हम छोट छलहुँ आ छोट बच्चा एहि बातकेँ अघोषित ग्यारेन्टी लैत छलहुँ, हमरा होइत कोनो अनैतिक काज कएल नहि जा सकैत छल। संगहि हमरा लऽ गेलापर टिकटो नहि कटाबए पड़ैत छल। हम हुनकर कोरामे बैसि रहैत छलहुँ। हम सुलेखा दीदीकसँग हरेक

हप्ता एकटा सिनेमा देखबाक हिसाबसँ एतेक सिनेमा देखलहुँ जे हमर मित्र सभ हमरासँ ईर्ष्या करए लागल छल । संकट मोचन माध्यमिक विद्यालयक टिफिनमे जखन सभ पकड़ा पकड़ी खेलैत छल तखन हम चारि पाँचटा लड़का लड़कीसँ घेरल कोनो नव सिनेमा सुना रहल रहैत छलहुँ । सिनेमा देखब सुलेखा दीदीक लेल नशा छल । ई बात पूरे टोलबैयाकेँ पता छल । एहिद्वारे ककरो बिरोध नहि छल ।

हम धीरे-धीरे हुनकर आओर बहुत नजदिक भऽ गेलहुँ । मुदा एहिसँगहि हुनकामे किछु परिवर्तन सेहो देखाए लागल । 'शोले' देखैत समय ओ हमरा बैसा कऽ किछु देरक लेल गाएब भेलीह तऽ हमरा भेल ओ बाथरुम गेलीह अछि । मुदा जखन ओ १५ /२० मिनेटक बाद अएलीह तऽ कनी घबराएल आ अस्तव्यस्त सन छलीह ।

फेर एकरबाद ई नियमे भऽ गेल छल । ओ हरेक सिनेमामे हमरा बैसा गाएब भऽ जाइत छलीह । शुरुमे ओ १५/२० मिनेटमे फिर्ता आबि जाइत छलीह फेर १/१ घण्टाधरि गाएब होबए लगलीह । हम किछु पूछैत छलहुँ तऽ ओ उदास भऽ जाइत छलीह । जखन एना ओ अनिल कपुर आ माधुरी दिक्षितक एक सिनेमामे कएलीह तऽ हमरा शक होबए लागल । अनिल कपुर आ माधुरी दिक्षित हुनकर आराध्य छल आ माधुरी दिक्षित हुनका लेल पृथ्वीपर कोनो चमत्कार जेकाँ । हुनकर जीवनकेँ सभसँ बड़का इच्छा छल अनिल कपुर आ माधुरी दिक्षित विवाह कऽ लैथि । हम हुनका सीटपरसँ उठलाक १० मिनेटक बाद उठलहुँ आ बाथरुम दिस चलि गेलहुँ । बाथरुमक पाछूवला देवालसँ किछु आवाज आएल तऽ हम ओम्हर चलि गेलहुँ । हम देखलहुँ हमरे टोलक सुटबा जे हलमे टिकट चेक करैत छल, सुलेखा दीदी हुनकेसँग छल । सुलेखा दीदी हुनकर माथ सहला रहल छलीह ।

किछुए देरक बाद हुनका पाछू धकेलला तऽ ओ हँसय लगलीह । 'कतए जाएब....?' सुलेखा दीदी पुछलन्हि ।

'कतहुँ......जतए सिनेमा हल हएत । हमर नोकरी लागि जाएत । जतेक पैसा भेटत हमसभ खा लेब आ अहाँ सिनेमा देखब,' सुटबा

दीदीकेँ हाथ पकड़ैत कहलन्हि ।

एहि समयमे हुनकर नजरि हमरापर पड़ल ओ धरफराकऽ दीदीसँ अलग भऽ गेलथि ।

'टिंकू .....! चलू सिनेमा देखए,' ओ हमरासँ कहला ।

दीदीकेँ नजरि हमरासँ मिलल आ ओ चुपचाप सिनेमा हाँलमे घुसि गेलीह ।

बाटभरि दीदीसँ हमरा कोनो बात नहि भेल । दोसर दिन दीदी हमरा खेलाइतकाल बजौली आ कहलीह ओ सुटबासँ प्रेम करैत छथि । जेना अनिल कपुर माधुरी दिक्षितसँ करैत छथि आ हुनकासँ विवाह करबाक लेल कोनो हदधरि जा सकैत छथि । एकर बाद दू तीनटा सिनेमा सुलेखा दीदीक जीवनक सभसँ सुन्दर सिनेमा छल । हमरा हाँलमे बैसा कऽ ओ सुटबासँ भेटए चलि जाइत छलीह । ओ दुनू कोनो कोनमे अपन भविष्यक सपना देखए लगैत छलीह । दीदी हरेक सिनेमा दू बेर देखैत छलीह । कारण एक बेर ओ हाँलमे पूरे समय रहैत छलीह । जाहि दिन हमसभ 'तामाचा' सिनेमा देखि कऽ अएलहुँ हमरा दू आ सुलेखा दीदीकेँ अनगिन्ती थापर लागल छल । किओ हुनका विषयमे हुनकर भैयाकेँ पता नहि की कहि देने छल । ओकर एक दिनक बाद भोरे दोसर दिन हमरो पेशी भेल ।

'सुटबाकेँ चिन्हैत छी ? देखने छी एकरा सने कहिओ ? सिनेमाक बीचेमे निकलैति अछि की नहि, एक्केटा सिनेमा दू–दू बेर किए देखए जाइत छएँ ?कतेक देर तोरासँग रहैत छौ ई ?'

सुलेखा दीदीक भैया लग अनगिन्ती प्रश्न छल । हम सभकेँ जवावमे मात्र इएह कहलहुँ जे सिनेमा हमरा बढ़िया लगैत अछि तेँ ओकरा दोबारा देखबाक हमही जिद्द करैत छी । दीदी पूरा सिनेमा हमरेसँग देखैत छथि ।

हमरा बातकेँ विश्वास नहि कएल गेल आ सुलेखा दीदी किछु कहए लेल मुहँ खोलनहे छलीह कि हुनकर भैया हुनका पीटए लागल । दीदीक माँ सेहो अपना बेटाकेँ पीटए लेल उक्सा रहल छलीह । हम कानए

लगलहुँ आ हुनका रोकएकेँ कोशिस कएलहुँ तऽ ओ हमरा एहन धक्का देलन्हि जाहिसँ हमर माथ एहि प्रकारे देबालमे टकराएल जे तत्काले टेटर उगि गेल। हम कनैत घर चलि अएलहुँ। एक दिन भोरमे सुटबाक लाश हनुमान टाँकिजक पूरब दिस भेटल।

पुलिस कहने छल सुटबाकेँ जूवा खेलएबाक आदति छल। ककरो सँ उधार लऽ जूवा खेलने छल। उधार समयपर चुक्ता नहि कएलाक कारण हत्या कऽ देल गेल। ओहि महिनाक अन्तधरि सुलेखा दीदीक विवाह सेहो तए भऽ गेल। दीदी मात्र बरण्डापर कहिओ-कहिओ देखाइत दैत छलीह। हुनकर आँखि भीजल रहैत छल। ओ नहि जाइन कतए हेराएल रहैत छलीह।

हुनकर विवाहमे हम नव कपड़ा पहिरने छलहुँ।

दुरागमनकाल ओ हमरा गला लगा कऽ खूब कानए लगलीह।

हम एक दिन स्कूलसँ घर आबिए रहल छलहुँ कि बाटमे खुन भरी मांगक पोस्टर देखलहुँ। ई पोष्टर हमरा एक हप्तासँ परेशान कऽ रहल छल। हम सुलेखा दीदीकेँ स्मरण करैत आबि रहल छलहुँ रेखाक ई सिनेमा ओ पहिने दिन देखा देने रहितथि।

हमर दिमागमे पोस्टरक आधारपर पचासो कहानी दौड़ि रहल छल। जखन हम घर पहुँचलहुँ तऽ प्रसन्नतासँ झुमि उठलहुँ। सुलेखा दीदी हमरा घरमे बैसल माँसँ बात कऽ रहल छलीह।

हम अपन बैग फेकलहुँ आ दौड़ कऽ हुनका पजिआ लेलहुँ।

ओ हमरा माथपर हाथ फेरए लगलीह 'केहन छएँ टिंकू ?' हुनक आवाज दू तीन महिनामे एतेक बदलि गेल छल जे चिन्हमे नहि आबि रहल छल, एकदम टुटल सन आवाज, बिखरलसन लागि रहल छल।

ओ जाए लगलीह तऽ हमर आँखिमे नोर चलि आएल । ओ हमर माथ सहलौलन्हि, 'बेटा भऽ कऽ कानि रहल छएँ। कानू नहि, साँझमे बरण्डापर भेटब।'

साँझमे माँ बाबूजीसँ किछु कहि रहल छलीह, जाहिमे हमरा एतबे बूझएमे आएल सुलेखा दीदीकेँ सासुरक लोक टेप रेकर्डर आ साइकिल

माँगि रहल अछि । हुनका मारिपीटिकऽ एतए पठा देल गेल अछि । ओ सामान लऽकऽ आबए लेल कहल गेल अछि । हम एहि बातकेँ जतेक बुझि सकलहुँ ओहिमे हमरा ईहे लागल जे मारि खाएब कोनो बड़का बात नहि आ जतेक दिन टेप रेकर्डर आ साइकिल नहि देल जाएत ओतेक दिन सुलेखा दीदी हमरासँग रहतीह ।

जखन हम बरण्डापर पहुँचलहुँ दीदी पेन्टिङ्ग बना रहल छलीह । हम हुनकासँ कहलहुँ खुन भरी मांग अवश्य बढ़िया सिनेमा हएत । हमरा सभकेँ देखबाक चाही ।

'हम देखि लेलहुँ अछि', ओ कहलीह ।

हमर चेहरा मुरझा गेल, मुदा ओ तत्क्षण हमर ढोँढ़ीमे गुदगैयाँ लगबैत पुछलीह, 'कहानी सुनबएँ ?'

'हँ, हँ .....सुनाउ ने,' हम उत्साहित भऽ गेलहुँ ।

दीदीक आवाजमे उदासी कायमे छल ।

कथाक शुरुमे ओ उर्जाक अनुभव नहि भेल मुदा जहिना कथा ९,१० मिनेटक यात्रा तए कएलक, सुलेखा दीदी नहि जानि कतए हेरा गेलीह । फेर उर्जा फिर्ता आबि गेल छल ।

सुलेखा दीदी फाँर्ममे आबि गेल छलीह । हँस्सीबला अवसरपर हुनकर आवाज, हुनकर आँखि, हुनकर पूरे शरीर हँसय लगैत छल आ भावुक समयमे पूरा टोलकेँ भावुक जेकाँ कहि रहल छलीह ।

कहानी किछु एहन छल-धनिक बापकेँ दूटा बेटी छल जाहिमे एकटा सुन्दर आ दोसर कुरुप । सुन्दर बहुत घमण्डी आ कुरुप बहुत आज्ञाकारी । रेखाक एहिमे डबल रोल छल । बापक मरलाक बाद सुन्दर बेटी अपने मोनसँ विवाह कऽ लैत अछि आ कुरुप बहिनकेँ अपना मोनसँ विवाह नहि करए दैत अछि । कुरुप रेखा राकेश रोशनसँ प्रेम करैत छल, सुन्दर रेखा ओकरा मारएके योजना बनाबए लगैत अछि । सुन्दर रेखा एक दिन अपन पति कबिर बेदीसँ मांग करैत अछि जे ओ हुनकर बहिनकेँ मारि दैथि । 'खुन' सँ 'भड़ल' ई 'मांग' सुनि कऽ हुनकर पति डेरा जाइत छथि । मुदा हुनका पत्नीक 'खुन भरी मांग' पूरा करए पड़ैत अछि ।

ई हमर अन्तिम भेट छल। किछु महिनाक बाद बाबूजी ओहि शहरक दोसर टोलमे जमीन कीन कऽ घर बना लेलन्हि। हम सभ भाड़ाक घर छोड़ि एतए चलि अएलहुँ। हम ६ कक्षामे आबि गेल छलहुँ आ अपन मित्र सभक बीच घूलिमिलि गेलहुँ।

माँ अपन पुरान पड़ोसीसँ भेटए पुरनका टोलमे कहिओ–कहिओ जाइत रहैत छलीह। एक दिन ओ ओतएसँ घुमि कऽ अएलीह तऽ कहलीह सुलेखा दीदी आएल छौ आ ओ तोरा विषयमे पुछि रहल छलहुँ। हम घरमे चलि गेल छलहुँ। माँ बाबूजीसँ कनैत बजलीह जे बेचारी एतेक हसँमुख लड़की मात्र हड्डीकेँ ढाँचामे रहि गेल अछि। हम ९ कक्षामे चलि गेल छलहुँ। एक दिन माँ फेर सुलेखा दीदीक विषयमे कहलक, से सुनिते रोँइयाँ ठाढ़ भऽ गेल। दीदीक अपने सासुरमे जड़ि कऽ मृत्यु भऽ गेल छल।

माँ बाबूजीसँ कहलक जे साइकिल आ टेप रेकर्डर देलाक बाद हुनकर सासुरक लोक सोनाक चैन मांगि रहल छल। एहिसँ पहिलका भेटमे सुलेखा दीदी कनैत ओकरासँ कहने छल यदि हुनकर मांग पुरा नहि भेल तऽ हमरा मारि देत। हमरा कानएकेँ मोन भेल मुदा हम दबा लेलहुँ। दू चारि दिन धरि कतहुँ जाएके मोन नहि करैत छल। फेर सभ समान्य भऽ गेल।

हम एमएससीक फाइनलमे पहूँच गेल छी। दिन राति पढाइमे लागल रहैत छी। एक दिन नेपाल टेलिभजनसँ खुन भरी मांग सिनेमा आबए लागल। ओहि समय प्रत्येक शनिदिन नेपाल टेलिभिजनसँ हिन्दी सिनेमा दैत छल। ओ सिनेमाक नाम सुनितहि हम सभ काज छोड़ि ओ सिनेमा देखए लगलहुँ। जहिना–जहिना सिनेमा देखैत गेलहुँ हमरा भीतर किछु भरैत गेल आ किछु खाली सन होइत गेल। सिनेमाक समाप्त होबए धरि पूरे तरहेसँ भरि कऽ खाली भऽ गेल छलहुँ। नहि सिनेमामे रेखाक डबल रोल छल आ नहि खुनसँ भड़ल कोनो मांग छल। जकरा ककरो पूरा करबाक लेल ककरो खुन करबाक छल। हम स्वयंकेँ ओहि अवस्थाकेँ बुझबाक कोशिसमे अचानक हिचकए लगलहुँ।

माँ दोसर रुमसँ आबि गेल 'किए कनैत छएँ ?'

'नहि नहि ...,'

हम आँखि पोछैत कहलहुँ, 'ओकरा मारि देलकैक..।' हम बातकेँ सम्हारबाक प्रयास कएलहुँ।

'ककरा...?' माँ घबड़ा गेल। ओ टिभी दिस तकलक।

रेखा अपन हत्या करएबला कबिर बेदीकेँ खूब मारि रहल छल।

'रेखाकेँ......,'

हम किछु लजा कऽ सामान्य होबएकेँ प्रयास कएलहुँ।

'बेबकुफ नहि तन.......रेखा तऽ जीबिते अछि। ओहे तऽ बदला लऽ रहल अछि। सिनेमाक कीरा नहि तन.....'

माँ बरबराइते बाहर निकलि गेल। हम छत दिस तकलहुँ आ एकटा लम्बा श्वास लेबएकेँ प्रयास कएलहुँ मुदा फेफरामे किछु फँसि गेल सन लागल।

दर्दक कथा

सुमितकेँ काठमाण्डू बहुत पसिन रहन्हि। ४० वर्ष पूर्व जखन ओ ई शहर छोड़ने रहथि तऽ एतेक घर सभ नहि बनल छल। होटलक छोट रुममे बैसि कऽ ओहि दिनक स्मरण कऽ रहल रहथि। जखन ओ काठमाण्डूमे ब्रिटिशक एकटा स्वयंसेवी संस्थामे अधिकृतक रुपमे आएल रहथि। २०२४/२५क समय छल हएत। ओ बीए पास कएलन्हि। एक दिन पत्रिकामे देखलन्हि काठमाण्डू स्थित एकटा विदेशी संस्थामे विज्ञापन निकलल अछि।

सुमित एहि लेल आवेदन देलन्हि आ ई एकटा संयोगे छल जे हुनका अधिकृतक रुपमे नियुक्ति भऽ गेल। जलेश्वरमे, जतए हुनकर परिवार रहैत छल, ओहि ठामक लग पासक लोक सभ सेहो प्रसन्न भेल। सुमितक नियुक्ति एकटा बढ़िया स्थानपर भेल अछि।

हुनकर बाबूजीक मृत्यु बहुत पहिने भऽ गेल छल। माँ घरे रहिकऽ सिलाई करैत छलीह। परिवारक आम्दनी कम छल आ जीवन कहुँना घीचतीर कऽ बीत रहल छल।

ओहि समय स्वयंसेवी संस्थामे अधिकृतक तलब ६ हजार रुपैयाप्रति महिना छल। पड़ोसी सभ कहने छल एतेक तलब तऽ नेपालमे बड़का–बड़का हाकिमसभकेँ सेहो नहि होइत अछि। फेर ब्रिटिश स्वयंसेवी संस्थाक कहबे किछु आओर छल। घर भाड़ाक पैसा सेहो दैत छल। अफिससँ घर आबए जाएकेँ लेल एकटा गाड़ी छल। अन्य सुबिधा अलग छल। सभ हुनका घरसँ खुशी–खुशी बिदा कएने रहन्हि।

काठमाण्डू सुमितक लेल एकदम नव शहर छल। एकर अफिस

दरबारमार्गमे छल । सुमित एक मध्यम वर्गीय परिवारसँ अबैत छला । एहिद्वारे स्वयंसेवी संस्थामे काज करएबला अन्य अधिकृतसभसँ डेराएले रहैत छला । ओहिमे सम्पूर्ण काज अंग्रेजीमे होइत छल । सुमित अपन माँकेँ एकटा पत्र लिखलन्हि जाहिमे ओ बिस्तारसँ कम्पनीक विषयमे बतौलन्हि आ कहलन्हि, जलेश्वरे नाथक कृपा छल जे हुनका एतेक बढ़िया स्थानपर नोकरी भेल अछि ।

सुमित एकटा प्रतिभाशाली युवक छला । क्याम्पसमे पढ़िते समय ओ नेपालक विभिन्न समस्याक विषयमे पत्रिकासभमे लेख लिखने रहथि । ओ लेख सभक कटिङ्ग अपन आवेदनपत्रकसँग स्वयंसेवी संस्थामे पठौने रहथि ।

चयन समिति ओहि लेखकेँ पढ़ि कऽ बहुत प्रभावित भेल छल । एहि द्वारे जखन सुमितक नोकरी भेलन्हि तखन हुनका पब्लिक रिलेशन्स अफिसरमे राखल गेल । हुनका कहल गेल जे संस्थाक विषयमे विभिन्न पत्रिकासभमे लेख लिखैथि । पत्रकारसभकसँग मित्रता बढ़ाबैथि । संस्थाक विषयमे अनुकूल समाचार प्रकाशित कराबथि, जाहिसँ एहि संस्थाक छबि आम लोकमे बढ़िया बनौक । जखन हुनका प्रशिक्षण पब्लिक रिलेशन अफिसरक रुपमे भऽरहल छल ओहि समयमे हुनकर भेट हुनके उमेरक एक लड़की नगिनासँ भेल छल ।

सुमित जलेश्वरसँ छलथि । हुनकर पढ़ाई लिखाई नेपालीमे भेल छल । लेख तऽ ओ अंग्रेजीमे सेहो लिखि लैत छलथि मुदा नगिना जेकाँ धराप्रवाह अंग्रेजीमे बाजब कठिन होइत छलन्हि । एहि द्वारे दूतावासभमे हुनका जाए पड़ैत छल, ओ नगिनाकेँ आगा कऽ दैत छलथि आ हुनकर कहल बातकेँ हँ हँ मिलबैत रहैत छलथि ।

परिचय बढ़लाक बाद नगिना हुनकासँ एक दिन पुछलन्हि, 'ओ कतए रहैत छथि ।'

सुमित कहलन्हि 'ओ काठमाण्डूक लेल नव व्यक्ति छथि एहिद्वारे दरबार मार्गमे एकटा छोटका सन घर भाड़ापर लेने छथि । ओतहिसँ प्रत्येक दिन अफिस अबैत जाइत छथि ।'

सुमित नगिनासँ किछु नुकौलन्हि नहि । हुनका एतेकधरि कहि देलन्हि

जलेश्वरक एक साधारण मध्य वर्गीय परिवारसँ छथि ।

नगिना अपना विषयमे कहलन्हि, 'दू–तीन पीढ़ी पूर्व हुनकर पूर्वज कोनो पहाड़ी जिल्लासँ व्यापारक खोजीमे एतए आएल छल आ फेर एतहि रहए लागल । हुनकर बाबूजीक निधन बहुत पहिने भऽ गेल छल । माँ एकटा सरकारी अस्पतालमे नर्स छल । दूटा छोट बहिन अछि । गरीबीक कारण कठिनाईसँ हुनको दिन बीतल अछि । मुदा हुनकर बाबूजी एकटा बढ़िया काज कएने छथि काठमाण्डूक बानेश्वरमे एकटा घर किनि देने छन्हि । हुनकर माँकेँ बहुत पहिनेसँ इच्छा छल जे नगिना बढ़िया स्कूल आ कलेजमे पढ़ए, जाहिसँ ओकरा बढ़िया नोकरी भेट सकए । हुनकर शिक्षा दीक्षा तऽ काठमाण्डूएमे भेल छल ।

जखन ब्रिटिस स्वयंसेवी संस्थामे हुनकर इन्टरभ्यू भेल तखन निर्णय मण्डलीक सदस्य ई देखि कऽ आश्चर्य चकित भेल छल, 'ओ कोन तरहे धराप्रवाह अंग्रेजी बाजि लैत छलीह आ हुनकर जेनरल नाँलेज बढ़िया रहन्हि । ओ सुमितसँ बराबर कहल करैत छलीह जे हुनको संयोगेसँ एहि संस्थामे नोकरी भऽ गेल आ ओ हुनकेँ जकाँ एकटा मध्यम वर्गीय परिवारसँ छथि ।'

नगिना दू–तीन महिनाक बाद सुमितसँ कहलन्हि, 'किए नहि ओहो बानेश्वरमे घर भाड़ामे लऽ लैत छथि । संस्था हुनका पैसा देबे करैत अछि ।' फेर किछु दिनक बाद सुमित नगिनाक बात मानि लेलन्हि आ हुनके घरे लग चलि अएला । ओ घर दुनू गोटे मिल कऽ खोजने रहथि ।

नगिनाक माँ उदार विचारक छलीह हुनका एहि बातसँ कोनो आपत्ति नहि रहन्हि नगिना सुमितक घरमे बराबर जाइत अबैत रहैत छथि ।

ने एहि बातसँ कोनो आपत्ति छलन्हि जे सुमित नगिनाक घरमे अनुपस्थितिमे आबि कऽ टेप रेर्कडरपर पुरान गीत सुनैत छथि ।

धीरे–धीरे दुनू गोटेकेँ मित्रता प्रगाढ़ होइत गेल । एक दिन जखन नगिना कोनो बुधदिन कऽ सुमितक रुममे बैसि कऽ रेडियोपर हिन्दी गीत सुनि रहल छलीह, ओ अचानक सुमितसँ पुछलन्हि, 'की, ओ हुनकासँ विवाह करता ?

ई प्रश्न सुनएके प्रतीक्षामे सुमित स्वयं रहथि। फेर ओ स्वयं कतेक दिनसँ नगिनासँ ई बात कहएके अवसर खोजि रहल रहथि।

सुमित नगिनासँ कहलन्हि, 'ओ स्वयं अपन माँसँ पुछथि जे ओ एकटा मैथिल लड़का सँ बेटीके विवाह करबाक अनुमति देती ?'

जखन नगिनाक माए नगिनाक प्रस्ताव सुनलीह तखन ओ आगि बबूला भऽ गेलीह आ ओ कहलीह, 'मित्रता अलग चीज अछि आ विवाह अलग। एक गुरुङ्ग लड़की मैथिल लड़कासँ कोना विवाह कऽ सकत?' नगिना अपन माँ दस्तीके बहुत सम्फौलन्हि। एकरबाद कनिको ओ डोलएके प्रयास कएलीह तऽ नगिनासँ कहलीह, ओ सुमितसँ पुछिलैथि जे सुमित अपन माए बापसँ पूरा पूरी सम्बन्ध तोड़ि कऽ काठमाण्डूएमे रहत तखन किछु सोचल जा सकैत अछि।

जखन नगिना ई संदेश सुमितकेँ सुनौलन्हि तऽ सुमित चुप भऽ गेल। ओ फेर किछु सोचैत कहलन्हि, 'माँकेँ असरगरे बेटा छी। हुनकर माँ केँ हर्ट एटेक भऽ जाएत जखन ओ सुनत ओकरासँ सम्बन्ध तोड़ि लेलक, हुनका लेल पता नहि की की सपना संजोगि कऽ रखने हेतीह।'

नगिनाकेँ बहुत निराशा भेल मुदा ओ कोनो हालतमे सुमितसँ अलग नहि होबए चाहैत छलथि अतः ओ ई प्रस्ताब रखलन्हि जे दुनू बढ़िया मित्र बनि कऽ रहब बादमे विवाहक गठबन्धनमे बन्हाइ वा नहि।

सभ चीज ठीक–ठाक चलि रहल छल। अचानक ओ स्वयंसेवी संस्था कर्मचारी कटौतीके निर्णय कएलक। सुमित आ नगिनाकेँ ई निर्णय बहुत बड़का झटका देलक। नगिनाकेँ तऽ काठमाण्डूमे घर छल। मुदा सुमितकेँ किछु नहि। सुमित नगिनाकेँ कहलन्हि, 'लंदनक विश्व विद्यालयमे स्काँलरशिपक लेल निवदेन देलन्हि अछि। ओ एमए पढ़य चाहैत छथि। हुनका स्कलरशिप भेटि जाए तऽ ओ ब्रिटेन चलि जएता। आ दू तीन वर्षमे काठमाण्डू आबि नगिनासँ फेर भेटता। एकरबाद दुनू ई विचार करब जे हुनका विवाहक गढ़बन्धनमे बन्हबाक अछि वा नहि ? '

संयोगसँ सुमितकेँ लंदनक एक विश्वविद्यालयमे एम.ए.पढ़बाक लेल स्काँलरशिप भेटि गेल।

नगिना आँखिमे नोर लऽ बिदाई कएलन्हि आ ओ हुनका कहलन्हि 'ओ हुनका प्रतीक्षा करतीह।'

ओहि समय नेपालसँ ब्रिटेन फोन करब आसान नहि छल। एहिद्वारे सुमित नगिनाकेँ प्रायः प्रत्येक हप्ता पत्र लिखैत छल आ सम्झबैत छलथि जे ओ हुनकर प्रतीक्षा करैथि। ओ अवश्य नेपाल अएता।

एकदिन दुर्भाग्यवश दुर्घटनामे सुमित घाइल भऽ गेलथि। हुनका एक व्यक्ति उद्धार कऽ अस्पताल पहुँचौलकन्हि। ओ जी जानसँ सुमितकेँ बचाबएकेँ प्रयास कएलन्हि। अस्पतालसँ एक महिनाक बाद छुट्टी देल गेल। एकटा नेपाली भेलाक कारण ओ व्यक्ति सेवा मात्र नहि अपन घरपर ५ महिनाधरि रखलन्हि। राम तपेश्वर नामक ओहि व्यक्तिक लदंनमे कपड़ाक दोकान छल। सुमित फेरसँ अपन टांगपर ठाढ़ भऽ गेला आ विश्वविद्यालयमे स्काँलरशिप फेरसँ बहाल भऽ गेल। आब ओ पूर्ववत एमएक पढ़ाईमे लागि गेला। एहि बीच सुमित एकटा छोटका घर भाड़ामे लेलन्हि जे राम तपेश्वरक घरसँ नजदिके छल। राम तपेश्वरक लड़की कोइली जीजानसँ सुमितकेँ सेवा कऽ हुनकर जान बचौने रहथि। पता नहि किए सुमित हुनका दिस आकर्षित भऽ गेलथि। घटनाक बाद नगिना सँगक पत्रक सम्पर्क टुटि गेल। नगिनाकेँ ओ ई लिखब बिसरि गेलथि जे दुर्घटनाक बाद दोसर घर भाड़ामे लऽलेलथि अछि। जखन कतेको महिनाधरि नगिनाकेँ कोनो पत्र नहि आएल तऽ कोइली संग हुनकर नजदिकी बढ़ैत गेल। फेर राम तपेश्वरक दबाबमे ओ कोइलीसँ विवाह कऽ लेला।

हुनकर तऽ संसारे बदैलि गेल। सुमित एक प्रकारसँ नगिनाकेँ बिसरि गेलथि।

बीतल किछु बर्षसँ आर्थिक मन्दी शुरु भऽ गेल छल। लोक अपन–अपन घर घूरि रहल छल। हुनकर एक्केटा लड़का छल जे कम्प्यूटर ईन्जिनियर छल। हुनकर उमेर ६२ /६३ सँ बेसी भऽ गेल अछि। कनियाँ कोइलीकेँ एकटा बेमारीसँ निधन भऽ गेल आब ओ पूरा पूरी असगरुवा भऽ गेल रहथि।

हुनकर लड़का सुशिल अमेरिकामे ग्रीन कार्ड लऽ लेलक। एहि परिस्थितिमे

नेपाल आबि नव ढ़ंगसँ जीवन बीतएबाक निर्णय कएलन्हि ।

जलेश्वर अएलाक बाद हुनका पता चलल हुनकर माँकेँ निधन बहुत पहिने भऽ चुकल अछि।

हुनकर माँ एहि बातसँ बहुत तमसाएल छल जे ओ दोसर जाइतसँ विवाह कएलन्हि अछि। हुनकर घर सेहो काका हथिया लेने छला। जखन सुमित घर पहुँचलथि तखन हुनकर पितिऔत भाइ सभ ई घर हुनकर माँ दऽ देने जानकारी देलन्हि।

सम्भवतः ई बात झूठ छल, मुदा सुमित एतेक वर्षधरि विदेशमे रहलाक बाद नेपाल आबि कऽ मुद्दा अदालतमे फँसय नहि चाहैत छलथि। ओ बहुत सोचि विचारि कऽ काठमाण्डू चलि एला।

ओ ब्रिटेनमे नोकरीक क्रममे बढ़िया बचत कऽ लेने छलथि। ओ सोचलन्हि, 'यदि काठमाण्डूमे हुनका कोनो नोकरी नहिओ भेटत ओ छोट मोट कन्सल्टेन्सी कऽ लेता आ पत्रिकामे लिखता जाहिसँ समय बीत जाएत।'

सुमित जखन करीब ४० बर्ष पहिने काठमाण्डूमे रहैत छला तऽ बराबर रत्न पार्क लग पुरान किताबक दोकानमे जा किताब कीनैत छलथि। कतेको व्यक्तिकेँ आदत होइत अछि किताब पढ़ि लेलाक बाद सस्ता मोलपर बेचि देब वा बिक्री नहि भेल किताबकेँ सेहो ओहि दोकानमे बिक्री होइत अछि।

एक बेर ओ विद्यापतिक एकटा किताब ओहिठाम लेने रहथि।

सुमित ब्रिटेनेमे सोचि लेने रहथि जे नगिना अपन गृहस्थी बसा लेने हेएती कारण वर्षोसँ हुनकर पत्र नहि आएल छल। होटलमे बैसि कऽ पुरान दिनकेँ स्मरण करैत हुनकर मस्तिष्कमे एकटा विचार आएल जे किए नहि रत्नपार्क जा कऽ पुरान किताबक दोकानमे किछु समय बिताएल जाए। सम्भव भऽ सकए तऽ कोनो एहन किताब भेट जाए जे दोसरकेँ लेल बेकार हुए मुदा हुनका लेल बहुमूल्य।

पुरान आ सेकेण्डहेण्ड किताबक दोकानमे पुरान किताब आ पत्र पत्रिका खोजैत नजरि अचानक हुनका एकटा पुरान डिक्सनरी पर पड़ल जकर

कभरपर मोट अक्षरमे लिखल छल- नगिना । सुमित ई अक्षरकेँ बढ़िया जेकाँ चिन्हैत छला । ओ ओहि बातकेँ जनैत छलथि जे नगिनाकेँ बच्चे जेकाँ आदत अछि जे कोनो किताबक कभरपर अपन नाम लिखि दैत छथि ।

बेर–बेर पुछलापर कहैत छथि जे एहिद्वारे करैत छी जे पड़ोसी किताब नहि चोरबैथि । कहिओ पढ़य लेल माँगबो करथि तऽ स्मरण रहन्हि जे ई पुस्तक नगिनाकेँ छन्हि जे फिर्ता करबाक अछि ।

सुमित सेहो जनैत छला जे नगिनाकेर एकटा आओर आदत छल जे अपन किताबक पहिल पृष्टपर ओ अपन नाम पत्ता लिखि दैत छलथि । जाहिसँ ओ पुस्तक हेरा गेला पर जँ कोनो दोसर व्यक्तिकेँ भेट जाए तँ ओ फिर्ता कऽ सकथि ।

सुमित जल्दी–जल्दी ओ डिक्सनरीकसँग होटलमे पहुँचए चाहैत छलथि । हुनका बहुत प्रसन्नता भऽ रहल छल । हुनका लागि रहल छल जेना मानू ओ पुस्तककसँग ओ नगिना धरि पहुँच सकैथि ।

होटलक रुममे ओ डिक्सनरीक पहिल पृष्ठपर नगिनाद्वारा लिखल गेल हुनकर नाम आ पत्ता देखलन्हि । ओ पत्ताक अनुसार जखन नगिना ई डिक्सनरी किनने हेतीह ओहि समय ओ कुपण्डोल स्थित कोनो घरमे रहैत छलीह । सुमितकेँ नगिनाक किछु आदतक विषयमे पत्ता छल जे ओ आवश्यक कागज सर्टिफिकेट एतए धरि कि सय पचास रुपैया अपन किताबमे नुका कऽ रखैत छलीह । ओ सावधानीपूर्वक डिक्सनरीकेँ पूरा पन्ना उन्टौलथि । अचानक एकटा पत्र आ ओहिसँग खुलल एकटा लिफाफ देखि कऽ आश्‍चर्यमे पड़ि गेला । बहुतो वर्ष पहिने ओ लंदनक पुरान पतापर पत्र पठौने छलीह । मुदा ओ घर तऽ कहिआ छोड़ि देने रहथि । बादमे ओ अपन कनियाँ कोइलीक घरमे चलि गेल रहथि । लंदनमे पोस्ट अफिसबला ई पत्र नगिनाक पता पर नेपाल फिर्ता पठा देने छल ।

ई पत्र पढ़ि कऽ सुमितकेँ बहुत बड़का धक्का लागल छल । नगिना लिखने छलीह जे ओ धैर्य राखि कऽ हुनका आबएकेँ प्रतीक्षा कऽ रहल छथि । आ जहिआधरि ओ नेपाल नहि अएता ओ विवाहक कोनो बन्धनमे

ककरो संग नहि बन्हेती ।

सुमितकें लगलन्हि जेना बीनासेतीके ओ नगिनापर बहुत बड़का अत्याचार कऽ देलथि ।

कुपण्डोलमे ओ पतापर सुमित टेक्सी लऽ कऽ गेला जाहि घरक पत्ता ओ डिक्सनरीमे लिखल छल । ओ घरकें तोड़ि कऽ ओहिपर बहुत बड़का महल बनि गेल छल ।

सुमितकें हृदयमे बहुत चोट लागल ओ ओतए रहल गार्डसँ पुछलन्हि, 'एहि ठाम नगिना नामक कोनो महिला रहैत छल ?'

गार्ड कहलन्हि, 'जहाँधरि हुनका पता अछि एहि नामक कोनो महिला एतए नहि रहैत छथि ।'

कनी रुकैत गार्ड फेर बाजल, 'पुरान लोक अपन घर बेचि देने छथि । ओसभ कतहुं बाहर चलि गेल छथि । हँ, आगाकें चाह दोकानवालाकें शायद बुझल हएत पुरान लोकसभ कतए गेल अछि ।'

चाहक दोकानपर गेलाक बाद चाहबलासँ अपनत्व बढ़ाबएके हिसाबसँ पुछलन्हि, भाइ तो चेहरासँ मधेशीए जेकाँ लगैत छअ तोहर नाम की छअ, आ कतएके रहएबला छअ ?

ओ बाजल, 'हमर नाम भैरब अछि आ हम वीरगंजक रहएबला छी । हमर दू पीढ़ीसँ चाहेक कारोबार चलैत अछि ।'

सुमितकें लागलन्हि जे शायद भैरव नगिनाकें पता कहि दए ।

ओ भैरव सँ पुछलन्हि, 'एतए कोनो नगिना नामक गुरुङ्ग महिला रहैत छलीह ।'

भैरव अपन मानसपटलपर जोड़ देलक आ ओ बाजल, एकटा महिला अवश्य रहैत छल ओकर माए एहि ठाम वीर अस्पतालमे नर्स छलीह । हुनकर दू टा छोट बहिन छल । अचानक माँक मृत्यु भऽ गेलन्हि । ओ अपन दुनू छोट बहिनकें विवाह कऽ देली मुदा ओ आजिवन अविवाहित रहलीह । वर्षोधरि एक लड़काकें प्रतीक्षा कएलथि जे कहिओ काठमाण्डू मे सँगे रहल छला । बादमे पढ़य लेल विदेश चलि गेलाह । ओ हरेक दिन अफिससँ अएलाक बाद हमरा दोकानमे जे हुनकर नामसँ कोनो चिठी

विदेशसँ आएल अछि ? पुछैत छलीह । जखन ओ नहि कहि दैत छल तऽ ओ महिला दुःखी भऽ घर चलि जाइत छलीह । एहि बीच हुनका क्यान्सर भऽ गेलन्हि आ ओकरे इलाजक लेल ई घर बेचए पड़ल । दुर्भाग्यवश ओ महिला जकर नाम नगिना छल अस्पतालसँ नहि आबि सकलीह आ हुनकर निधन भऽ गेल ।

सुमितकेँ लागल मानू हुनकापर कोनो पहाड़ खसि पड़ल हुए ।

ओ भैरबसँ पुछलन्हि, 'की तो बता सकैत छअ एहि ठाम स्मशान घाट कतए अछि ।'

ओ कहलक जे पशुपतिमे स्मशान घाट छैक ओतहि जाउ ।

सुमित ओहि टेक्सीसँ पशुपति आर्यघाट पहुँचला आ ओकर म्यानेजरसँ नगिनाक विषयमे पुछलन्हि । करीब आधा घण्टा धरि बहुतो रजिष्टर खोजलाक बाद स्मशान घाटक म्यानेजरकेँ नगिनाक नाम पता भेटि गेल । ओ रजिष्टरकेँ सुमित दिस बढ़बैत कहलन्हि, 'की ओ उएह महिला छथि जिनका ओ खोजि रहल छथि ?'

सुमित रजिष्टरमे महिलाक नाम देखि कानए लगलथि । ओ म्यानेजरसँ नगिनाक सारा देखाबए कहलन्हि । मुदा म्यानेजर हिन्दूमे सारा लग नाम नहि लिखल रहैत अछि कहलाक बाद सुमित बहुत निराश भेलथि । सुमित बहुत देरधरि पशुपति आर्यघाटमे रहल सारासभ दिस तकैत नगिनाकेँ खोजैत रहला ।

म्यानेजर बूझए चाहैत छल नगिना के छल ? आ सुमितकेँ हुनकासँ की सम्बन्ध छल ? भरल आँखिसँ म्यानेजरसँ बिदा लैत सुमित कहलन्हि, 'की करब ई बूझि कऽ । ई हमर दर्दक कथा अछि जे हमरे संग जाएत ।'

अन्तिम साझ

जनकपुरक बलबा टोल लग बहुत पुरान आ बिशाल गाछ अछि। चैत बैशाख महिनामे गाछक नीचा फूल झरल ओहिना पड़ल रहैत अछि। हम ओ फूलकेँ उठा हाफ पेन्टक जेबमे राखि लैत छी।

आब जखन हम ट्रेनसँ मामा गाम जाएब तऽ एहने फूलसभ देखब, मोनमे चलि अबैत अछि। ट्रेनक बाटमे दू बगली विभिन्न प्रकारक फूलक गाछ सभ अछि।

अपन १२ बर्षक उमेरमे हरेक हप्ताक छुट्टीमे अपन दाई लग दबाई फलफूल, पत्रपत्रिका आ मैथिलीमे लिखल किताबकेँ पहुँचाबए लेल हमर शहरसँ एक घण्टाक दूरी पर रहल ढल्केबरक एक गाममे जाइत छी।

दाई ओतएकेँ एकटा विद्यालयमे प्राधानाध्यापक छथि आ एहि वर्ष हुनका अपन नोकरीसँ रिटायर होएबाक छन्हि।

दाईकेँ घरमे बेरियाक ३ बजेक समय एकान्तकेँ स्मरण अबैत अछि आ संग- संग मम्मीकेँ सेहो जे एहि समय रेडियोसँ अनुरञ्नीमे अबैत शास्त्रीय गायन वा बादन सुनि रहल।

मम्मीकेँ रातिक समय अपन टेरेसपर गुनगुनाएब, ताराकेँ देखब, चन्द्रमाक बढ़ैत घटब बढ़िया लगैत अछि।

ओ किछु ताराकेँ नाम सभ जनैत अछि। ओ साँझमे मम्मी गीत गाबि रहल छल।

'की तहुँ गएने छलाएँ ?' दीदी पुछैत अछि।

'हमरा नहि तहिआ गीत अबैत छल आ नहि एखन अबैत अछि।'

'तो गुल्जारकेँ गजल पढ़ने छिही ?'

'गजल की होइत अछि ?'

पापा गजलकेँ अर्थ सम्झाबए लगैत छथि। धीरे–धीरे गजल, शायरी, नीर आ इकबालकेँ चर्चा होबए लगैत अछि।

पापा कहैत छथि, बड़का भेलापर हमरा दुनू गोटेकेँ गुल्जारकेँ गजल पढ़बाक चाही। ओ अपन किताबक आलमारीमेसँ एकटा गजलकेँ किताब निकालैति छथि आ दीदीकेँ दैत छथि, मुदा हमरा नहि। दीदीकेँ चेहरापर आएल भाव हम बढ़िया जेकाँ पढ़ि रहल छी। ओ किताबकेँ कम आ हमर उदास चेहरा दिस बेसी देखैत अछि।

ओकर आँखि हमरासँ कहैत अछि, 'पहिने तो बड़का हो, तखन गजल तजलकेँ किताब छुबिहएँ।'

हमरा दुनू गोटेकेँ बड़का भेलापर की–की करबाक चाही, एहि केँ लऽ कऽ मम्मी पापाकेँ अपन–अपन योजना अछि। मम्मी सोचैत अछि हमरा उदित नारायण जेकाँ गायक बनबाक चाही आ पापाकेँ लगैत छन्हि हमरा गुलजार जेकाँ गजल लेखक होएबाक चाही। कहिओ कालकऽ डाक्टर इन्जिनियरबला बात सेहो करैत छथि। ओना एखन हम मात्र बड़का होबए चाहैत छी।

आब आठ महिनाक बात अछि, जाढ़ अबिते हम ९ कक्षामे पढ़बाक लेल दोसर स्कूल जाएब। बससँ जाएब तखन ई सभ छोट नहि कहता ?

देखिते–देखिते ई आठ महिना सेहो बीत जाएत। एहि गरमीमे भगवान कतए चलि जाइत हएता ? भयावह आ कड़ा रौद, भगवानकेँ शरीरपर पसिना वा हुनकर लग पास पंखा वा कुलर नहि होबएकेँ प्रश्न अबैत अछि। आ हम औघाएले दीदीसँ पुछए लेल उत्सुक भऽ जाइत छी। ओकरा निन्दसँ जगबैत छी ओकर चेहरापर पानिकेँ छिटा फेकैत छी।

'बेबकूफ .....की भगवान तोरो भरोसे बैसल छथि ? '

'हम हुनकर भक्त छी।'

'मुदा हम हुनकर भक्तन नहि छी।'

'तो तँ हमरा बुझा तऽ सकैत छएँ ।'

'तोरा जेहन मूर्खकेँ सम्झाएब हमरा बसक बात नहि अछि....हमरा सुतबाक अछि .....आब बड़का भऽ गेलए ......ई बतहपन बन्द कर ....दिन प्रति दिन बच्चा भऽ रहल छएँ ।'

एतेक कहलाक बाद दीदी सुति नहि रहल रहितएँ तऽ हम अवश्य कहितहुँ, 'आओर आठ महिना रुकि जो ....तोरा सभकेँ मजा चिखाएब.... ।'

'......हमरा सँ पहिने कि जन्म भऽ गेलहुँ, की हमरा पर अपन धाक जमबैत रहैत अछि ?'

मम्मी चश्मा पहिरने किछु बुनैत रहैत छथि वा कपड़ाकेँ आलमारीमे रखैत रहैत छथि । ओ बीच–बीचमे चश्मा लगबैत छथि आ पापा हरेक समय चश्मा पहिरने रहैत छथि । हम भोरमे गेट लग सँ आनि हुनकर हाथमे पत्रिका दैत छिएन्हि तऽ हमरा हुनकर टेबलुपर राखल हुनकर चश्मा सेहो देबए पड़ैत अछि ।

घरक गेटसँ पापाकेँ पलङ्गधरि बाटमे कहिओ काल द काठमाण्डू पोष्ट पढ़ए लगैत छी तखन दीदी कहैत अछि,' पहिने बड़का तऽ भऽ जो .....लगलए अंग्रेजी पत्रिका पढ़य । '

'एतेक इंग्लिश हमरा अबैत अछि ।'

'अच्छा तऽ बिस्कुटक स्पेलिङ्ग कहऽ ।'

कतेक चलाक अछि दीदी । सुगर, टी वा कपकेँ स्पेलिङ्ग पुछने रहितएँ तऽ बतादेने रहितहुँ, ओ बढ़िया जेकाँ बुझैत अछि जे हमरा बिस्कुट किनबाक लेल नहि पठाओल जाइत अछि ।

आइ राति पापासँ डिक्सनरी मांगब, ओ घरक पुरान डिक्सनरी अछि । एकटा मैथिली शब्द कोष सेहो अछि । दुनू डिक्सनरी पापाकेँ बाबूजी दरभंगामे किनने रहथि । ओहिपर हमर बाबाक नाम, शहर आ किनएवाला वर्षक चर्चा अछि ।

हमर बाबा कविता लिखैत छलथि । हुनकर कवितोक किताबो अछि जकर २०/२५ प्रति पापाक किताबक रैक पर राखल अछि ।

'बाबा कि करैत छलथि ?' दीदी पुछैत अछि ।

'सरकारी पुस्तकालयक ईन्चार्ज छलथि ।'

'गंगा सागरक घाट लग,' हम बजलहुँ ।

हम ओतहिसँ स्कूल अबैत छलहुँ आ ओ नजदिके बिड़ी पिबैत रहैत छलथि ।'

'अहाँ सिकरेट पिबए किए छोड़ि देलहुँ ?' दीदी पुछलक ।

'हमर श्वासमे तकलिफ होबए लागल छल ।'

'दाई कहि रहल छलीह जे सिकरेट पिलासँ क्यान्सर होइत अछि,' हम बजलहुँ ।

आ फेर पापा नहि दीदी क्यान्सरक बेमारी, ओकर इलाज, ओकर अस्पताल आ खर्चाक विषयमे बिस्तृत रुपमे बतौलक ।

किछुए दिन पूर्व ओकर एक संगीकेँ बाबू क्यान्सरसँ मरल छल ।

दीदी क्यान्सरक विषयमे बता रहल छल आ मम्मी पापा ओकरा दिस गर्वसँ देखैत रहैत छथि । दीदी बहुत तेज अछि आ साहसिक सेहो तेँ घरकेँ अधिकांश काज ओहे करैत अछि एतेकधरि जे हमर स्कूलक फिस सेहो भड़य जाइत अछि ।

'मनुष्य जल्दी-जल्दी बड़का किए नहि होइत अछि ?' हम दाईसँ पुछैत छी ।

'ई सभ भगवानक ईच्छा छैक ।'

'ओ तऽ स्वयं एतेक बड़का भऽ जाइत छथि ।'

'हुनकर बाते किछु आओर अछि ।'

'किए ?'

'ई संसार ओहे बनौने छथि ।'

'तोड़ा कोना बुझल छौक ?'

'सभ इहे कहैत अछि ।'

'ई सभ झूठ अछि ...ई संसार एहन कोनो एक व्यक्तिसँ नहि बनि सकैत अछि .....एहि संसारकेँ बहुत लोक बनौने अछि । '

'तोहर पापा कहने हेतहुँ ?'

'हँ ।'

'ओ नास्तिककेँ की बुझल हएत ?'

'आ जे लोक ई सभ कहैत अछि ?'

'ओसभकेँ सभ नास्तिक अछि ....।'

'पापा कहैत छथि जे बुद्ध सेहो नास्तिक छला ।'

'ई बहस अपन पापासँ करिहए ...आब तो सेहो बड़का भऽ रहल छए पता नहि हमरा घरमे धरम करम कहिआसँ शुरु हएत...।'

'कि...मम्मी पूजा पाठ नहि करैत छलहुँ ।'

'हुनको मोन गाना बजानामे बेसी लागल रहैत छन्हि ......रेडियो कानसँ छुटैत नहि छन्हि ...... अपन देवी देवताक चिन्ते नहि रहैत छन्हि... तोहर पापा सेहो बाबा जेकाँ अंहकारी छौ ...।'

'पापा तोरा स्मरण अबैत छौक ।'

दाई हमरा दिश ताकए लगैत अछि ।

'दोसर बेर हम सभ गोटे आएब ।'

'कतेक वर्ष भऽ गेल नहि तोहर माए एलहुँ अछि आ नहि बेबी ।'

'कि कोनो बात भेल छैक दाई ?'

'तो एखन नहि बुझबहीक ...तोहर बापकेँ किछु बात बढ़िया नहि लगैत छलैक ।'

ओ साँझ हमरा दाई किछु-किछु बतबैत रहल आ हम किछु-किछु बुझि रहल छलहुँ । आइ कतेको वर्षक बाद ओ साँझकेँ स्मरण अबैत अछि तऽ दाईकेँ डबडबाएल आँखि आगा चलि अबैत अछि ।

आ ओकर डायरीमे राखल एक गोटेकेँ फोटो जे हमर बाबा नहि छला । बहुत दिनक बाद हम कतहुँसँ बुझलहुँ जे ४० वर्षक उमेरमे विधवा भेलाक बाद दाईक जीवनमे एक गोटे किछु वर्षक लेल आएल छल आ चलि गेल ।

'तोँ हमरासँग दाई लग चलबे ?'

'की भुत फेर सता रहल छौक ।'

'ओ तोड़ा बहुत स्मरण करैत रहैत छौक ।'

'आ पपोकेँ ?'

'पापाकेँ सभसँ बेसी .., पहिल बेर दाईकेँ एतेक बेसी दु:खित देखलहुँ ।'

'पापाकेँ नहि कहिए ई सभ बात ।'

'हम कहि देलिए अछि ।'

'की कहलखुन ?'

तखन हमरा पापा उदास जेकाँ लगलथि मम्मी हमरा ओतएसँ जाएकेँ लेल कहि देलक । बादमे हम खिड़कीसँ पापाकेँ पलङ्गपर सुतल आ मम्मीकेँ हुनकर माथ सहलबैत देखलहुँ । हम किछु नहि बुझि सकलहुँ । तखन हमरा ई बात अवश्य स्मरण आएल जे बराबर पापाकेँ नामसँ दाईकेँ चिठ्ठी लबैत छलहुँ मुदा कहिओ पापा चिठ्ठीक जबाब नहि देने छलथि ।

एक बेर हमरा पुछलापर अवश्य कहलन्हि, 'दाईकेँ कहिए हमरा किछु नहि कहबाक अछि ।'

'अहाँ हमरासँग किए नहि ओतए चलैत छी ?'

हमर ई प्रश्नपर पापा बहुत देरधरि चुप रहलथि । पता नहि कि छल जे दाईकेँ विषयमे चर्चा कएलापर एकटा तनाव उत्पन्न भऽ जाइत छल । एना होबएकेँ कनी कारण दीदी अवश्य बुझैत छल मुदा हम किछुओ नहि जनैत छलहुँ ।

'हम एहि वर्ष बड़का भऽ जाएब । '

'कोना ?' दीदी कनि विहुँसल ।

'हमरा लेल बसक पास बनल...हम असगरे स्कूल जाएब ।'

'तो छोट तऽ छेएँहे मुदा बेबकुफो कम नहि ।'

'कि मम्मी पापा सेहो मूर्ख छथि ?'

'यदि बसमे असगरे बैसलासँ बड़का भऽ जाइत अछि तऽ दाई लग तोँ असगरे जाइत छएँ ?'

'फेर पापा एना किए कहैत छथि ?'

'ओ बुझैत छथि जे तो बेबकूफ छएँ ....तोरा फुसलाओल जा सकैत अछि ।'

'मुदा मम्मी त' हमरा एतेक मानैत अछि।'

'ओ तोरा मोन नहि दुखाबए चाहैत छौ।'

'आ तो ?'

'हमरा तोरा उपर दया अबैत अछि। हमरा खराब लगैत अछि हमर छोट भाइ एतेक नालायक अछि .....।'

आ एहि प्रकारे किछु-किछु कहैत दीदी पीठ सहलाबए लगैत छल। हमर केशपर हाथ फेरैत छल। दीदीक हाथ हमर केशकेँ सहलावए शुरु करैत अछि आ हमर पपनीपर नोर चलि अबैत अछि।

मुदा हमरा तखन आश्चर्य लगैत अछि जखन हम दीदीकेँ आँखिसँ नोर झरैत देखैत छी की ओ हमरा लेल कनैत अछि ? कि दीदीकेँसँग ई पश्चाताप जुड़ल अछि की हमरा लग कनिको समय नहि निकालि पाबि रहल अछि, हमरा भीतरक उथलपुथलकेँ कनिको अनुमान नहि होइत अछि जे दीदी किए कनैत छएँ ?

दीदीकेँ मोन उथल-पुथल जेकाँ लगैत अछि मुदा ओ हमरा सभ लग बनल रहैत अछि।

'तो सच्चे कहैत छएँ नरेश .... आइ काल्हि हमर ध्यान पापाक कथामे नहि रहैत अछि ......हम सुनबाक स्वाङ्ग करैत रहैत छी।'

'फेर तोहर ध्यान कतए रहैत छौक ?'

'ई हमर रहस्य अछि.....हम तोरा सभ किछु कहैत छियौक....मुदा हमर बात एखन तोरा बुझएमे नहि अएतहुँ।'

हमरा दुनू गोटेकेँ ई बातचित, अगहनकेँ साँझ उतरैत समय अपन घरक छतपर भेल छल। एकरबाद दिनमे हमर आठक बोर्ड परीक्षाक रिजल्ट चलि आएल। हम नव स्कूलमे जाए लगलहुँ। एक दिन साँझमे घरपर जुताक फिता खोलिए रहल छलहुँ की हमरा दीदीकेँ कानएकेँ आ पापाकेँ जोड़–जोड़सँ चिचियाएकेँ आवाज आएल हम ओतहि रुकि गेलहुँ अपने घरक बातचितकेँ चुपचाप कोनो जासुस जेकाँ सुनए लगलहुँ। मम्मीकेँ एकटा हाथ पापाक कन्हापर छल। दीदी कुर्सीपर बैसि कानि रहल छल। ओकर ओढ़नी छातीपरसँ नीचा खसि गेल छल आ शायद

चिचिआएबसँ ओकर स्तनकेँ चढ़ब उतरब नजरि आबि रहल छल ।

'हम बच्चा नहि छी । २२ सालक लड़की छी अपन जीवनक निर्णय स्वयं क॑ सकैत छी ।'

'एहिकेँ लेल तोरा किओ रोकि नहि सकैत छौक....एहन निर्णय तो एहि घरसँ बाहर जा क॑ अवश्य ल॑ सकैत छए,' पापा कहि रहल छला ।

'हम चलि जाएब ....तोरा सभकेँ छोड़ि क॑ चलि जाएब ...'

'............बाहर सँ लोक सुनि रहल हेतौक, ' माँ कहि रहल छल ।

बाहर अन्हार छल आ हम सेहो छलहुँ ।

अपन मम्मीकेँ निर्देशन आ दीदीकेँ कानब सुनि रहल छलहुँ । दीदीकेँ हिचकब शुरु भेल । पापा कुर्सी पर बैसि रहला । माँ कोनो कोन्हमे ठाढ़ छल । हुनका तिनूक अतिरिक्त दुःख ठाढ़ अछि आ संकट सेहो ।

हमर पड़ोसमे सुतल दीदी राति भरि हिचकैत रहल । हमर अतिरिक्त घरमे रातिमे किओ नहि खएलक । मम्मी पापा जल्दी सुतबाक लेल अपना रुममे चलि गेल ।

किओ हमरा नव स्कूलक विषयमे नहि पुछलक । मम्मी ई अवश्य पुछलक जे स्कूलमे खेलबाक लेल मैदान घेरल अछि कि नहि ?

मम्मीकेँ पुछिते हम कहलहुँ, 'छैक ।'

अगहनकेँ ओ अभागल दिनमे हमरा आगा दीदीक रहस्य खुजल । दीदी अपने क्याम्पसक मुस्लिम युवकसँ प्रेम करए लागल छल ।

ओ युवकसँग क्याम्पसक क्यान्टिनमे बैसल, क्यान्टिनसँ निकलैत देखल गेल । जाहि क्याम्पसमे ओ सभ एना कएलक ओ क्याम्पसमे हमर पिसी लेखापाल अछि । मम्मी पापा ओतेक नहि जतेक पिसी सभ बातकेँ परिवारक इज्जतसँ जोड़ि क॑ बिहारि आनि देने छलीह ।

पिसी बेर–बेर दाईकेँ बजाबएकेँ कहि रहल छल । आ पापा पूरे समस्याकेँ अपने ढंगसँ सम्हारएकेँ पक्षमे छलथि । पिसी एहिपर अड़िग छल जे बदनामी पसरएसँ पहिने दीदीकेँ कतहुँ विवाह करबाएब संकटकेँ सभसँ बढ़िया समाधान छल आ पापा एहि बातकेँ बुझबाक लेल एक

दमसँ तैयार नहि छला ।

शायद जाढ़क ओहि समयमे बसमे असगरे बैसल हम बड़का होबए लागल छलहुँ कमसँ कम बड़का होएब ककरा कहैत अछि तकरा कनी बुझए लागल छलहुँ ।

ओ जाढ़मे हम पहिने मम्मी,पापा आ दाईकेँ बड़का होबएकेँ बुझलहुँ आ बादमे दीदीकेँ बड़का होबएकेँ ।

बड़काकेँ संसार कतेक अलग नजरि आबि रहल छल आ कतेक अराजक सेहो । मुदा छोट लोककेँ संसार सेहो जटिल नहि छल । सहीमे संसार स्वयं एक जटिल कल्पना, विचार आ स्थान अछि, जकरा हमरा बादक वर्षमे बुझबाक अछि । पुस माघक जाढ़मे बसन्त ऋतुक आगमन संगहि एकटा लड़का बड़का भऽ रहल अछि ।

आइ जखन ओ जाढ़केँ बितला ४/५ वर्ष भऽ रहल अछि तऽ ओ साँझक स्मरण ओहिना घेरि लैत अछि ।

हम विराटनगरक ई शहरमे ठाढ़ ओ हेराएल बिसरल बढ़िया खराब उज्जर कारी रातिकेँ स्मरण करैत छी जाहि रातिमे हम बड़का भऽ रहल छलहुँ जतए हमर बाल्यपन हमरासँ छुटैत जा रहल छल ।

जतए हम एक दोसर मनुष्यमे बदलि रहल छलहुँ । अगहन पुसक साँझ हमर बाल्यपनक अन्तिम साँझ छल ।

पोष्टमार्टम

भोरमे पत्रिका देखि हम किछु देरक लेल बिचलित भऽ गेलहुँ । पहिले पृष्ठपर सभसँ उपर बड़का समाचार छल-पत्रकार चन्दा मण्डलक हत्या ।

हमर माथ घूमए लागल । ई तऽ उएह छलीह .....चन्दा । मुदा मोन मानए लेल तैयार नहि छल । चन्दा एहि तरहे, नहि मरि सकैत छलीह । मुदा समाचार पढ़लाक बाद कोनो संशय नहि रहि गेल छल जे ओ उएह चन्दा मण्डल छथि, जकरासँग हम तीन सालधरि गर्ल्स होस्टलमे रुम शेयर कएने छलहुँ । हमरासँ करीब तीन साल छोट छलीह चन्दा । हम बीए फाइनलमे छलहुँ आ ओ प्रथम वर्षमे नामांकन करौने छलीह । उचाईमे कनी छोट छलीह । मुदा पहिल नजरिमे हुनका किओ नजरअन्दाज नहि कऽ सकैत छल । गोर रंग बड़का आँखि,डाँर धरि केश ।

हमरासँ ओ कैन्टीनमे भेटल छलीह । वार्डन परिचय करौलन्हि, ‘ममता ई छथि चन्दा । अहाँक रुममे रहती, हम एहि साल हरेक जूनियरक संग एकटा सीनियर लगा रहल छी ।’

हम ठीक छैक बला मुद्रामे हुनका देखने छलहुँ । ओ पर्सा जिल्लाक कोनो गामसँ काठमाण्डू पढ़ए आएल छलीह । चन्दा शुरुमे कम बजैत छलीह । धीरे–धीरे हमरासँ खुजए लगली । अबेर रातिधरि टेबुल लैम्प जरा कऽ लिखैत रहैत छलीह । हमरा पता लागल जे ओ लेख तेख लिखैत रहैत छथि ।

हम रुचि लेब शुरु कएलहुँ तऽ ओ हमरा अपन लेख सुनाबए

लगलीह ।

ओहि समय क्याम्पसमे एकटा लड़कीकसँग किछु सिनियर लड़कासभ अभद्रता कएने छल । चन्दा बहुत बढ़िया जेकाँ ओहि घटनाक वर्णन कएने छलीह । ओ किछु प्रश्न सेहो उठौलन्हि जे छात्रासभकेँ एहि प्रकारे परेशानी किए सहए पड़ैत अछि ? घरसँ दूर रहएबाली लड़की अपन सुरक्षाक लेल कतए जाए । लेख पढ़ि कऽ हम हुनका खूब प्रशंसा कएने छलहुँ ।

चन्दा प्रसन्न भऽ गेलीह, 'दीदी हमरा एहि प्रकारक लेख लिखब बढ़िया लगैत अछि । हमरा बहुत तामस होइत अछि, जखन हम कोनो लड़कीकसँग अन्याय होइत देखैत छी । हम अपना लग गाममे हरेक समय एहने बातसभ देखैत छलहुँ तखन तऽ हम पढ़य लेल एतेक दूर चलि आएल छी ।'

ओहि दिन नहि जाइन किए चन्दाक बात सुनि कऽ हमर आँखिमे नोर चलि आएल छल । मुदा आइ ई समाचार पढ़ि कऽ हम कानि नहि सकलहुँ । भोरक चाहधरि पीबाक मोन नहि कएलक । भयंकर उथलपुथल मचल छल मोनमे । केशव अफिस पहुँच गेल हएता । हम फोन लगेलहुँ । शीघ्रे कहिदेलहुँ, 'आजुक पत्रिका देखलहुँ अछि ? अपन चन्दाकेँ हत्या भऽ गेलैक ......'

केशव कनी उखरल सन कहला,'तऽ की भेलैक ? ई तऽ होबहेकेँ छलैक एही बातक लेल अहाँ फोन कएलहुँ अछि ? छोड़ू एहन बात....'

हमरा केशवक ई प्रतिक्रिया बढ़िया नहि लागल । आखिर ओहो तऽ मर्दे छथि । उपर बढ़ैत महिलाकेँ बर्दास्त कऽ सकैत छथि ? मुदा हम चुप नहि रहि सकलहुँ । कपड़ा बदलि कऽ चन्दाक घर लाजिम्पाट दिस बढ़ि गेलहुँ । पुलिस पूरे इलाकाकेँ घेरने छल । हुनक घरक लग पास ककरो जाए नहि दऽ रहल छल । हम दूरेसँ चन्दाक दू महला पर स्थित घर देखलहुँ । एक महिना पहिने हम ओतए पहुँचल छलहुँ । उएह बजौने छलीह सँगे चाह पीबाक लेल । चन्दा ओहि दिन जीन्स पेन्ट आ ब्लू

रंगक ढील सन टीसर्ट पहिरने छलीह हुनकर केश पहिने जेकाँ लम्बा छल । हुनकापर खुजल केश खूब जँचि रहल छल । ओहि तल्लामे असगरे रहैत छलीह । घरकेँ बाहर छतेपर बहुत रास करौटन लागल छल । घर ओ बहुत सूरुचि पूर्ण ढंगसँ सजौने छलीह ।

हमरा देखिते ओ दौड़ि कऽ पजिआ लेलीह । आ बजलीह,' ममता दीदी पता नहि कतेक प्रशन्न छी जे अहाँ अएलहुँ अछि ।'

बहुत स्नेहसँ अपना रुममे लऽ गेलीह । मुर्गाक बनलेस मंगा कऽ रखने छलीह । चाह पिऔली । हम हुनकासँ बहुत किछु पूछय चाहि रहल छलहुँ । खास कऽ राजेन्द्र सुवेदी मन्त्रीसँ बढ़ैत सम्बन्धक विषयमे । केशवे हमरा बतौने छला जे किछु दिन पूर्व मन्त्री चन्दाकेँ अपनेसँग विदेश भ्रमणपर लऽ गेल छलाह । हम चन्दाक घरकेँ बहुत गम्भीरतापूर्वक अवलोकन कऽ रहल छलहुँ । कतहु मन्त्रीजीक उपस्थितिक प्रमाण नजरि आबि जाए । मुदा एहन किछु नहि छल । हम बहुत अबेरधरि ओतए बैसि नहि सकलहुँ । किछुए कालमे चन्दाक मोबाइलपर किओ फोन कएलक । ओ नम्बर देखि कऽ मोबाइल उठा सिढ़ीपर चलि गेलीह । हम खिड़कीसँ हुनका दिस देखि रहल छलहुँ । एना लागि रहल छल मानू किओ हुनका डाटि रहल हुए । हुनक मुहँ लाल भऽ रहल छल ।

ओ रुममे अएलीह आ किछु घबराति बजलीह, 'ममता दीदी, हमरा अचानक जाए पड़ल ।आइ एम साँरी । अहाँकेँ एहि तरहे बजा कऽ ......'

'कोनो बात नहि ।' हम उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ ।

ओ हमरा नीचाँ गेटधरि छोड़ए अएलीह । हम किछु सोचि रहल छलहुँ चन्दा अचानक बजलीह, 'दिदी, अहाँसँ बहुत बात करवाक छल । एकटा समाचार सेहो कहबाक छल.......'

'की ?' हम आश्चर्यमे छलहुँ ।

ओ जल्दीसँ बजलीह, 'अहाँकेँ तऽ बुझल अछि उएह महेश....'

हुनक चेहरापर बहुत कोमलसन भाव आएल, 'आब हमहूँ अहीँ

जेकाँ सेटल होबए चाहैत छी दीदी। बहुत भटैकि गेलहुँ दीदी। आब शान्तिसँ जीबए चाहैत छी। हम तए कएलहुँ अछि जे विवाहक बाद काठमाण्डू छोड़ि देब। कतहु आन ठाम चलि जाएब,' ओ चुप भऽ गेलीह।

हमरासँ रहल नहि गेल हम पुछि लेलहुँ, 'यदि अहाँ महेशसँ विवाह करबैक तऽ राजेन्द्र सुवेदी मन्त्री जीसँ अहाँक नाम किए एतेक चर्चामे अछि ?'

ओ हमर एहि प्रकारक अप्रत्याशित आक्रमणक लेल तैयार नहि छलीह।

एकदम सन घबड़ा कऽ ओ बजलीह, 'एहन किछु नहि अछि दीदी। मन्त्री जी एकटा महिला केन्द्रीत पत्रिका निकालबाक योजनामे छथि। ओ हमरा सम्पादक बनाबए चाहैत छथि। एहि सन्दर्भमे भेटैत छी हुनकासँ बस,' मुदा नहि जानि हुनक चेहरापर पसीना-पसीना चलि आएल।

हमर आगा ओहि समय जे चन्दा ठाढ़ छलीह से, ओ नहि छलीह जे हमर जूनियर बनि कऽ होस्टलमे हमरासँग रहए आएल छलीह।

कतेक सोझ आ इमान्दार छलीह ओ, हुनकासँ बात करबाक मोन होइत छल। हुनका लिखल चीज पढ़एमे मजा अबैत छल। ई के अछि हमरा आगा ? डेराएल स्वयंसँ दूर भगैत लड़की ?

हम घर चलि अएलहुँ। जखन हम केशवसँ कहलहुँ जे चन्दा महेशसँ विवाह करए जा रहल छथि, ओ बहुत हँसलथि। महेश हुनकर क्लासमेट छल। हम कनी खौंझा कऽ पुछलहुँ,' एहिमे हँसबाक की बात अछि ?'

'आब नाटक किए कऽ रहल अछि दुनू ? सभकेँ पता अछि किए कऽ रहल अछि दुनू विवाह।'

'हमरा बूझल अछि क्याम्पसकेर समयहिसँ दुनू एक दोसरकेँ पसिन करैत छथि।'

केशव मुहँ टेढ़ कऽ कऽ बजला, 'तखन बात अलग छल। मन्त्रीए जी चन्दाकेँ कहला पर महेशकेँ नोकरी लगौलन्हि अछि। चन्दाकेँ किछु बुझएमे नहि आबि रहल अछि। एक दिस ओ मन्त्रीजीकेँ कनियाँ बनि कऽ हुनकासंग पोखरा वा भारत घुमए जाइत छथि आ दोसर दिस महेशकेँ नोकरी दिआबएकेँ लेल हुनकापर दवाव दैत छथि।' '....पागल अछि महेश जखन ओ चन्दाकेँ करेक्टरक विषयमे बुझि गेल अछि तैयो ओ ओकर पाछू किए पड़ल अछि ? बुझल अछि किछु दिन पूर्व महेश ओकरा खूब पिटने छलैक। चन्दा पुलिसमे सेहो शिकायत कएने छलीह। हमर एक मित्र महेशसँ भेटल छल तऽ चन्दाक विषयमे नहि जाइन की की कहने छल। ओ गलत लड़की छथि.......।'

'तऽ फेर आब कोना दुनू विवाह कऽ रहल छथि ?'

'उएह तऽ। कोनो तऽ बाते भेल हएत .....। भऽ सकैत अछि मन्त्रीजी अपन नाम बचाबए लेल स्वयं एना कएने होथि। चलू बढ़िएँ भेल महेश बेचारा द्वारेद्वार भटैकिए रहल छल।'

हमरा किछु बुझएमे नहि आएल भऽ की रहल छैक। मोनमे आएल चन्दाक लगमे जा कऽ साफ–साफ पूछी बात की भऽ रहल छैक मुदा फेर अवसर नहि भेटल।

हम प्रतीक्षा कऽ रहल छलहुँ विवाह पर हमरा ओ आमन्त्रित करथि। शायद हुनक विवाह भेबे नहि कएल।

चन्दाक हत्यासँ हम बहुत भीतरधरि हिलि गेल छलहुँ। हमरासँ कोनो काज नहि भऽ रहल छल। रहि रहिकऽ पुरान बात स्मरण आबि रहल छल। ओ एकटा छोटसन गामसँ आएल प्रतिभाशाली आ महत्वाकांक्षी लड़की छलीह। क्याम्पसमे दोसर वर्ष पहुँचिते ओ बढ़िया धाक जमा लेने छलीह। क्याम्पसक पत्रिकामे सेहो लिखैत छलीह। हुनक दुस्साहस छल जे क्याम्पसक एक प्रोफेसरक गलत आचरणक विषयमे एकटा समाचार लिखि देने छलीह। तकर बाद ओ देखिते–देखिते हिरोइन बनि गेलीह। ओ पत्रिकामे पार्ट टाइम लिखए लगलीह। पुलिस अधिकारी

स्थानीय नेता आ सामाजिक कार्यकर्तामे हुनक पहिचान बनल। हम हुनकासँ जखन कहैत छलहुँ, 'चन्दा आगा बढ़बाक एतेक जल्दी किए अछि। पहिने पढाई तऽ पुरा कऽ लिअ।'

ओ बिहुँसि कऽ कहैत छलीह, 'हमरा लग रुकयकेँ लेल समय नहि अछि दीदी, एकहिटा जीवन भेटल अछि हमरा।'

महेश हुनक प्रेमी छलाह। हमरा पता छल जे चन्दा सेहो हुनकासँ प्रेम करैत छथि। मुदा बराबर हमरासँ कहैत छलीह, 'हमरा जीवनमे अभावसँ बहुत घृणा अछि। हम एहन लोकसँ विवाह करए चाहैत छी जे हमरा सुरक्षाक संगहि, एकटा बढ़िया जीवन दऽ सकए।' मुदा नहि जाइन किए हमरा तहिओ ओ बढ़िया लगैत छलीह।

क्याम्पसक अधिकांश लड़की हुनकासँ ईर्ष्या करैत छलीह। हमरा लगैत छल लड़कीकेँ प्राक्टिल होएब वा महत्वाकांक्षी होएब अपराध नहि अछि। हुनका अपना ढङ्गसँ जीबाक अधिकार अछि।

शायद एहिद्वारे हुनकासँ हमरा बनैत छल। हम बीए कएलाक बाद होस्टल छोड़ए लगलहुँ तऽ ओ बच्चा जेकाँ कानए लगलीह, 'दीदी अहाँ बिनु हम कोना रहब।'

हम हुनका बहुत सम्झौने छलहुँ। हम तऽ काठमाण्डूएमे रहब जखन मोन हएत तखन चलि आएब।'

शुरु–शुरुमे हमरा घर ओ बहुत अबैत छलीह। हुनके बातसँ पता चलल जे ओ नाबालिक लड़कीसँ वेश्यावृति कराबएबला कोनो गेंगक विषयमे लिखने छथि। ओहि समाचारक बहुत चर्चा भेल छल।

एकर बादे मन्त्रीसँ हुनक मित्रता भेल।

केशव हमरा कहलन्हि जे राजेन्द्र सुवेदी मन्त्रीजी स्वयं एहि काण्डक लेपेटामे आबि गेल छलथि। हुनकासँ भेटभेलाक बाद चन्दा स्वयं एहि समाचारपर काज करब बन्द कऽ देने छलीह।

महेश शायद केशवकेँ बतौने रहथि। ओहो चन्दा आ मन्त्रीजी संग बढ़ैत सम्बन्धसँ परेशान रहए लागल छलथि।

मुदा चन्दा हमरा किछु नहि कहने छलीह। जहिना-जहिना ओ चर्चित होइत गेलीह हुनका हमरा ओहिठाम आबए जाए कम होइत गेल। आब ई सभ सोचलासँ की फायदा ? जे अछिए नहि, ओकर स्मरणकेँ की पोस्टर्माटम करब ? चन्दाक हत्याक ठीक दोसर दिन पत्रिकामे समाचार आबि गेल- पत्रकार हत्याक आरोपी हुनक पूर्व प्रेमी महेश पकड़ाएल। हमर मोन नहि मानि रहल छल जे महेश चन्दाक हत्या कऽ सकैत छथि। तेसर दिन पुलिस हमरोसँ भेटए आएल। चन्दाक मोबाइल पर हमरो नामक मोबाइल नम्बर छल। पुलिस बुझए चाहैत छल हमर चन्दासँग की सम्बन्ध अछि ? हम कतेक दिन पहिने हुनकासँ भेटल छलहुँ ? जखन हमर मुहँसँ निकलल जे एक महिना पहिने बातचित भेल छल तऽ ई स्पष्टसँ कहि देलहुँ जे हुनका मोबाइलपर फोन आएलाक बाद ओ डेरा गेल छलीह। हम चन्दा आ महेशक विवाहक सम्बन्धमे सेहो कहलहुँ। हम पुलिसक अनुसन्धान अधिकृतकेँ जोड़ दऽ कऽ कहलहुँ महेश हत्या नहि कऽ सकैत छथि।'

ओ व्यङ्गसँ पुछलन्हि,'फेर के कऽ सकैत अछि ?'

'मन्त्री राजेन्द्र सुवेदी।' नहि जाइन कोना हमरा मुहँसँ निकलि गेल।

पुलिस सभ किछु हकबकाएल। फेर बाजल, 'अहाँकेँ बुझल नहि अछि अहाँक मित्र चन्दा आ महेश मिलि कऽ की कऽ रहल छलथि ? ओ अपन पत्रकार होबएकेँ फाइदा उठबैत उच्च अधिकारीसभसँग ब्लैकमेल करैत छलीह। मन्त्रीजी स्वयं हुनकर ब्लैकमैलिङ्ग शिकार भेल छलथि। एक हप्ता पहिने पैसाकेँ लऽ कऽ महेश आ चन्दामे झगड़ा भेल छल। भऽ सकैत अछि ओहि तामसमे महेश मारि देने हुए चन्दाकेँ ....।'

हमरासँ किछु बाजल नहि भेल।

केशव महेशसँ भेटबाक लेल हनुमान ढोका पुलिस कार्यालयमे सेहो गेल छलथि। बहुत दुःखीत छलाह महेश। ओ ईहो नहि कहि रहल छलाह जे चन्दाक हत्या नहि कएने छी। केशव बहुत सम्झौलन्हि तऽ ओ एतेधरि कहला, 'हम तऽ ओहि दिन मरि गेल छलहुँ जाहि दिन ओहि

महिलासँ प्रेम कएलहुँ ।'

महिनाभरि धरि पत्रिकामे चन्दा हत्या काण्डक समाचार पहिलसँ तेसर आ फेर सातम पृष्ठपर अबैत रहल । हम ध्यानसँ पढ़ैत छलहुँ । पत्रिका चन्दाकेँ एकटा अति महत्वकांक्षी, कुटिल आ चलाक पत्रकारक रुपमे प्रस्तुत कऽ रहल छल जे पैसा आ पाबरक लेल किछु कऽ सकैत छलीह ।

हम चिचिया–चिचिया कऽ कहए चाहि रहल छलहुँ जे जाहि चन्दाक विषयमे तोँ सभ बात कऽ रहल छँए ओ एहन नहि छलीह । हुनक भीतर हृदय छल । सभक लेल किछु करवाक ईच्छा छल । हमर छोट बहिन चन्दु छलीह ओ ।

एकटा टेलिभिजनमे राजेन्द्र सुवेदी मन्त्रीजीसँ टेलिफोन लाइब चलि रहल छल । हमहुँ अनायसे टेलिफोन लगा कऽ चन्दासँगक सम्बन्धक विषयमे पुछलहुँ । ओ अपन चेहरा पर खालीपन लबैत कहला,'के चन्दा ? हम एहि नामक कोनो पत्रकारकेँ नहि चिन्हैत छी आ नहि महिलोकेँ जनैत छी ....।'

हम स्तब्ध रहि गेलहुँ आँखिक कोरसँ नोर निकलि गेल इहे सजाय भेटल चन्दाकेँ मन्त्रीजीसँ ? हम ई बात केशवसँ नहि कहि सकैत छलहुँ । ओ डटता, 'अहाँ मन्त्री सँ की अपेक्षा कऽ सकैत छी सभक आगामे अपन सम्बन्ध स्वीकार करैथि ? मूर्ख छी अहाँ .....।'

दिन बीतैत जा रहल छल । मुदा चन्दा हमर मानसपटलसँ जाइए नहि रहल छलीह जखन कहिओ असगरे बैसैत छलहुँ हुनका विषयमे सोचए लगैत छलहुँ कोन तरहेँ ओ मरल हएती ? पूरा कण्ठधरि रेत देने छल, हत्याराकेँ तैयो चयन नहि भेटल तऽ पूरे सिक्सर हुनक देहमे उतारि देने छल । हम केशवसँ महेशक विषयमे पुछैत रहैत छलहुँ अचानक एक दिन केशव कहलन्हि जे महेश रिहा भऽ गेल । पूरे सम्भावना अछि चन्दा हत्या काण्डमे ओ निर्दोष भऽ जाइथि । हम चयनक श्वास लेलहुँ । हमरा लगैत छल महेश हत्यारा नहि भऽ सकैत अछि । मुदा केशव बहुत

रहस्यात्मक ढंगसँ आगा जोड़लन्हि, 'पता अछि हुनकर रिहाइ के करबौलन्हि ? ..मन्त्री जीकेँ कहला पर हुनकर कोनो कुटुम्ब। आइ काल्हि महेश मन्त्रीएजीकसंगे काज कऽ रहल छथि। सुनल तऽ ईहो जा रहल अछि जे मन्त्रीजी महेशकेँ अनाम नगरमे एकटा बड़का घर देलन्हि अछि।'

हमरा बहुत दुःख भेल ई सुनि कऽ आओरो जे महेश विवाह कऽ रहल छथि आ हुनक विवाह मन्त्रीएजी करा रहल छथि।

हमरा कहबाक लेल किछु नहि रहि गेल छल यदि चन्दा जीबैत रहितथि तऽ हुनकेसँ कहितहुँ तो अपने लोकक हाथे ठकाएल छएँ। अपन महत्वाकांक्षा आ महेशकेँसँग सुखी रहबाक लेल तोँ जे घातक कदम उठौने छलएँ ओहिमे स्वयं होम भऽ गेलएँ। जे लोक तोरा प्रयोग कएलकहुँ, ओ आइ बाघ बनि कऽ घुमि रहल छौ। तोरा एना करबाक की आवश्यकता छलौक चन्दा ....।

मुदा ओ तऽ नहि रहलीह हमर बात सुनबाक लेल।

अनार

दुलरी गामसँ शहर आबि गेलीह । कहल जाए तऽ हुनका आनि देल गेल । मुदा हुनका नहि शहर बढ़िया लागल, नहि राम दयाल, आ नहि उच्च छहरदेबालीसँ घेराएल बिस्तीर्ण जमीन ।

शहरक बजनाई भुकनाई, तौर तरिका हुनका बुझएमे आबिए नहि रहल छल । स्वयंसँ १० बर्षक बड़का कारी लम्बा चौडा राम दयालके सामीप्यमे कोनो रोमाञ्च नहि भेटि रहल छलन्हि । सदिकाल कानबाक मोन करैन्हि । माय बाप जीबित रहितथि तऽ सोन जेहन दुलरीकेँ पिण्ड छोड़ाबए सन भावसँ नहि विआहल जाइत, जेना पित्ती पितिआइन विवाह कऽ देलन्हि ।

पित्ती पितिआइनकेँ डियूटी बजाबएसँ अवश्य छुट्टी भेटल मुदा ई छहर देबाली माने नख्खु जेलक सजाय छल । निर्जन-नीरब ।

एक दिस घरक मालिकक बड़काटा दूमहला घर, आ दोसर कात खपड़ाबला जतए दुलरीकेँ राम दयालसंग ७ वचन निमाहिक छैन्हि । बाँकी खाली स्थानमे लान, फूल, तरकारी, करोटन, बोनसाइन । राम दयाल पता नहि कोना रहैत छथि । बीना ककरोसँ बात कएने कहिओ मोनो नहि उबिआइ छन्हि ? पूछी तऽ बीना मतलबके बात करैत छथि, ‘हम गाछ बृक्षसँ बात करैत छी । एतए बहुत आनन्द अबैत अछि । दुलरी आउ हमरा लग बैसू, खुर्पी पकरु आ सँग–सँग तरकारी लगाबए लेल क्यारी तैयार करु ।’

दुलरीकेँ इन्ट्रेस्ट राम दयालमे नहि तऽ क्यारी बनाबएमे सेहो नहि । कहए लेल तऽ हावा महलसन, बड़का घरमे तीन लोक -साहेब, दीदी

आ निशान्त नामक छोट बच्चा रहैत छथि मुदा तीनू प्राणी कतए नहि कतए हेराएल रहैत छथि ।

साहेब दिनभरि अपन स:मिलमे । दीदी घरक भीतर । निशान्तकेँ लऽ कऽ साँझमे अवश्य फूल सभ देखए अबैत छथि । मुदा दुलरीसँ बात करब अपन सम्मानक हिसाबसँ नहि मानैत छथि । राम दयालसँ सेहो मात्र काजक बात करैत छथि, दू चारिटा वाक्यबला मात्र, राम दयाल दीदीक घरक भीतर कहिओ नहि जाइत छथि । दुलरीकेँ गहूँम धोअ, चाउर बीछऽ वा सर्फसँ बोरल चादरि वा पर्दाकेँ खिचबाक लेल बजाओल जाइत अछि ।

कुल मिला कऽ नख्खु जेलक सजाय ।

अचानक देखैत छथि खपड़ा घर लग एकटा अनारक गाछ, लहलहा रहल अछि । विदा होइत चौमासक समय अपन अस्तित्वक घोषणा करैत अनारक देखिते दुलरीक भीतर लहरि दौड़ि गेल । अनारसँ हुनकर पुरान सम्बन्ध अछि ।

नैहरमे बीचे आँगनमे अनारक बड़का गाछ अछि । खूब फड़ैत अछि । दाना उज्जर आ गुलाबी होइत अछि । ओना ओहन लाल नहि होइत अछि जेहन निशान्त लानमे बैसि कऽ खाइत छथि ।

मोती जेकाँ दाना देखि कऽ दुलरीक मुहँमे पानि भरि जाइत छैन्हि । यदि ई गाछ लाल दानाबला खूब फल दिए तऽ नख्खु जेलमे हृदय लगाबएकेँ कारण भेटि सकैत अछि ।

दुलरी अनार गाछक जरिकेँ चारु कात कोरिया कऽ ओहिमे पानि भरि दैत छथि ।

झुमैत अंगौठी मोड़ करैत चिक्कन चमकैत पातबला गाछ गतीसँ बढ़ि रहल अछि । लाल फूल लागल जे मुरझा कऽ खसि पड़ल ।

निराश भऽ कऽ ओ राम दयालसँ कहलीह, 'अनार नहि फरत की ?'

'गाछकेँ तऽ बड़का होबए दिऔक ।'

अनारक ताजगीसँ संगत करैत दुलरीकेँ सभ किछु बढ़िया लागए लागल । जहिआसँ गर्भवती भेलीह, अनारक पातक सुगन्ध बहुत बढ़िया

लगैत छन्हि । गाछक लग जा लम्बा श्वाससँ सुगन्धकेँ फेफरामे भरि कऽ अनारमय भऽ जाइत छथि ।

गाछ बढ़ि रहल अछि , इम्हर गर्भमे कोनो आकार लऽ रहल अछि । दुलरी सर्तकता अपना रहल छथि । शिशु सकुशल अपन गर्भ काल पूरा करए आ अनारमे खूब फल लगए । पहिल फल जानकी जीकेँ चढ़ाएब । दोसर दीदीकेँ देबैक, मालकिन छथि । आब तऽ अपना मानए लागल छथि । हुनकासँ जे काज करबैत छथि, मेहनतनामा दैत छथि । राम दयालकेँ ठीक पहिल गतेकऽ तलब भेटि जाइत अछि । रहबाक लेल बढ़िया खपड़ाक घर देने छथि । अफरादी पानि । तरकारी । हावा, प्रकाश, ठण्डा एतेक सुख आ खुल्ला वातावरण अछि कि कहिओ-कहिओ स्वयंकेँ मलिकानि होबएके अभिमान होबए लगैत छैन्हि ।

आ ई अनार ?

जेना किओ अपने हुए । बढ़िया कनोजरि छोड़ने अछि । जखन कि गमलामे बहुत तकनीक लगा कऽ तैयार कएल गेल अछि बोन्साइ ?...देखि कऽ दुलरीकेँ बहुत हँसी अबैत अछि । जखन राम दयाल कहैत छथि एहि घरक रौनक बोन्साइसँ अछि । शहर आ दीदीसँ जे लोक भेटए अबैत अछि बोन्साइ अवश्य देखैत छथि, तखन दुलरी चकित भऽ जाइत छथि, 'एहिमे कोनो रौनक नहि अछि, जे हमर अनारमे अछि ।'

राम दयाल महिलाक कौतुक पर लुटि जाइत छथि,' एहिमे की खराबी छैक ?'

'एहन लगैत अछि जेहन सुखाएल रोगबला बच्चा । अहाँ एकरा देखभाल नहि करैत छियैक तखन तऽ ई गाछ नहि बढ़ि रहल अछि ।'

ई कनोजरि नहि, गाछ अछि एकरा बोन्साइ कहैत छैक ।'

'गाछ एहन छोट होइत अछि ?' एकरा छोट बनाबएक लेल बहुत मेहनति करैत छी । दीदी कहैत छथि बहुत बढ़िया बोन्साइ बनबैत छी । ई बरक गाछ देखिऔ १० वर्ष पुरान अछि । दीदी बरिसाइत पावनिमे एकरे पूजा करैत छथि ।'

'हे भगवती एकर पूजा ? ई असली नहि लगैत अछि, जेना जादुगर

अपन जादू लगा कऽ छोट बना देने हुए ।'

'जादू नहि छोट बनएबाक बिधि होइत अछि । नेबो, आम ....सभ बोन्साइ अछि ।

'हे भगवती.....।'

दुलरी खुलि कऽ हँसली । हँसी परिभाषित करैत छल अस्वीकार करैत- करैत राम दयालकेँ स्वीकार कऽ लेने छथि ।

'बुझल अछि एकर मोल हजार रुपैयाँ अछि । अपन ज्ञान बढ़ाउ, शहरक नियम कानून सीखू ।'

दुलरी एहन शहरक नियम कानून नहि सिखती जतए बरक गाछ प्लास्टिकक गमलामे बढ़ैत हुए । जाहिमे झुलएकेँ लेल हवाइ जरि नहि होइत अछि, फल नहि लगैत अछि, छाँह नहि भेटैत अछि । अनार फल, छाँह, हावा ठण्ड सभ देत ।

'हमर अनारकेँ बोन्साइन नहि बना देब ।'

'ठीक छै-ठीक छै ।'

दुलरी एकटा बच्चीकेँ जन्म देली । अनार सन लाल, गोल सुन्दर ।

दुलरीकेँ लगैत छन्हि बच्चाक शरीरमे अनारक सुगन्ध भड़ल अछि ।

प्रसूतिमे ओ अनार दिस ध्यान नहि दऽ सकलीह । स्वस्थ भेलीह तऽ देखलीह गाछकेँ कतेको दिनसँ पानि नहि भेटल अछि । लागल शान्त उदास ठाढ़ गाछ उल्हन दऽ रहल अछि । बच्चा की भेल जे हम उपेक्षित होबए लगलहुँ ।

दुलरी गाछमे दू तीन बाल्टिन पानि राखि देलीह । पूरा पानि माटि सोखि लेलक । गाछ प्यासल छल । पानि मिश्रित अनारक गमक फेफरामे पहुँचिते प्रसवसँ पीड़ाएल दुलरीक शरीरमे फुर्ती चलि आएल ।

अनारक कनोजरि खपड़ा घरसँ उच भऽ गेल । दुलरी माथ उठा कऽ कनोजरिकेँ एहि गौरवसँ देखैत छथि जेना कोनो माय अपन शरीरसँ उच भेल पुत्रकेँ निहारैत अछि ।

फूल लगैत अछि मुरझा कऽ खसैत अछि । दुलरीकेँ आस टुटए लगैत छैन्हि । ई फड़त । जखन फड़ल, दुलरीकेँ विश्वास नहि भेलन्हि फल

गुप्त रुपसँ कोना लागि गेल । ई लीला भगवतीए जानैथि । छोटसन बल आकारकेँ हरियर रंगसन सुन्दर चमकदार फल राम दयालकेँ सूचना देलीह । साँझमे फूल देखए दीदी अएलीह तखन ओ कहलीह, 'दीदी अनारमे फल देलक अछि ।'

दीदी देखलन्हि दुलरीकेँ मुहँमे गजबकेँ तेज भड़ल छल ।

'फैरि गेल अहाँक गाछ ?'

अहाँक गाछ घोषित कएल जाएत दुलरीकेँ बढ़िया लागल ।'

आउ ने दीदी देखिओ ने ।'

दीदी गरदनिकेँ इम्हर उम्हर झुका कऽ फल देखए लगलीह ।

दुलरी सर्तक कएलन्हि, 'दीदी आंगुर नहि देखाउ फल सड़ि जाएत ।'

'सड़बे करत दू टा तऽ खसि पड़ल अछि ।'

दुलरी उत्साहमे माटि पर खसल फलकेँ नहि देखि सकल छलीह । ओ दुनू फलकेँ उठा लेलीह, 'कोना खसि पड़ल दीदी ?'

'कमजोर फल खसि पड़ैत अछि जे बचल अछि ओहो खसि पड़त, नहि खसल तैयो बड़का नहि हएत ओ स्वाद सेहो नहि हएत जे बजारमे भेटएबाला अनारमे होइत अछि । ओ बाहरसँ मंगाओल जाइत अछि । खूब लाल आ मीठ होइत अछि अपना इम्हरकेँ जलवायु अनारक लेल बढ़िया नहि होइत अछि । फल छोट आ बेस्वाद होइत अछि ।'

दीदीकेँ विश्लेषण दुलरीक बौद्धिक क्षमतासँ बेसी छल ।

'हम एतेक सेवा कएलहुँ अछि दीदी फल बढ़बे करत मीठ सेहो हएत सेवा व्यर्थ नहि जाइत अछि ।

दीदीकेँ दुलरीक भावनासँ प्रयोजन नहि । आश्चर्य अवश्य अछि अपन व्यस्तता आ लापरवाहीमे नहि देखि पेलीह आ अनार एना फैड़ि गेल ।

अहाँक सेवा एकरा राक्षस जकाँ बना देलक अछि । दुलरी आइ काल्हि एतेक बड़का गाछ किओ नहि लगबैत अछि । फल कम दैत अछि, स्थान अधिक घेरैत अछि । छोट कलमी गाछ बढ़िया होइत अछि इम्हर धात्रीक आ आमक गाछ देखू छोट अछि आ बढ़िया फल दैत अछि । राम

दयालसँ कहब एहि अनारकेँ काटि दिए। फुलबारीमे जंगल बना देने अछि।'

दुलरीकेँ बहुत दुःख लागल, 'दीदी हरियर गाछ कटलासँ पाप लगैत अछि। एकटा कोन्हमे अछि ककरो किछु नहि बिगाड़ैत अछि।'

'दुलरी अहाँ बताह तऽ नहि छी। ई अहाँक गाम नहि, शहर अछि, ई बुझल करु।'

दुलरी सुरक्षा बढा देलीह। दीदी नहि बुझैत छथि एहि गाछसँ हमर सम्बन्ध भऽ गेल अछि। सम्बन्ध काटि कऽ नहि फेकल जा सकैत अछि।

भगवती एकर फल खूब बढ़य, लाल आ हिलसगर हुए। तखन ओ दीदीकेँ सहमत कऽ लेतीह एतेक मीठ फल दऽ रहल अछि नहि कटबाउ।

इम्हर बच्चा बढ़ि रहल अछि ओम्हर फल। दुलरीकेँ दू टा रचना।

कृतित्व। एक ओ जन्म देने छथि दोसरकेँ पोसने।

जखन तखन दुलरी अनार लग घुमैत रहैत छथि।

हे भगवती ! सुगा आ बगड़ा एहि लगपासमे घूमए लगैत अछि। भोरमे सुगा अबैत अछि बेरियामे बगड़ा। फल कतैरि कऽ बेकार कऽ देत। दुलरी पातर सन्ठी लऽ कऽ शत्रुकेँ भगवैत छथि। जखन आंगनमे चारि पाँचटा लड़कासँग क्रिकेट खेलैत निशान्तक गेन्द अनारक डारिसँ टकराइत अछि, दुलरीक आत्मा कुहि उठैत छन्हि। बलसँ घरक खपड़ा फुटि जाइत अछि। फल तऽ कमजोर अछि।

दूटा लड़कासँग फल उठौने आएल निशान्तकेँ दुलरी चेतावनी देब अपरिहार्य बुझलीह, 'बाबू एतए गेन्द नहि लाउ। दू चारिटा फल अछि टुटि जाएत।'

निशान्तक लेल बढ़िया सूचना,' फल ? हँ ई तऽ अनार अछि।'

निशान्त कुदि-कुदि कऽ लड़का सभसँग देखए लगैत अछि।

दुलरी अभिमानमे छथि। निशान्तकेँ नव चीज देखौलन्हि अछि।

'बाबू, एखन पाकल नहि अछि। पाकि जाएत तऽ एकटा भगवतीकेँ चढाएब। एकटा अहूँकेँ देब।'

निशान्त बाजल,' गाछसँ तोड़ि कऽ फल खाएमे बहुत मजा अबैत

अछि दुलरी । एक बेर हम पापाकसँग जंगल गेल छलहुँ ओतएसँ हम खूब अनार तोड़ि कऽ अनने छलहुँ ।'

दोसर लड़का बाजल,'हँ हम सभ झा अंकलके फुलबारीसँ आम चोराकऽ खाइत छी ।'

ई अलग चिन्ता ।

दुलरी नहि सोचने छलीह जे चोरी भऽ सकैत अछि । गाममे उपद्रवी लड़कीकें संग फुदी लालक फूलबारीसँ आम आ लताम चोरबैत छलथि । रखबारकें हल्ला कएला पर भागि जाइत छलीह । फेर सुरक्षित दूरी पर जा जोड़सँ चिचिआइथि, 'दू चारि पैसाक आम लताम अछि बाबा अहाँक बैंक थोरहे लुटलहुँ अछि ।'

आइ ज्ञान भेटल । बात मूल्यकें नहि, अधिकार आ लगाबकें अछि । अनार चोरी भऽ जाएत तऽ हुनकर हृदय टुटि जाएत ।

एहि अनारक गाछेक कारण नहि पसिन पति राम दयालकेंसँग मोन मनोने छलीह ।

अनार बचले अछि कतेक ? कुल तीन सुरक्षा करए पड़त ।

पुरान सूती साड़ीकें फाइर कऽ ओ फलकें पोटरी बना देलीह । फल नूका गेल अछि । नहि सुगा बगड़ा खएत आ नहि उदण्ड लड़का चोराएत । ....हे भगवती कतेक सुन्दर अनार अछि ।

सम्भावित लाल रंग आ मधुर रस भड़ल दानाक कल्पना कऽ दुलरी थिरकि उठैत छथि ।

निशान्त अनारकें देखबाक लेल बराबर आबए लागल ।

पोटरीकें देखि बहुत जोड़सँ हँसल, 'दुलरी अहाँ तऽ फलकें गन्जी पेन्ट पहिरा देलिए अछि ।'

' चिड़ै सभसँ बचाबए लेल । आ हँ अहाँ एखन नहि तोड़ि लेब पाकत तऽ स्वाद आओत । '

चोरा नहि लेब, नहि कहि सकलीह ।

' एखन तऽ काँचे अछि नहि, काँच अनार केहने दून लगैत अछि ।'

'कोना बुझैत छियैक ?'

'जंगलसँ काँच अनार तोड़ि कऽ अनने छलहुँ सभ फेकए पड़ल ।'

मुदा कनी डरा देब बढ़िया रहत । 'काँच फल तोरु वा काँच गाछ काटलासँ पाप लगैत अछि । '

'बुझल अछि । हमर बुकमे लिखल अछि गाछ बृक्ष सेहो श्वास लैत अछि जेना हमसभ लैत छी । अपन भोजन बनबैत अछि पानि पिबैत अछि जेना हमसभ । हावा आ पानि नहि भेटल तऽ गाछ सुखा जाइत अछि । हम अनारक ई डारि तोड़ि देब तऽ ई सुखा जाइत फेर समाप्त भऽ जाएत बुझल अछि । किए कि एकरा भोजनपानी नहि भेटत ।'

निशान्त विज्ञानकें एहि प्रकारे सरल रुपमे बुझौलन्हि कि दुलरी जेहन बुद्धु सेहो बुझि जाए ।

दुलरी बजलीह,' काँच गाछ कटलासँ पाप लगैत अछि से तऽ बुझल छल मुदा गाछ हमरा सभ जेकाँ श्वास लैत अछि आ खाइ पिबैत अछि से नहि बुझल छल ।'

'अहाँकें बुझल अछि काँच गाछक डारि कटलासँ गाछे नष्ट भऽ जाइत अछि तकरबादो लकड़ीकें काटि कऽ अहाँकें आँगनमे ढेर लगाओल जाइत अछि ? पाप लागत ।'

निशान्त कन्हा उचकाकऽ हँसल, 'दुलरी अहाँक भेजामे कोनो बढ़िया बात नहि आबि सकत ओतऽ हमर बिजनेस अछि सःमिलमे पापा कतेक मेहनत करैत छथि ।'

फलकें हरियर रंगमे ललछहन सिन्दुरबला रंग आबए लागल । बहुत बेमौका पर काका काकीक आमन्त्रण आएल । छोटका बेटाक विवाहमे आवएकें अछि । फलकें मोह अछि मुदा नैहरिकें मोह अलग होइत अछि । भलहि ओतए माता पिता जीबैथि नहि होइथि । भलेहि काका काकीकें डियूटी बजाबए पड़ैत छल । राम दयाल तऽ दू दिनमे चलि अएलथि । ओ दू दिनसँ बेसी छुट्टी लैथि तऽ दीदीकें लगैत छल फूलबारीक बेइज्जति भऽ सकैत अछि ।

दुलरी एक सप्ताहक बाद अएलीह । काकीक गृहस्थीमे ओ कोल्हुकें वरद बनल छलीह । घुमि कऽ अएलीह तऽ कुल बचल तीनू फलमे

एकौटा नहि अछि। हावा बिहाड़िसँ खसल की चोरी भऽ गेल ? ठीकसँ पकबो नहि कएल छल।

दुलरीकेँ लागल हुनकर मजगूत पकड़िसँ छुटि कऽ बच्चा पाथरपर जा कऽ टकरा गेल हुए आ ओकरा अंग भंग भऽ गेल हुए। माटिपर छितराएल छिलका, सफेद अपुष्ट दाना पुष्टि कऽ रहल छल। ओकरा अक्रामक तरीकासँ तोड़ल आ नोचल गेल अछि। फल सभसँ उपरका डारिपर छल। ओकरा तोरए लेल ओकरा झुकाओल गेल हएत। फलबाला डारिकेँ निर्ममतासँ लिबाएल गेल हएत।

महाविनाश ! दुलरीकेँ हृदयक धड़कन तेज भऽ रहल छल। आहट पाबि कऽ खपड़ा घरमे सुस्ता रहल रामदयाल बाहर निकलला, 'आबि गेलहुँ ? '

'फलकेँ तोड़लक ?'

'भीतर आउ ने।'

'केँ तोड़लक ? अहाँ की कऽ रहल छलहुँ ?'

'भीतर आउ ने ?'

'केँ तोड़लक ?' एतेक उच्च पर चढ़ि कऽ बहरिया लोक अवश्य नहि तोड़ने हएत। बाबू तोड़लक की ?'

'हँ। दू चारिटा लड़का सभसंग बाबू तोड़ि लेलन्हि। हम मैदान गेल छलहुँ फिर्ता अएलहुँ तऽ बाबू अनार छिल रहल छलथि।'

दुलरीकेँ आँखिमे नोर चलि आएल। निशान्तकेँ बुझल छल डारि तोड़लासँ गाछ सुखा जाइत अछि। बुझल छल कच्चा अनारक स्वाद बढ़िया नहि होइत अछि। दीदीकेँ एतेक लिहाज करैत छलीह जे बीना बजेलोपर अस्थिरेसँ जाइत छलीह। बेटी के देखैत रहब कहैत सीधे चलि गेलीह।

राम दयाल रोकलन्हि। नहि रुकली दुलरी, नोराएल आँखिए बढ़ि गेलीह। दीदी भेद बुझि गेलीह,'आउ दुलरी।'

'दीदी हमर अनार किओ तोड़ि लेलक अछि।'

निशान्त अकबका गेल मुदा बाजल, 'एतेक बड़का छए तैयो दुलरी

तो बच्चा जकाँ कनैत छएँ ।'

'बाबू हमर फल.....'

अपराध नुकाबए लेल अक्रामक होबए पड़ैत अछि, 'शिट मैन । छोट सन बात अछि ।'

' नहि बाबू .....'

'कतेककेँ छल....अनार ५० रुपैयाँ ? ६० रुपैयाँ ? मम्मी तोरा पैसा द९ देतौक ।' निशान्त पुष्टि क९ देलन्हि फल ओहे तोड़ने छथि ।

'हमर फल काँच छल बाबू ।'

निशान्त आओर अक्रामक भेल,' तोहर फल ? जमीन हमर अछि एहिद्वारे गाछो हमरे । फलो हमरे । हम फल तोरु वा फेकू पुछएबाली तो केँ छएँ ? '

दुलरीकेँ आँखिसँ भट–भट नोर खसए लागल । दीदी निशान्तकेँ रोकलीह,' बाबू चुप रहूँ । दुलरी बाबू बच्चा अछि कतबो मना करैत छियैक बच्चा कहाँ मानए बला छैक ? फ्रिजमे अनार राखल छैक आइए बजारसँ मंगेलहुँ अछि ल९ जाउ बच्चोकेँ खुआएब ।'

दीदी फ्रिजसँ तीनटा बड़का अनार निकालली । बड़का लाल अनार एकटा अनारकेँ चरकल फलक भीतरसँ लाल रस भड़ल दाना झाँकि रहल छल ।

'नहि दीदी,'दुलरी पाछू हँटलीह ।

'ल९ लिअ अहाँक अनारमे कोनो स्वाद नहि छल हएत ।'

'नहि दीदी ।'

कुरुपे सही, अपन बच्चा कोनो माय अन्य सुन्दर बच्चासँ नहि बदलैत अछि । सर्वनाशक दर्द ल९ दुलरी अपन घरमे चलि अएलीह ।

निशान्तक बात पाछू क९ रहल छल-जमीन हमर, गाछ हमर ....हम फल तोरु वा फेकू ....।

जमीन निशान्तक अछि मुदा गाछ ? अनार ? दुलरी ई बात कतहुँ मानए लेल तैयार नहि छलीह, अनार हुनकर अतिरिक्त ककरो अछि ?

बोझ

स्वेता औंघाएले अवस्थामे देखलन्हि माँ अपन नाकमे लागल नलीकेँ खिचि कऽ बाहर निकालि देलक अछि। ई देखिते स्वेताकेँ भऽक टुटि गेलन्हि। हुनका तऽ इहो बढ़िया जेकाँ स्मरण नहि छन्हि जे ओ कखनसँ माँकेँ तकियापर माथ राखि कऽ सुति रहल छलीह। रातिक करीब ३ बाजि रहल छल हएत, भैया स्वेताक बाहिपर हाथ थप थपबैत उठौलन्हि आ कहए लगला, 'आब हमरा निन्न आबि रहल अछि, तो कनी उठि कऽ माँकेँ देखि।'

'ठीक छैक भैया, अहाँ हमरा पहिनेसँ किए नहि जगा देलहुँ ?' ई कहैत स्वेता माँकेँ माथ दिस राखल प्लाष्टिकक स्टुलपर बैसि रहलीह। भैया आगा कहब जारी रखलन्हि, 'चाह पिबए, थरमसमे राखल छैक, चाह पिलासँ तोहर निन्द खुलि जएतौक।'

'नहि रहए दिऔक, हमरा पर्समे चुइंगम अछि। हम चिबऽबैत रहब अहाँ निश्चिन्त भऽ सुति रहूँ।'

कतहुँ निन्न नहि आबि जाए, एहि डरसँ स्वेता पर्समेसँ चुइंगम निकालि लेली आ धीरे–धीरे ओकरा चिबाबए लगलीह।

माँ बेर–बेर नाकमे लागल नलीकेँ बाहर खिचएकेँ प्रयास कऽ रहल छल, एहिद्वारे हुनका रातिभरि जागिकऽ माँकेँ निगरानी करबाक छलन्हि। लगातार बीतल चारि दिनसँ भैया जागि रहल छला। एहिद्वारे स्वेता कहलीह, 'हम सभ एकटा काज करैत छी, सभ गोटे मिल कऽ माँकेँ ओगरबाही करब।'

ओसभ भोजन कएलाक बाद १० बजेकेँ आसपास अस्पताल आबि गेल

छलीह ।

नजदिकक कोनो दोकानसँ भैया स्वेताक लेल चुइंगम आ रजनीगन्धा गुटखा रातिक जागरणमे सहयोगी चीजक नामपर किन लेने छलथि आ कहए लगला, 'तो सुति रह, हम तोरा २ बजे उठा देबौक ।'

मुदा भैया २ बजेकें स्थानपर हुनका ३ बजे जगौला । शुरुएसँ भैया उदार प्रबृतिक मनुष्य छथि । ओ अवश्य सोचने हएता बेचारी स्वेता १ घण्टा आओर बेसी सुति रहए । एहि प्रकारे स्वेताकेँ रातिमे ३ बजेसँ भोर ५ बजेधरि अर्थात मात्र २ घण्टाकेँ दायित्व निर्बाह करबाक छल । मुदा इहो २ घण्टा ओ बढ़िया जेकाँ नहि जागि सकलीह ।

ओ स्वयंकेँ भीतरे–भीतर बहुत दोषी अनुभव कऽ रहल छलीह । ओ सोचि रहल छलीह, एहि समय भैयाकेँ उठाएब उचित हएत की ? माँ अपन नाकमे लागल नलीकेँ खिच कऽ बाहर निकालि देलक अछि । भैया की कहता, तो बढ़िया जेकाँ २ घण्टाक लेल सेहो माँकेँ नहि सम्हारि सकलएँ । भोरमे जखन दोसर लोककेँ एहि बिषयमे पता चलत तऽ ओ सभ की सोचता ? ककरो मुहँ पर पट्टी नहि बान्हल जा सकैया । ओ सभ कहत अहाँसभकेँ सुतबाक चलते माँ एना कएली । अहाँसभ सहीमे बहुत लापरबाह छी ?

स्वेता मोने–मोन सोचलीह, चाहे किछु भऽ जाउक कोनो असर नहि हएत । मुदा वर्तमान हालतमे की करबाक चाही, एहि बातक लेल चिन्तित छलीह कि नर्सकेँ डियूटी रुमसँ बजाओल जाए ? की एखन नर्सकेँ बजौलासँ ओ आओत ... । एहि नलीकेँ माध्यमसँ माँकेँ दुध पिआओल जाइत अछि ।

ओ अपन मोनक शान्तिक लेल अस्पतालक केबिनमे भर्ती करौने छलीह, वार्ड राउण्डमे आबएबाला डाक्टरकेँ कनिको ध्यान नहि रहैत छल, केबिनमे कोनो गम्भीर रोगी भर्ना भेल अछि ।

वार्ड राउण्ड समाप्त भेलाक बाद डाक्टरकेँ आगा पाछू घूमि कऽ अनुनय बिनय कएलाक बाद ओ माँकें देखए अबैत छलाह ।

प्रत्येक दिन डाक्टर अबैत छला आ दबाई बदलि कऽ चलि जाइत

छलथि, मुदा हुनको सही मानेमे रोगीक बेमारीक पता नहि चलि रहल छल ।

हृदयक धड़कन ठीक अछि, फेफरा सुचारु रुपसँ काज कऽ रहल अछि । किडनी सही ढंग सँ काज कऽ रहल अछि तखन एना किए ? बहुत दबाई देला तथा सुई लगेलाक बादो नहि रोगी उठि कऽ ठाढ़ भऽ रहल छल आ नहि बातचित कऽ पाबि रहल छल । एहनो नहि कि लकबाक कोनो लक्षण देखाई दऽ रहल छल ।

पाएरकेँ तरबामे गुदगुदी लगौलासँ ओ पाएर हिला रहल छल ।

ओकर शरीरक चमरी ढिल भऽ गेल छल, कंकाल जेकाँ देखाई दऽ रहल छल । डाक्टरक अनुसार ओकरा डिहाड्रेशन भऽ गेल अछि कारण कतेक दिनसँ ओ भोजन नहि कएने छल । ओकर पूरे शरीरक संज्ञा शुन्य भऽ गेल छल । बीतल ३/४ दिनसँ माँकेँ शरीरमे मात्र पानि चढ़ाओल जा रहल छल ।

कोनो परिवर्तन देखाई नहि दऽ रहल छल । डाक्टर माँकें लेल प्रत्येक २ दिन पर खुनकेँ एकटा बोतल चढाबएकेँ सुझाब देलन्हि । माँकेँ खुनमे हिमोग्लोबिनक मात्रा बहुत कम भऽ गेल छल ।

एहि कारणसँ डाक्टर माँकेँ नाकमे रॉयल ट्यूब लगा देने छल । जाहिकेँ माध्यमसँ दुध आ हर्लिक्सक किछु मात्रा खुआओल जा सकए । पता नहि कोना, माँ ओ नलीकेँ खिच कऽ बाहर निकालि देलक । भऽ सकैत अछि जहिना हुनका कनिक औँघी लागल हएत, ओहि समय माँ ओ घटना कएने हएत ।

माँ आओर ठीक भऽ जाएत घरक ओ रुमसँ दोसर रुम घूमत, ओ उठि कऽ बैसि सकत एहि बातपर स्वेताकेँ कनिको विश्वासे नहि भऽ रहल छन्हि । हुनका लागि रहल छलन्हि सभ लोक ठीक कहि रहल छल जे माँकें मात्र हुनका आबएकेँ प्रतीक्षा छल । दिनप्रतिदिन माँकें अवस्था खराब होइत जा रहल अछि । नजदिकमे रहएबला कर कुटमैतासभ माँकेँ देखि कऽ चलि जाइत छलथि । स्वेते एकटा एहन भाग्यहीन बेटी छलीह जे माँकें २ सालसँ नहि भेटल छलीह ।

सहीमे स्वेता जहिना घर पहुँचलीह ओहिना माँकें मोन खराब होएब शुरु भेल। मोन खराब एहन भेल जे ओकरा अस्पतालमे भर्ती कराबए पड़ल। मानु ओकर आओर कोनो इच्छा बचले नहि छल।

ओ अपना सभ बच्चाकें आँखिक आगा देखि लेबए चाहैत छल। आब ओ संसारिक बन्धनसँ मुक्ति पाबि कऽ शान्तिसँग अपन अन्तिम गन्तब्य स्थानकें प्रवेश कऽ पएती।

२ साल पहिने जखन स्वेता अपन माँसँ भेटए आएल छलीह, ओहि समय ओ माँकें व्यवहारमे भऽ रहल अस्वभाविक परिवर्तनके देखने छलीह।

तहिएसँ हुनका ई अनुभव भऽ गेल छल, माँ बहुत दिनधरि नहि जीत। ओहि घटनाक २ सालक बाद ओ माँकें देखए आएल छलीह। मोनमे कतेको बेर माँकें देखबाक ईच्छा भेल छलन्हि मुदा घर गृहस्थीक माया जालमे फँसिकऽ नहि आएली।

हुनका स्मरण आएल जखन ओ आएल छलीह, तखन ओहि समय छोटकी बहिनक विवाहक बात चलि रहल छल।

ओ समय बहिनकें देखबाक लेल ओकर ननैदि आ नन्दोसि आएल छल। ओहि समय स्वेता माँकें अस्वभाविक व्यवहारकें नजरिसँ देखने छलीह। जखन ओ बहिनक ननैदि नन्दोसिकें बेर–बेर पुछैत छल, 'की अही समधिन छी।'

एकेटा बात रट लगौने छल, स्वेताकें माँक एहि व्यवहारपर लाज भऽ रहल छल।

ओ सोचि रहल छलीह की पाहुनसभ की सोचता ? कतहुँ माँकें कारणसँ बहिनक विवाह नहि टुटि जाए। एहि बातकें लऽ घरक सभ लोक डेरा गेल छल।

जखन ओ सभ चलि गेलीह तऽ स्वेता माँसँ पुछने छलीह,' एना किए पुछि रहल छलही ?'

माँ सहज भावसँ बाजल, 'एहन की कहि देलहुँ हम ?'

'समधिन नहि कहि रहल छलही ?'

निर्बिकार भऽ कऽ माँ किछु बाजल, फेर चुप भऽ गेल ।

स्वेताके मोनमे भेलन्हि, शायद माँकेँ आँखि कमजोर भऽ गेल अछि एहि द्वारे चश्मा बदलि देल जाए नहि तऽ अपरेशन कराबए पड़त। माँकें बातचितसँ एना लागि रहल छल जे किछु समय पहिनेकेँ सभ अप्रसांगिक बातकेँ पूरापूर बिसरि गेल अछि। शायद इहे घटना छल जे ओकर शारीरिक आ मानसिक अस्वास्थ्यता दिस संकेत कऽ रहल छल ।

रातिमे स्वेता अपन पापासँ कहलीह, 'पापा माँकेँ आँखिक अपरेशन कराएब अति आवश्यक अछि। बीना मतलबकेँ चश्मा ओ पहिरने अछि। जखनधरि ओ आँखि फारि–फारि कऽ नहि देखि लैत अछि, तखनधरि ओ ककरो नहि चिन्हैत अछि।'

पापा स्वेताक एहि बातकेँ गम्भीरतासँ नहि लेलन्हि आ कहए लगला, 'कतेक दिनधरि ई जीत जे हिनका आँखिक अपरेशन कराओल जाए।'

एखनधरि स्वेता कहिओ पापा आगा मुहँ नहि खोलने छलीह। मुदा एकटा छोटका अपरेशनक लेल पापा राजी नहि भेल छलाह ।

एहि बातकेँ ओ बुझि नहि पाबि रहल छलीह। हुनका लागि रहल छल शायद पापा डेरा रहल हएता कि कतहुं माँकेँ आँखि पूरापूर खराब नहि भऽ जाए वा फेर माँकेँ शारीरिक कष्ट होइत देखि कऽ ओ सहन नहि कऽ पएता, एहि डर सँ वा फेर हुनका अपरेशनक लेल रुपैया खर्च करए पड़त ओहि डरसँ ?

माँ एकटा अलग समराज्यक मलिकानि बनि गेल छल, ओतए ओकर कल्पनाक अनुसार लोककेँ आएब जाएब होइत छल ।

साँझ होइते ओ टेलिभिजनक आगा बैसि जाइत छल, जेना कोनो मोन पसिनक धारावाहिक देखए चाहैत हो। जखन कि ओकरा किछु देखाई नहि दऽ रहल छल। एकर कारण मोने मोन इम्हर–उम्हरकेँ बात करैत रहैत छल। सभसँ बड़का बात छल माँ अपन अन्हार समराज्यक बहुत बड़का मनगढ़न्त कथाक रचना करैत छल ।

यदि ओ कथाकेँ ओ झूठ मानैत छल तैयो कोनो बात नहि मुदा कखनो कथाकेँ सत्य बुझिकऽ चिचिआए लगैत छल। ओ कहए लगैत छल जे

घरक पूरे बर्तन आ गहना स्वेताक काकी चोरी कऽ कऽ लऽ गेल अछि।

बहुत दिन पूर्व मरि गेल अपन एक भौजीक विषयमे ई कहैत कानए लगैत छल जे ओ हुनकर घरसँ बीना खएने चलि गेलीह। ई पुरे बात काल्पनीक छल मुदा कतबो कोशिसक बादो माँ बुझि नहि पाबि रहल छल। माँकेँ एहि अवस्थामे छोड़िकऽ स्वेता अपन घर भद्रपुर चलि गेलीह। भद्रपुर पहुँच कऽ ओ माँकेँ विषयमे एकटा चिठ्ठी लिखलीह। ई हुनकर पापाक नामसँ पहिल पत्र छल, भलेहि एहिसँ पूर्व स्कूलक परीक्षाक कापीमे उत्तर लिखबाक लेल पापाक नामसँ चिठ्ठी लिखने होइथ। कोन तरहे, कोन आधारपर लिखती जे माँकेँ आँखिक अपरेशन करा दिऔक। कारण ओ प्रकृति, गाछ बृक्ष देखि सकैए, माल जाल वा मनुष्यकेँ देखि सकैए , देवी देवता, पुतहुँ बेटी पोता, पोती, नाति, नातिनी सभकेँ देखि सकैए ओकर सुख–दुःखमे सहभागि भऽ सकए फेर एक बेर परिपूर्ण भऽ सकैए। ओकर जीवन आ ओकर अन्धकारमे राज्यक काल्पनिक नायक नायिका दूर भऽ जाए मुदा पापा लग एहन चिठ्ठी लिखल जा सकैत अछि ?

स्वेता एक–एक शब्दकेँ सोचि–सोचि कऽ ध्यान पूर्वक लिखलीह, 'पापा, माँकेँ कोनो बढ़िया डाक्टर लग लऽ जइओ ओकर बतहपन धीरे–धीरे बढ़ैत जा रहल अछि। यदि समय रहैत ओकर इलाज कराओल जाए तऽ ओ निश्चित रुपसँ ठीक भऽ जाएत।'

मुदा पापा हुनकर ओ पत्रकेँ कोनो उत्तर नहि देला ओ हुनकर एहि बातपर पूर्ण बिराम लगा देलन्हि।

छोट बहिनक विवाहमे स्वेता सहभागि नहि भेल छलीह। बादमे स्वेताकेँ एहि बातकेँ पता चलल छल जे हुनकर माँकेँ छोट बेटीक विवाहक विषयमे किछुओ जानकारी नहि छल। विवाहमे ओ चुपचाप दोसर अतिथि जेकाँ सैजिधैजि कऽ बैसल छल। कखनो कोनो काजमे ओकर आवश्यकता पड़ैत छल तऽ उल्टे ओ पुछए लगैत छल, 'ककर विवाह भऽ रहल छैक ?'

विवाहक संगहि दुरागमनक कार्यक्रम छल। बेटीक दुरागमनकेँ समय सभ खूब कानि रहल छल। मुदा माँ भीड़केँ भीतर घुसिकऽ बेर–बेर इहे पुछैत छल, 'कि भेल अछि, अहाँसभ कानि किए रहल छी ?'

किओ किछु बाजिओ दैत छल, 'अहाँक बेटी सासुर जा रहल अछि ओकर विवाह भऽ रहल छैक ।'

जेना कि रचल संसार धीरे–धीरे ओकरासँ दूर जाए लागल अछि। जेना कि एक–एक कदम बढ़ा कऽ माँ शुन्य दिस बढ़ैत जा रहल अछि। जतएसँ गाछ–बृक्ष, पहाड़–पर्वत, नदी–नाला, स्नेह–बात्सल्यप्रेम, स्वप्न यर्थाथ सभ धुंधला देखाइ दऽ रहल छल। धीरे–धीरे सभ किछु अदृश्य भऽ जाएत आ माँ उपर दिस उठि जाएत, जतए श्वास लेबाक लेल हावाक एक अनु सेहो उपलब्ध नहि हएत। स्वेता ई सोचि कऽ बहुत दुःखी भऽ रहल छलीह। भद्रपुरक एक फ्ल्याटमे असगरे रहैत समयमे हुनका माँकेँ स्मरण बहुत अबैत छल। हुनका स्मरण भऽ जाइत छल माँक ओ चेहरा जाहि समय ओ ८ महिनाक पेट लऽ कऽ नेंगराइत–नेंगराइत आमक अचार बनाबए भानसघर दिस बढ़ि जाइत छल।

ओ २ सालक क्रममे माँक मानसिक अवस्था आओर बेसी खराब होइत गेल। बीच– बीचमे अपन भाय बहिनसँ स्वेता माँक विषयमे खबरि लैत रहलीह। छोट बच्चा जेकाँ माँ जिद्दी होइत जा रहल छल। सप्ताह दू सप्ताहमे नवका सारी किनए लेल जिद्द करए लगैत छल। नव साड़ी लम्बा अछि सोचि कऽ छोट बना दैत छल। फेर पहिरएमे दिक्कत भऽ रहल अछि कहि कऽ नव साड़ीकेँ फरमाइस करए लगैत छल।

यदि ओकर फरमाइस पूरा नहि होइत छल तऽ आमरण अनशरपर बैसि जाइत छल। कहिओ–कहिओ कंगही लऽ कऽ दिनभरि माथमे कंगहि करए लगैत छल। एतेक कंगही करैत छल जे माथपर घाउ भऽ खुन निकलए लगैत छल। ओकर पूरे माथ खुनसँ भड़ि जाइत छल।

कखनो–कखनो जखन ओ बाथरुममे नहाए जाइत छल तऽ घण्टो नहाति छल। साबरक नीचासँ आबएकेँ नामे नहि लैत छल।

कखनो–कखनो तऽ घरमे जे रहल से फेकए लगैत छल।

अहुँसँ बढ़ि कऽ कहिओ–कहिओ घरसँ भागि जाइत छल, सभकेँ दृष्टि बचाकऽ। यदि किओ चिन्हा परिचितक लोक देखि लैत छल तऽ फुसला कऽ घर दिस आनि दैत छल नहि तऽ घरक पूरे लोक अपन काज धन्धा छोड़ि

ओकरा खोजए लगैत छल ।

एतेक भेलाक बादो कहिओ पापा माँकेँ लेल कोनो डाक्टरसँ परामर्श नहि लेलन्हि ।

माँ देखएमे बहुत सुन्दर आ बाजएमे स्पष्टवाली छल, मुदा स्वभावसँ ओ बहुत भोली । ई बात अलग छल जे पापाक अभिरुचि माँक स्वभावसँ मेल नहि खाइत छल । इहे कारण छल पापाक हृदयपर राज नहि कऽ सकल । पापा यदि कोनो महिलासँ प्रभावित छलाह तऽ ओ हुनकर भौजी छलन्हि । देखाइ देबएमे भलेही ओ खास नहि छलीह, मुदा हुनकर व्यवहार कुशलता, मधुरभाषिता तथा जीवनक गम्भीरतापूर्वक अनुभवक कारण पापा हुनका अपन दार्शनिक मित्र आ मार्ग दर्शकक रुपमे मानैत छलथि ।

एकटा इहो कारण छल जे पापाक माँकेँ अर्थात दाईकेँ निधन बच्चेमे भऽ गेल छल । आ ओहि समय हुनका किओ सहारा देलक तऽ ओ छलीह हुनकर भौजी । कोनो प्रकारक विपरित परिस्थितिमे स्वेताक पापा हुनका लग सलाह लेबए जाइत छलथि ।

पापाकेँ जमीन किनबाक होएन्हि, घर बनाबएकेँ होएन्हि वा अन्य कोनो महत्वपूर्ण काज भौजीकेँ बीना ओ कोनो काज आगा नहि बढ़बैत छलथि ।

एक बेर तऽ एहन भेल हुनका एकटा आवश्यक अपरेशन छल । मुदा ओ एहि बातपर अड़ि गेलथि जखनधरि भौजी नहि अएती ताधरि अपरेशन थिएटरमे नहि जाएब । ओहि अवस्थामे हुनकर भौजीकेँ नैहरिसँ आनल गेल छल ।

इहे सभ छोट मोट बातक कारण माँ पापासँ असन्तुष्ट रहैत छल । पापाक ई अवगुण बच्चासभकेँ सेहो नीक नहि लगैत छल ।

जीवनभरि माँ पापाक एहि व्यवहारक कारण अपमानित आ दुखित होइत रहैत छल । आइयो स्वेताक मोन मस्तिष्कपर ओ घटनासभ ओहिना चिपकल अछि । हुनकामे कोनो प्रकारसँ धुन्धलापन नहि आएल अछि । भद्रपुरसँ वीरगंज नैहरि अबैत समय एहि बेर पापासँ एहि विषयपर बात करब आ पुछब, 'कि कारण अछि जे अहाँ माँकेँ एहि तरहे अबहेलना कऽ रहल छी ? मात्र साड़ी गहना, भोजन पानि दऽ देलासँ नहि होइत छैक

जीवनमे एक दोसरकेँ सम्पूरक बनए पड़ैत छैक । यदि एककेँ ठेहूनमे दर्द होइत छैक तऽ हुनका हाथ पकड़ि कऽ किछु कदम आगा बढेबाक चाही ।'

मुदा जखन ओ पहुँचलीह तऽ पापाक चेहरा देखि कऽ आश्चर्यमे छलीह ।

बुढ़ापनक बिहारिमे हुनकर चेहरा लाचार आ असहाय देखा रहल छल ।

ओ उद्विग्न मोनसँ एहि तरहे बैसल छलथि मानु वर्षोसँ घरमे डुबकल कोनो चिड़ै होइक । माथक उपर मात्र एक मुठी केश बचल रहन्हि आ मुहँ पर कटल धानक खेत जेकाँ दाढ़ी उबि गेल छल । बरण्डापर दुनू ठेहुनक बीच माथ राखि कऽ उदास मोनसँ बैसल छलथि ।

स्वेताकेँ हुनकर ई अवस्था देखि कऽ उठि रहल प्रश्नकेँ पुछएकेँ हिम्मत नहि भेल । अपन ब्रिफकेश बरण्डापर राखि कऽ ओ पापाक चरण स्पर्श कएलीह । ठीक ओहि समय ड्राइङ्ग रुमक भीतरसँ ककरो कानएकेँ तथा गेट खटखटाबएकेँ आवाज आएल । स्वेता ओ आवाजके अकानैत पुछलीह, 'कें छथि घरक भीतर ?

ओतए पहिनेसँ ठाढ़ भौजी उत्तर देलीह, 'माँकेँ आइ काल्हि रुमक भीतर बन्द कऽ कऽ राखए पड़ैत अछि । नहि तऽ घरसँ भागि जाइत छथि । हुनका हरेक समय नजरबन्द कऽ कऽ राखल जाइत छन्हि ।'

रुमक बाहरकेँ दिससँ छिटकिल्लीकेँ खोलैत स्वेता कहए लगलीह,' एकर मतलब ई नहि अछि अहाँ ककरो घरक भीतर बन्द कऽ कऽ राखब ? ई देखैत माँ कोन तरहे कानि रहल अछि ?'

जहिना ओ रुमकेँ हेन्डिल खोललीह, ओहिना बीना किछु बजने माँ झटसँ ओहि अन्हार रुम सँ निकलि गेल । घरक भीतर किछु नहि छल, मात्र बीना बिछाओल लकड़ीक तकथा । पहिने किओ हुनका टेलिफोनपर बतौने छल जे आइ काल्हि माँ बेड सिटकेँ फाइर दैत अछि । एहिद्वारे एहि कड़कड़ौवा जाढ़मे नहि तऽ कम्बल देल गेल आ नहि ओढ़एकेँ लेल चादरि ई खबरि सुनि कऽ स्वेताकेँ ओहि समय अत्यधिक कष्ट भेल छल । एखन जखन अपन आँखिसँ देखि रहल छलीह कि माँकेँ सुतबाक लेल चौकीपर

कोनो फाटल पुरान गदलाधरि नहि अछि। एतेक बड़का घर, घरमे एतेक बहुत सामान रहलाक बादो एहन अवस्था होइत अछि मनुष्यकेँ।

छोटकी काकी कहए लगलीह,' स्वेता भीतर नहि जाउ माँकेँ स्मरण शक्ति समाप्त भऽ गेल अछि, ककरो चिन्हए नहि सकि रहल छथि।

दिसा पेसाब कऽ कऽ इम्हर ओम्हर फेकि रहल छथि।'

छोटकी काकीक बात नजरअन्दाज कऽ माँकेँ हाथसँ पकड़ि स्वेता बाहर अनलीह आ पुछए लगलीह,' देखि तऽ माँ, हम केँ छी ?'

'केँ ?' माँ बाजल।

स्वेता बजलीह, 'माँ तो हमरा चिन्हैत छएँ, हम तोहर बेटी स्वेता छियौक।'

माँ कोनो उत्तर नहि देलक। आंगुर पर बान्हल बेन्डेज देखाबैत कानए लागल।

स्वेता अपन माँकेँ हाथसँ पकड़ि कऽ शयनकक्ष दिस लऽ जा रहल छलीह, तखने बड़की काकी कहए लगलीह,' स्वेता माँकेँ हाथ नहि पकरु हुनकर हाथमे पेखाना लागल छैन्हि।'

स्वेता देखलीह जे माँकेँ आंगुरपर कारी–कारी दाग जेकाँ सुखल पेखाना लागल अछि। माँकेँ शरीरमे आब किछु जान नहि रहि गेल अछि मात्र बचल अछि अस्थीपन्जर आ कनिक चमरा, आँखि तऽ एना लागि रहल अछि मानु कोटरकेँ भीतर बैसल चिड़ैकेँ दू टा बच्चा। ओह ! बुढापा कोन तरहे लोककेँ कान्तिहिन बना दैत अछि।

एहने कोनो जीबैत लाशकेँ देखि कऽ सिद्धार्थ गौतम 'बुद्ध' भऽ गेला। एकटा दिन एहनो छल माँकेँ शरीर एकटा मोडेल जेकाँ ५ फिट ६ इन्चकेँ छल, मुदा आइ ओ सिकुरिकऽ ४ फिटकेँ देखाइ दऽ रहल अछि।

गोर रंग बला माँकेँ शरीर आइ जरल कोइला जेकाँ देखाई दऽ रहल अछि। माँ बेर–बेर इशाराक माध्यमसँ हाथपर बान्हल पट्टीकेँ खोलए लेल नेहोरा कऽ रहल अछि। स्वेता पुछलीह, 'की भेलौ माँ तोहर एहि हातमे ? कतहुँ खसि तऽ नहि पड़लए अछि ?'

स्वेताक प्रश्न सुनि कऽ भौजी उत्तर देलन्हि, 'नहि खसली अछि ? ओ

अपन नह सँ नोचिकऽ हाथमे घाउ बना लेली अछि। हुनकर दिमाग ठीक नहि छन्हि।'

'कोना बुझैत छियैक ? होशे नहि छैक।'

'अहाँक भैया आइए भोरमे दबाई लगा कऽ पट्टी बान्हि देने छलथि।'

माँ फेरसँ पट्टी खोलि देबाक लेल इशारा करए लागल।

स्वेता पुछलीह, 'माँ बहुत कष्ट भऽ रहल छौक।'

जहिना स्वेता पट्टी ढिल करएकेँ प्रयास करए लगलीह तखने भौजी मना करैत कहए लगली, 'पट्टी नहि खोलिऔ नहसँ फेर हाथसभपर घाउ कऽ लेथिन।'

मुदा माँ तऽ जिद्द कऽ रहल छल, छोट बच्चा जेकाँ। कानि रहल छल। हतास जेकाँ स्वेता पलंगपर बैसि रहलीह तखने भौजी एक कप चाह देलन्हि। चाह पिबिते स्वेता सोचि रहल छलीह, इहे पुरान कटहरकेँ लकड़ीबला पलंगपर हुनकर बाल्यपन बीतल छल। ओहि पलंगपर पापा सुतैत छलाह। ई माँ पापाक रुम छल, सिसोक लकड़ीसँ बनल आलमारी, लोहाक बड़का लकर ईसभ एहि घरकेँ शोभा बढ़बैत छल।

सभ सामान पहिने जेकाँ राखल छल मात्र कमी छल एहि बातकेँ जे आब ओ रुममे माँ आ पापा नहि रहैत छथि।

माँकेँ बदमाशीसँ दिक्क भऽ कऽ पापा उपरबला रुममे रहए लागल छथि। ड्राइङ्ग रुमकेँ खाली करा कऽ माँकेँ राखल गेल अछि।

पलंङ्गकेँ उपर राखल गद्दा राखल-राखल पाथर जेकाँ कठोर भऽ गेल अछि। ओ सभ ७ भाइ बहिन ओहि पलंगक उपर सुतैत–सुतैत गप्प मारैत छलथि। ककरो पाएर ककरो माथ दिस रहैत छल तऽ ककरो जाँघ पेटक उपर।

बैशाख जेठ महिनामे कहिओ बिहारि अबैत छल तऽ माँ सभ बच्चाकेँ नामसँ बजा कऽ जोड़–जोड़सँ हल्ला करए लगैत छल। सभ बच्चा ओहि समय जतए कतहुँ रहैत छल भगैत चलि अबैत छल। एहि रुममे सभकेँ भरि कऽ गेट बन्द कऽ लैत छल। ओकर कहब छल, यदि मरब तऽ सभ एक्के संग। ओकर कोनो बच्चा खेलैत–खेलैत दोसर ठाम नहि मरत।

माँकें एहि डर तथा ओकर बचाबएबला युक्तिकें देखि कऽ पड़ोसीसभ उपहास करैत छल । मुदा आइ ककरो चिन्ह नहि पाबि रहल अछि । कें अछि स्वेता ? कें अछि नीता ? ओकरा ओहिसँ मतलब नहि अछि ।

पापा स्वेताक नजदिक आबि कऽ बैसि रहैत छथि 'माँ कें की पुछि रहल छिही स्वेता ? ओ कि उत्तर देतहुँ ? ओ तऽ बताह अछि, मरि जाइत तऽ बढ़िया होइत ।'

वाक्यकें अन्तिम अंशकें पापा बड़बड़ाईत कहला । आ ई अन्तिम वाक्यांश स्वेताकें हृदय टुक्रा-टुक्रा कऽ देने रहन्हि । की पापाकें अन्तमे इहे कहबाक छल ।

माँ पापाकें देखि कऽ पट्टी खोलएकें लेल बाध्य करए लागल । चिड़िचिड़ा कऽ पापा कहए लगला, 'की अहाँ हमरा शान्तिसँ बैसहो देब की नहि ? एना किए कऽ रहल छी ?'

माँ कानए लागल । माँकें कानब देखि स्वेताकें हृदयपर आरा चलए जेकाँ लागल । पलङ्गसँ उठि कऽ स्वेता माँकें गलामे लगा लेलन्हि आ पोलहबैति कहए लगलीह, 'माँ कह तऽ हम कें छी ?'

मुदा माँकें दिससँ कोनो उत्तर नहि आएल ।

भौजी माँकें हाथ पकड़ि कऽ भीतर दिस लऽ जा रहल छलीह । तखने पापा पुछलन्हि,' माँकें भोजनो भेलै अछि की नहि ? '

कनी कठोर शब्दमे भौजी उत्तर देलीह,' ई काज हमरासँ नहि हएत ।'

'नहि हएत मतलब ?' पापा बात पर जोड़ दैत बजला ।

माँकें ओ रुममे बन्द कऽ भौजी चलि अएली आ कहए लगलीह,' स्वेता अहाँसभ तऽ बाहर रहैत छी, अहाँ सभकें कोना बुझल हएत माँ कतेक परेशान करैत छथि आ की कहुँ अहाँक भैयाक अतिरिक्त किओ नहि खुवा सकैत छथि । बीतल १०/१२ दिन ठीक सँ भोजनो नहि कएली अछि । एक बेर तऽ ओ मुठ्ठी भरि नून खा लेलन्हि एकर बाद किछु खुएलासँ पहिने एक मुठ्ठी चिनी खुआबए पड़ैत अछि । तखन जा कऽ भोजन करैत छथि । मुदा एखन तऽ किछु नहि खाइत छथि ।'

'अहाँसभ डाक्टरकें देखेलिए नहि ?'

'पापा चाहता तखन ने ?'

'की अहाँसभ, सभ काज पापासँ पुछि कऽ करैत छी ? यदि अहाँ सभ अपन जिम्मेबारी स्वयं निमाहब तऽ पापाकें पुछएकें कोनो आवश्यक्ते नहि पड़त ।'

'एहन बात नहि की हम अपन जिम्मेवारी नहि निमाहलहुँ अछि । बीचमे अहाँक भैया डाक्टरसँ सलाह लऽ कऽ किछु दबाई किनलन्हि । जखन ओ दबाई माँकें देल जाइत छल तऽ माँ की त सुति रहैत छलथि कि तऽ औघांए लगैत छलथि । ई देखि कऽ पापाकें तामस आबि गेलन्हि कहए लगला जे हुनकर शरीरमे की बचि गेल अछि ,एतेक कड़ा दबाई देल जाइत अछि । ई सुनि कऽ अहाँक भैया दबाई देब बन्द कऽ देलन्हि ।'

'काठमाण्डू लऽ जा कऽ कोनो मनोचिकित्सकसँ देखा कऽ ईलाज कराओल जा सकैत अछि ?'

'अहाँ तऽ अपन आँखिसँ देखि रहल छी, माँ कोना कऽ रहल छथि गाड़ीमे बैसि कऽ जा सकथिन ? ......जखन एतेक कहि रहल छी तऽ स्वयं जा कऽ डाक्टर लग किए नहि देखा दैत छियैक ?' भौजीकें तामस जेना कि ज्वालमुखि जेकाँ फाटि गेल हुए आ ओकर कड़ा गर्मी स्वेताकें धारासाही करए लागल हुए ।

स्वेता आओर किछु कहती कि पापा आबि कऽ भौजीक पक्षमे कहए लगला,' कतए जेती ? आब कतेक दिन जीबित रहबाक छैन्हि ? किए हिनका पाछु लागल छएँ एहि तरहे पापा माँकें प्रसंगकें बदलि देलन्हि ।

स्वेता एकटा दीर्घ श्वास लेलीह । माँकें प्रति एतेक अबहेलनाक कारण की भऽ सकैत अछि ? एकबेर फेरसँ ई पुछएकें इच्छा भेलन्हि, की भऽ सकैत अछि एकर सम्भावित कारण ? हम एतेक मूर्ख आ भोली जे छलहुं मुदा हमरा लेल भोलापन ठीक छल स्वेता पापाकें भलेही किछु नहि कहलन्हि मुदा भौजीसँ कहए लगलीह, 'कृपा कऽ कऽ माँकें घरकें भीतर नहि बन्द करिऔ, बहुत खराब लगैत अछि । एहि रुमसँ ओ रुम ओकरा घुमए दिऔक एहिमे की परेशानी भऽ सकैत अछि ?'

'घुमएसँ कोनो परेशानी नहि छैक मुदा ओ घरसँ भागि जाइत छथि

कहिओ-कहिओ बाहर भागि कऽ कपड़ा खोलि लैथि छथि। पड़ोसीसभ उपहासक संगहि रंग-रंगकेँ बात करैत छथि।'

'अहाँकेँ पड़ोसीसँ की लेबए देबएकेँ अछि ? की ओ नहि जनैत छथि माँ बताह अछि।'

लम्बा बस यात्राक थकाबट दूर करए लेल स्वेता स्नान करए चलि गेलीह। जखन ओ बाथरुमसँ बाहर आबि रहल छलीह तऽ ओ बड़का भैयाकेँ घरमे अबैत देखलन्हि भौजीसँ कहि रहल रहैथि,'साँझमे मिटिङ्ग अछि, माँकेँ सफाई कें करत इहे सोचि कऽ बहुत मुश्किलसँ समय निकालि कऽ अएलहुँ अछि। अबिते अफिसक कपड़ा बदलि अपन धोती पहिरलन्हि आ माँ रुमक सभ खिड़की आ गेट खोलि देलन्हि। रुमक भीतर पर्याप्त प्रकाश आ साफ हावा संचार होबए लागल। माँकेँ लगमे बैसा कऽ सभ पट्टी खोलि देलन्हि आ भौजीकेँ गरम पानि लाबए लेल कहए लगला,' आइ कनी धरफरीमे छी एहिद्वारे बेसी देर धरि नहि रुकब।'

स्वेताकेँ पहिल दिनक अनुभूति कटुता आ माधुर्यकेँ समिश्रण छल। पहिने तऽ अपन माँ, पापा आ भैयाक दुरावस्था देखि कऽ दुःखी छलीह दोसर दिस माँकें जीबित देखि कऽ प्रशन्न सेहो। भद्रपुरमे रहैत समय सोचैत छलीह शायद माँकेँ देखि पाएब वा नहि, मुदा कोनो एहन अकल्पनीय घटना नहि घटल। घर पहुँचते ओ देखलीह माँ ओछाएन नहि पकड़ने अछि। मात्र दिमागी हालत खराब भेलासँ उल्टा सुल्टा काज कऽ रहल अछि। हुनका लागि रहल अछि जे माँ एहि अवस्थामे आरामसँ दू तीन बर्ष जीब सकत।

जखन दोसर दिन अचानक एकटा दुर्घटना घटल। बेरियाक समय भैया अफिससँ अएला आ माँकेँ घाओ साफ करए लगला तऽ ओ समय स्वेता हुनका मदत कऽ रहल छलीह। माँकेँ शायद कष्ट भऽ रहल हएत सोचि कऽ स्वेता कहए लगलीह, 'भैया माँकेँ कनी पकरु तऽ बढ़िया जेकाँ नहा दैत छियैक।' दुनू मिलिकऽ माँकेँ नहाइए रहल छलीह की माँ सीधे जमीनपर खैसि पड़ल। माँकेँ शरीर जोड़–जोड़सँ काँपि रहल छल। भैया माँकेँ उठा कऽ बाहर लऽ गेला। देखिते–देखिते माँकेँ साँझमे बोखार भऽ

गेल। तीन दिनधरि बोखार नहि उतरल। पूरा शरीर पीयर होबए लागल छल। डाक्टरकेँ घर बजाओल गेल, डाक्टर पूरा बात सुनलन्हि हुनका देखलन्हि आ अस्पतालमे भर्ती कराबए लेल कहि चलि गेला।

स्वेताकेँ अस्पतालक नाम सुनिते डर लागए लागल। माँकेँ अस्पतालमे भर्ती करा देलाक बाद पता नहि स्वेताकेँ असहाय जेकाँ, एकाकी जेकाँ लागि रहल छलन्हि।

बेमारी घरमे रहला सँ किछु बात अलग होइत अछि मुदा यदि ओकरा अस्पतालमे भर्ती करा देल जाइत अछि तऽ ओकर सेवा सत्कार करए लेल अतिरिक्त लोककेँ आवश्यकता पड़ैत अछि।

अस्पतालमे गेलाक बाद स्वेताक बाहर रहल सभ भाइ सभ पहुँच गेला मुदा बड़का भैयाक अतिरिक्त सही मोनसँ रातिमे किओ रहए नहि चाहैत छला। एतेकधरि कि स्वेता सेहो नहि। इम्हर डाक्टर सेहो नहि बुझि पाबि रहल छथि माँक बेमारीक असली कारण कि अछि। ८ दिनसँ माँ किछु नहि खएली अछि। एहि कारणसँ ओकरा डिहाइडड्रेशन तऽ नहि भऽ गेल अछि। शायद इहे सोचि कऽ डाक्टर ई नली लगौने छलथि। नलीक मदतसँ स्लाइनक अतिरिक्त तरल भोजन देल जाइत छल। एतेक भेलाक बादो माँ उठि कऽ नहि बैसि सकल। ओकर खुनमे हेमोग्लोविन ६ प्रतिशत धरि रहि गेल छल। खुनक कमी देखि कऽ डाक्टर तीन बोतल खुन चढ़ाबए लेल कहलन्हि। तीन बोतल खुनक नाम सुनि कऽ सभ सिहैरि उठल। भैयाक ब्लडग्रूप सँ मेल खा रहल छल एहि द्वारे पहिल बोतल भैया देलन्हि।

खुनक दोसर बोतलक लेल स्वेताक छोट बहिनक नाम आगा आएल। दू तीन दिनक बाद दोसर बोतल चढाबएकेँ छल। सात भाय बहिनमेसँ अधिकांश अपन–अपन घर चलि गेलाक कारण स्वेताकेँ बहुत तामस भऽ रहल छल। ओ सोचि रहल छलीह, सभकेँ सभ स्वार्थी अछि। बीना किछु काम काज कएने अपन-अपन काजमे व्यस्त भऽ गेल जे हमर कोनो घरद्वार नहि अछि ? दू सालक बाद आएल छलहुँ एकर मतलब ई तऽ नहि अछि पूराकेँ पूरा भार हमरा कन्हापर लादि देल जाए।

ओना बड़का भैयाक अवस्थाकेँ देखि हम रातिमे अस्पताल आएल

छलहुँ । बैसल–बैसल पता नहि कखन निन्न लागि गेल आ ओहि क्रममे माँ नाकमे लागल नली खिचकऽ फेकि देने छल । भोरे–भोर अस्पतालक लग पासक गाड़ी, लोकक आवाजसँ भैयाक निन्द खुजल । जहिना ओ निन्दसँ उठला स्वेता कहए लगलीह, 'देखिऔ भैया माँ नाकक नली बाहर फेकि देलक अछि ।'

स्वेता सोचिए रहल छलीह की भैया हुनकापर तमसेता मुदा एकर ठीक विपरित भैया नर्सकेँ बजा कऽ ठीक करबा लेलन्हि ।

तेसर बोतल खुन देबएकेँ समस्या आबि गेल । भैया आ बहिन दऽ देने छल । एहि द्वारे हुनकासभ दिस सोचबाक कोनो आवश्यक्ते नहि छल मुदा तेसर बोतल कें देत ?

भैया ब्लड बैंककेँ बहुत चक्कर लगेलाक बाद ई जानकारी कएलन्हि जे दोसर ग्रूपकेँ ब्लड देलासँ चेन्ज होइत छैक । हम आगा बढि गेलहुँ हमर ग्रूप ए छल । मुदा डाक्टर कहलन्हि, 'ई ब्लड अन्तिम नहि अछि, दू दिन तीन दिन पर एहिना दैत रहए पड़त ।'

ओ डाक्टरकेँ बात सुनि कऽ स्तब्ध रहि गेलथि मानु आब माँकेँ एहि बोझकेँ सम्हारैत–सम्हारैत थाकि गेल छथि । एक एक कऽ माँकेँ देखबाक लेल कुटुम्ब सभ अबैत रहल आ तीनू मोन व्रत धारण कऽ लेलन्हि । ककरोसँ बातचित नहि कएलन्हि । रातिमे भैया कुर्सीपर बैसैत कहलन्हि, 'स्वेता आब हम नहि रुकि सकब, बहुत कष्ट भऽ रहल अछि ।'

'भैया यदि अहाँ एहि तरहे टुटि जाएब तऽ हम सभ कोना कऽ रहबैक ।'

छोटकी बहिन बाजल, 'अस्पतालमे माँकें देखभाल करैत बड़का भैयाकेँ बहुत दिन भऽ गेल अछि । आब ओ पूरा पूर थाकि गेल छथि आइ छोटका भाइ आ भौजी जलेश्वरसँ आबि रहल छथि । छोटके भैया आ भौजीकेँ रातिमे रहबाक लेल कहि दैत छियैक ।'

स्वेता सोचि रहल छलीह, 'माँ छोटका बेटाकेँ बहुत स्नेह करैत छल मुदा कि ओ माँकेँ देखबाक लेल रातिमे अस्पतालमे जागि पाओत ? बच्चेसँ ओ बहुत स्नेहसँ पलल अछि । ओ कखनो रातिमे एतए रहए लेल तैयार नहि हएत, लागि रहल अछि भैएकेँ ई सभ कष्ट सहन करए पड़त । कारण

ओ अपन माथमे लिखा क् आएल छथि। घरमे सभसँ बेसी धैर्यवान बड़का भैया छथि। ओहो लम्बा उपचारक नाम सुनिते एना क् टुटि गेल छथि, एतए रहएकेँ मोने नहि होइत छन्हि। नाकमे फिट कएल गेल रायल ट्युवकेँ माध्यम सँ सिरिन्चकँद्वारा भोजन कराओल जाइत अछि।

स्वेता भैयाक मानसिक स्थितिक आंकलन करैत कहए लगलीह, ‘ काल्हि माँकेँ खुनक बोतल चढ़ेलाक बाद हमसभ घर ल् जाएब। डाक्टरो त् एखनधरि कोनो निश्कर्षपर नहि पहुँच पाएल छथि।’

माँकेँ उमेर बेसी होबएकेँ कारण ई सभ भ् रहल अछि। माँकेँ अस्पतालमे राखिक् सुइसँ एतेक कष्ट किए देल जाए ? चारि दिनक बाद हमरो भद्रपुर जएबाक अछि। बहिनकेँ एला सेहो बहुत दिन भ् गेल। ओकर पति कतबो बढ़िया लोक होइथि हुनको रहबामे समस्या होइत हएत। बेचारा स्वयं भोजन बना क् अफिस जाइत हएता।

‘भैया अहुँकेँ छुट्टी पूरा भ् गेल अछि आ कतेक राति अहाँ जागि पाएब। माँकेँ घर लगेलाक बाद कनी-कनी समय निकालि क् देखभाल क् सकब।’

एकटा लम्बा भाषणके समाप्त कएलाक बाद स्वेता एकदम मौन भ् गेलीह। माँ हुनको लेल एकटा अनसुझल पहेली बनि गेल छल।

स्वेता स्वयं माँकेँ अस्पतालमे भर्ती कराबए लेल आगा आएल छलीह आ ओ स्वयं घर ल् जाएकेँ बात क् रहल छलीह। पहिल बेर ओ कनी-मनी समय माएकेँ लेल देने छलीह। मुदा नहि माँ ठीक भ् सकल आ नहि मुक्त, मात्र एकटा लम्बा प्रतीक्षा। एकर मतलब की माँ हुनके आबएकेँ प्रतीक्षा क् रहल छल। अस्पतालक बरण्डापर बैसल पापा शायद हुनकर बात सुनि रहल छलाह, केबिनकेँ भीतर आबि क् उदास स्वरमे पुछ्ए लगला, ‘माँकेँ की घर ल् जएबहीक ? की हुनकर अवस्थामे कोनो सुधार नहि आबि रहल छैक ?’

पापाक चेहरा आ आवाजमे एकटा दुःखद लोकक पीड़ा स्पष्ट झलकि रहल छल। एखनधरि स्वेता अपन पापाकेँ बुझि नहि पेने छलीह ?

माँकेँ लेल हुनकर हृदयकेँ कोनो कोनमे नुकाएल ई कनीकटाकेँ प्रेम

जकरा आइधरि स्वेता नहि बुझि पेने छलीह ।

एक पुरुषक व्यक्तित्वक भीतर नुकाएल ई निर्मल प्रेम चारु दिस छिटाएकेँ प्रयास कऽ रहल छल । जकरा स्वेता देखि नहि सकलीह ।

शायद माँकेँ कष्ट हएत, ई सोचि कऽ हुनका आँखिक अपरेशन कराबए लेल ओ अस्वीकार कऽ देलन्हि शायद इलेक्ट्रिक सककेँ डरसँ राँची नहि लऽ गेलथि ।

मुदा स्वेता कि कएलन्हि ? पूरे माहौलकेँ बदलि कऽ माँकेँ अस्पतालमे भर्ती करा देली । चलैत-फिरैत माँकेँ किछुए दिनमे एक सरिसृप बना देलन्हि । सभ भाइ बहिन ई कहि रहल छलथि माँ तऽ मात्र हुनके प्रतीक्षा कऽ रहल छल आ स्वेता स्वयं ई सोचि रहल छलीह, माँ हुनका देखि कऽ अपन आँखि सदा-सदाकेँ लेल मुनि लेत जेना की बराबर सिनेमामे होइत अछि ।

आब माँकेँ ककरो प्रतीक्षा नहि अछि ? यदि ओ ठीको भऽ जाएत, उठि कऽ ठाढ़ो भऽ जाएत, चलए फिरए लागत तैयो कि लाभ भेटत ? एहिना जंगली जेकाँ इम्हर-उम्हर घुमत आ लाश बनि कऽ अपन जीवन बिताओत । यदि माँ जिन्दो रहि गेल तऽ ओकरामे ओ पुरान माँ फिर्ता भऽ कऽ नहि आबि सकत । माँ तऽ हुनकर जीवनसँ बहुत दिन पहिने चलि गेल ।

बहुत दिन बीत गेल माँकेँ सभकेँ लेल अर्थहिन होइत । माँकेँ तऽ एहि बातकेँ अनुभवो नहि अछि ओकर चारु दिस हल्ला करैत चक्कर काटएबला बेटा-बेटी, पुतहुँ आ पोता-पोती अछि ।

बहुत दिन भऽ गेल स्वेताकेँ अपन माँकेँ हेरेला, हुनक जीवनमे माँकेँ नामक निशान नहि अछि । ओ तऽ कहिआ मरि गेल अछि । सोचैत-सोचैत स्वेता हिचुकी लऽ कऽ कानए लगलीह । हुनका कनैत देखि छोटकी बहिन सेहो कानए लागल । भैया थाकि कऽ पता नहि कखनसँ स्टूलपर बैसल-बैसल सुति रहल रहथि । स्वेता अपन नोर पोछैत देखलीह, पापाक गालक उपर बहैत नोरक धार ।

ई नोर अछि वा प्रेम ? स्वेता माँकेँ शरीरक उपरसँ अपन हाथ घुमौलीह मोने-मोन ओ कहए लगलीह,' तो जो माँ एहि संसारकेँ छोड़ि कऽ, उड़ि जो

आब ई संसार तोहर नहि छौक । तहुँ आब ककरो नहि छएँ, जो तो कोनो दोसर संसारक लेल उड़ि जो ।’मुदा माँ बहुत हठधर्मी भऽ कऽ स्वेताक बात कैँ बीनसुनने एहिना पड़ल रहल । एखनो माँकैँ कण्ठ लग एकटा नारी धड़कि रहल छल ।

अपन सिन्धुली

गाड़ीक आवाजसँ हमर आँखि खुजल। भोरक ४ बाजि रहल छल। बहुतरास काज करबाक छल। सीजन सेहो चलि रहल छल, बेचबाक लेल फूल आनएके छल। बहुत काजसभ भोरे-भोर करए पड़ैत अछि। उठि गेलहुँ। घरमे बारहन्हि देलहुँ, बाबूकें उठेलहुँ। फेर फूल आनए लेल गाम दिस बढ़ि गेलहुँ। ओहि समयमे सूर्य फूलसभसँ रभैस रहल छल। पूरे फूल जीवनदाता सूर्यकें देखि कऽ बिहुँसि रहल हुए जेना लागि रहल छल। सुगन्ध भड़ल हावासँ मोनमे एक प्रकारक उल्लास चलि आएल। रंग बिरंगक फूल लऽ कऽ छिट्टीमे सजेलहुँ। ओहि दिन बाबू बहुत रुपैया कमेला।

साँझमे साइकिलक घण्टीक आवाज सुनि दरबाजा खोललहुँ तऽ केदार आगामे ठाढ़ छल। दुध लेलहुँ तऽ ओ हमरा दिस एकटक ताकए लागल। बाजल, ' सम्झना, एहि बेर विवाह पञ्चमीमे हमर सभक विवाह हएत ने ?'

'छेया....' कहि कऽ हम लाजसँ लाल होइत दरबाजा बन्द कऽ लेलहुँ। ओ हमर बातपर बिहुँसि कऽ चलि गेल। केदारकें ओतए दुधक व्यापार होइत छल। बढ़िया घर छल। बाबू हमर विवाह केदारसँ करबाक निर्णय लेने छलाह। हमरा दुनूकें सेहो कोनो आपत्ति नहि छल।

राति होइते ओछाएनपर चलि अएलहुँ। बहुत देर धरि निन्द नहि आएल। मात्र केदारक शब्द गुञ्जैत रहल। हम आबएबला सपनामे खेलैत रहलहुँ। पहाड़क ई शहरमे ठण्डा-ठण्डा हावा चलि रहल छल।

'तिमी न भए जिन्दगानी काँडा सरी छ ...' गीतक आवाज हमरा

कानमे पड़ल। केदार गाबि रहल छल, शायद हमरे वियोगमे। ओकर आवाज हमरा आत्मविभोर कऽ देलक।

भोरमे जखन आँखि खुजल तऽ नित्य दिनक दिनचर्याक बाद बेरियाधरि अपन टोलमे चक्कर लगाबएकेँ मोन कएलक। हम कुदैत फानैत भुन्टी, गीता, सीता, गोरे दाई नहि जानि कतेकोकेँ घरमे झाँकि अएलहुँ।

ओ राति किछु आश्चर्यसन छल, हम बेचेयन भऽ करोट फेरैत रहलहुँ। कानब, चिचिआएब ......हम बाबूकसँग खिड़की लग आबि ठाढ़ भेलहुँ। लोककेँ दौड़ बहरा, चिचिआएबकेँ अर्थ बुझि नहि रहल छलहुँ। हम पूरे राति डेराएले रहलहुँ। भोरमे पता चलल माओवादी आ पुलिस बीच भीडन्त भेल अछि। कतेको गोटे मारल गेल। कतेको चिन्हा परिचयक लोककेँ लाश, कानब। एहन भोर तऽ हम कहिओ सोचबो नहि कएने छलहुँ। पूरे माहौल डर आ पीड़ासँ भड़ल छल। केदार दौड़ैत-दौड़ैत आएल। हमर बाबूसँ कहलक, ‘काका माओवादी पुलिस चौकी पर आक्रमण करए आएल छल, एहि क्रममे ई घटना भऽ गेल अछि। अहाँ सम्झनाकेँ कहिओ जे घरसँ नहि निकलए। नहि जानि माओवादी ककरा कखन अपहरण कऽ लेत ?’

हम डेराएल सन ठाढ़ छलहुँ। हृदय पहिनेसँ घबड़ा रहल छल।

ओहि रातिक आक्रमण पहिनेसँ बड़का छल। कानब, चिचिआएबकेँ आवाज हृदयकेँ झकझोड़ि रहल छल। बाबू हमरा चुप्पेसँ हाथ पकड़ि घरक पाछुमे लऽ अनलाह। पूरे राति हम ओतहि नुकाकए रहलहुँ। भोरमे पता चलल ई बिजली हमरे पर खसल छल। केदारक पूरे खन्दान समाप्त भऽ गेल छल। हमर आगा हमरा भविष्यक सम्बन्ध खुनमे नहाएल पड़ल छल। हम चुपचाप ठाढ़ भऽ बीतल दिनक दोहरा रहल छलहुँ। ओहि दिन हम किछु नहि खएलहुँ। हमरा घरसँ नहि निकलएकेँ सलाह देबएबला हमर लोक,ई आक्रमणमे अपनाकेँ नहि बचा सकल। हम कानि–कानि कऽ बेहाल भऽ रहल छलहुँ।

आब तऽ सूर्य निकलैत छल तऽ सिन्धुली जिल्लाक ई पहाड़ी क्षेत्र खुनक रंगसँ भड़ल रहैत छल। सुतैत छलहुँ तऽ सेहो एहने अनुभव होइत छल।

हावाकसँग दुःख चिचिआएब बीना बातेकेँ सुनाई दऽ रहल छल । फेर एक राति बाबू हमरा लऽ चुप्पेसँ घर छोड़ि देलन्हि ।

नुकाइत-नुकाइत हमसभ जनकपुर गेलहुँ आ फेर काठमाण्डू चलि अएलहुँ । किछु दिन तऽ एक प्रकारसँ माँगि कऽ पेटक आगि बुझेलहुँ, फेर हम आ बाबू नोकरी ताकए लगलहुँ । बाबूकेँ एकटा घरमे मालीकेँ काज भेटल । हमर मालिक बहुत बढ़िया लोक छलथि । हुनका खासासँ सामान काठमाण्डूमे आनि होल सेलमे बेचबाक काज छल ।

टिभीपर समाचारमे सिन्धुली जिल्लाक आक्रमणक समाचार देखैत छलहुँ तऽ आँखिसँ नोर बहि जाइत छल । समय बीतैत गेल एक दिन हमर बाबूक आगा हमरासँ विवाह करबाक मालिक प्रस्ताव रखलन्हि । बाबू चूप छलाह । बहुत सोचि समझि कऽ ओ उच नीचक बात बुझौलन्हि मुदा मालिक विवाहक निर्णयसँ टसमस नहि भेलथि । अन्ततः ई विवाह भऽ गेल । श्रीमान हमरा 'सिन्धुलीक परी' कहि कऽ सम्बोधन करैत छलथि । ओ हमरा बहुत सम्हारि कऽ रखैथि जेना हम शो केशमे राखल कोनो किमती सो पिस रही ।

एक दिन भोरमे खिड़की खोलि कऽ ठाढ़ भेलहुँ । तखन कतहुँसँ पेट्रोलक धुवाँ आएल तऽ हमरा सिन्धुली स्मरण आबि गेल । कहाँ ओतए एहन गन्ध अबैत छल । हरेक स्थानपर सुगन्धे सुगन्ध । एतेक भेलाक बादो हम चुपचाप रहैत छलहुँ । पूरे सुख भेलाक बादो सिन्धुलीक स्मरण एना कऽ पकड़ने छल जे ओतएसँ हटिए नहि रहल छल ।

एक दिन हम 'तिमी न भए जिन्दगानी काँडा सरी छ....' ओहे गीत गुनगुनाबए लगलहुँ । ओहे गीत ओहे धुन मुदा अर्थ कतेक बदलि गेल छल । जहिआ कहिओ केदार हमरा वियोगमे ई गीत गबैत छल, आइ हम अपनासँ बिछुड़ि कऽ अपन स्थानसँ दोसर स्थानपर पहुँचलाक बाद ई गीत गाबि रहल छी । हम पूरे दिन असगरे रहैत छलहुँ । आगा लग पासक घरक गेट, दरबाजा प्रायः बन्दे रहैत छल । अपना गाममे कहिओ एहन दिन नहि होइत छल दश घरमे नहि जाइत छलहुँ हएत । ओतहि एतए सभकेँ घरक दरवाजामे 'नो एन्ट्री'केँ वोर्ड लागल जेना बुझाइत अछि ।

बाबूकेँ आँखिमे सेहो ओहने पीड़ा देखैत छलहुँ जे हमरा भीतर अपन जड़ि जमौने अछि ।

एहिना एक दिन हमर श्रीमान मोन बहलाबए लेल काठमाण्डूक बहुत दर्शनीय स्थल देखौलन्हि । मुदा हमर हृदय प्रशन्न भऽ नहि सकल । हमरा गम्भीर होइत देखैत कहला, 'सम्भना किछु दिन आओर रुकि जाउ । माओवादी वार्तामे आबि रहल अछि । शान्त होइते हम अहाँकेँ सिन्धुली लऽ चलब, अहाँकेँ स्वर्ग घुमाएब ।'

हम चुप्पे रहलहुँ । हमरा घरक लग पास फलबलासभ अवैत छल । हम एक दिन हिम्मत कऽ एकटा फलबालाकेँ बजा लेलहुँ ओ जुनार बेचैत छल । ओ जहिना आएल हमरा चेहरापर पहिचानक रेखा खिचा गेल, ' वीर बहादुर काका, अहाँ ?'

ओ हमरा दिस अपन आँखि उठौलन्हि मुदा हमरा चिन्ह नहि सकलथि । शायद दुःख हुनक स्मरण शक्तिकेँ छिन लेने छल । कहिओ हुनकर बहुत बड़का फलक दोकान होइत छल । हुनकर दोकानसँ सिन्धुलीक फल सभ जनकपुर, मलंगवा, लहान, राजविराजधरि जाइत छल । ओ कहलन्हि जे बेटा पुलिसक ट्रेनिङ्गमे गेल छल ताहि आरोपमे माओवादीसभ दोकान आ घरमे आगि लगा देलक आ फेर जखन बेटा घरपर आएल तऽ बेटा सहित घरक सभ सदस्यकेँ मारि देलक । ओ जनकपुर काजसँ गेल रहथि तेँ बँचि गेल छलथि । आब ओ फल फूल बेचि कऽ पेटक आगि बुभा रहल छथि । जीबाक कोनो उदेश्य नहि रहि गेल छल हुनका देखलासँ बुभाइत अछि ।

हमर आँखिमे नोर चलि आएल । बाबू लगेमे ठाढ़ छलाह । सुनि रहल छलाह, कानि रहल छलथि । हमरा जेहन लोकसभकेँ माओवादी आ पुलिसकेँ कोन दुश्मनी अछि ?

हम हुनका भोजन करेलहुँ फेर हुनका मदतकेँ आश्वासन दऽ कऽ बिदा कएलहुँ । हुनका सँगक बातचित हमरा बेर-बेर स्मरण अबैत अछि, बेटी सम्भना आब तऽ ओतए स्मशान भऽ गेल अछि । पीड़ा आ खुनसँ प्रत्येक दिन नहा रहल अछि । जतए कहिओ घर छल ओतए आब सुनसान भऽ गेल अछि । लोक उजड़ि गेल अछि ।

हम सोचि रहल छलहुँ आखिर जनआन्दोलनक नामपर की भऽ रहल अछि ? कोन देश बनाबएकेँ खेल भऽ रहल अछि ? लोककेँ मारि कऽ कोन सत्ता ? जखन अपन स्थितिकेँ मूल्यांकन कएलहुं तऽ मोने मोन सान्त्वना भेल जे कम्तिमे हमरा घर तऽ भेट गेल । नहि जानि हमर संगी सभकेँ की भेल हएत ? हमरा तऽ काठमाण्डूमे श्रीमान भेट गेल छथि । मुदा एखनकेँ मतलबी जमानामे ककरो श्रीमान भेटल हएत वा कोनो कोठाकेँ शोभा बनल हएती ।

सभ किछु कतेक बदलि गेल अछि । जतए सभ लोक अपन छोटसन घरमे गरीबीमे सेहो प्रशन्न नजरि अबैत छल, आब पता नहि कोना रहैत हएत । नहि जानि कतेको लड़की महिला मृत्युवरण स्वीकार कएने हएती । कतेक अपन भविष्यकेँ अन्हारमे धकेलि कऽ धन कुवेरक बेटाक झुला झुलाए रहल हएती । अपने घरक राजा रानी कोनो धनीकक नोकरनी बनल हएती ।

बच्चाक भविष्यमे तऽ इजोत होबएके बाते नहि अछि । किछु होटलमे नोकर बनल हएत , किछु पकेटमारक संख्या बढ़ल हएत तऽ किछु भिखारीक टीमसँ जुड़ि गेल हएत । के कहत ? बुझाएमे नहि आबि रहल अछि केहन आगि लागि रहल अछि हमर गाममे एना तऽ किओ सोचबे नहि कएने छल ?

टिभीपर सरकारद्वारा माओवादीसँग वार्ता कऽ समस्याक समाधान करएबला बात सुनैत छी तऽ हमर भीतर खासे उत्साह जेकाँ नहि लगैत अछि । हम सोचैत रहैत छी एना फेर हएत ? हमर जिल्ला फेरसँ ओहने हएत ? ओहने सीजन चलत, ओहने फूल फूलाएत, हँसैत प्रशन्न चेहरा हएत ? ओहने उत्साह फेरसँ हएत ? फेर सभ किछु ओहने भऽ जाएत ?

भलेहि सरकार आ माओवादी बीच बार्ता भऽ जाए, भीड़ भाड़ हएत मुदा ओ लोकसभ की बनत जे डेरा कऽ अपन जीवनकेँ त्रासदीमे जीब रहल अछि । जिनकर अतित अछि मुदा भविष्य नहि । सोचक महासागरमे फसल हम काठमण्डूमे नहि सिन्धुलीमे ठाढ़ छी । सोचि रहल छलहुँ, आबए बला काल्हिक विषयमे ।

परिवर्तन

'हम एकटा गोष्ठिमे जा रहल छी, अबेर हएत तऽ अहाँ भोजन कऽ लेब... बुझल अछि, अहाँ बोर होइत हएब, मुदा की करु, काजे एतेक बढ़ि गेल अछि जकरा अनठाओल नहि जा सकैछ । कोनो आवश्यकता हुए तऽ बेचूकेँ बजा लेब.... ।'

सुषमा चेहरापर अनावश्यक भाव आबए नहि दैथि, हरेक समय प्रशन्न रहबाक प्रयास करैत छलीह । एक समय छल जखन शिव नारायण कहैत छलाह, 'सुषमा हम जा रहल छी, हमरा अबेर भऽ जाएत तऽ अहाँ भोजन कऽ लेब । ....बोर होइत हएब, मुदा हमर काज एतेक बढ़ि गेल अछि, जकरा इग्नोर नहि कएल जा सकैत अछि । ....डाक्टरक समय अपन नहि, रोगीकेँ होइत अछि ।' तीव्रगतिमे अस्पताल जाइत समय सेहो ओ कहिओ घूरिकऽ नहि देखैत छलाह जे सुषमा हुनका गेट धरि छोड़ए अबैत अछि वा नहि ।

आब सुषमाकेँ जाइत देखि ओ उदास होइत छथि । समय ओ पत्निक हाथमे चलि गेल अछि, जकरा लेल कहिओ कनिको समय निकालब ओ आवश्यक नहि बुझै छलथि । एक समय छल हुनकर प्रतीक्षा करैत सुषमाक व्यक्तित्वे नहि बचल छल । आब बोध होइत अछि तखन हुनकर उपस्थिति आ सहभागिताक की अर्थ ?

सफल डाक्टर छलाह शिव नारायण, हाथमे की जादुगरी छलन्हि जे नश छुबिते रोगी ठीक होबए लगैत छल । भोरमे मर्निङ्वाक एकरबाद अध्ययन फेर अस्पताल, एकरबाद क्लिनिक आ अबेर रातिधरि टिभीपर समाचार देखैत छलथि । सुषमा हुनकर प्रतीक्षामे थाकि जाइत छलीह ।

'अहाँ बहुत अबेर कऽ दैत छी रोगी तक तऽ ठीक अछि मुदा प्रत्येक दिन अबेरसँ घर किए अबैत छी ?'

'सुषमा, हम दिनभरि रोगीकेँ पीड़ा देखैत सुनैत रहैत छी । एकरबाद कनि घुमफिर सेहो आवश्यक होइत छैक ।'

'हरेक काजक लेल अहाँलग समय अछि मुदा हमरा लेल किछु नहि ?'

'की मतलब ? रोगीकेँ फिर्ता पठा दिऐक । दिनभरि आँखिमे आँखि मिला कऽ बैसल रहू । नहि प्राक्टिस चलत आ नहि घर ...।'

किछु देरक मौनताक बाद डा.शिव नारायण फेर बजला,'घरमे बैसल रहब तऽ ई चेहरा अहाँकेँ बढ़िया नहि लागत । घर, गृहस्थी, बच्चा, गाड़ी, टिभी, किताब की नहि अछि अहाँ लग ? एकरबादो मुहँ लटकाबएकेँ आदत भऽ गेल अछि ।'

....समय करोट फेरलक । आब ओहे डा. शिव नारायणकेँ सुषमाक अभावक अनुभव भऽ रहल छन्हि । हुनका आगामे भोजन, चाह, जलपान आइरन कएल कपड़ा, टिभी, भिसिडी प्लेयर, किताब आ हरेक प्रकारक सुख साधन अछि । मुदा एहन मनोरञ्जन कखनधरि पसिन आएत, जखन किओ संगमे नहि हुए ।.....कोनो एहन संगी तऽ हुए जे बोध कराबए अहाँ हमरा लेल बहुत आवश्यक आ महत्वपूर्ण छी ।

पहिने सुषमाकेँ एहने अभाव अनुभव होइत छल । जखन डाक्टर साहेब पत्निक पीड़ा नहि बुझलथि । धीरे-धीरे सुषमा एहिमे जीबएके आदी होबए लागल छलथि । शिकायत करब छोड़ि देलन्हि । ओ नहि तऽ बहस करैत छलीह, आ नहि कोनो स्पष्टीकरण मंगैत छलीह, सीमित शब्दमे मात्र बात करैत छलीह । गृहस्थी आ बच्चामे ओ अपन सुख दुःख खोजि लेलन्हि । आब तऽ कहिओ डाक्टर साहेब घरमे होइत छलथि तऽ सुषमाकेँ असुविधा होबए लगैत छलन्हि । हुनका आगामे सुषमा असहज भऽ जाइत छलीह, बुझि नहि पबैत छलीह की बात कएल जाए ।

शिव नारायण इहो नहि बुझए चाहलैथि जे दुनू बेटाकेँ काठमाण्डू पढ़य गेलाकबाद सुषमाक दिन कोना कटैत अछि । सुषमा कतेक असुरक्षित अनुभव करए लागल छथि, हुनका भीतर कतेक अकेलापन

अबैत जा रहल अछि। ओ इहो नहि बुझि सकलथि, बराबर सुषमा अपन घड़ी, मंगलसूत्र, इयर रिङ्ग, औठी खोजैत रहैत छलीह की कतहुँ किओ चोरा नहि लेने हुए। बेर-बेर गेटपर देखैत रहैत छलीह की बन्द कएलहुँ वा नहि।

डाक्टर साहेबकेँ नहि बुझल छलन्हि सुषमाकेँ मीठ, खट्टा वा मसालाबाला केहन भोजनो पसिन अछि। कहिओ संग भोजन करबाक फुर्सते नहि भेटलन्हि। भोजन करएकेँ समयमे ओ अपन योजना आ पत्रिकाक संसारमे हेराएल रहैत छलथि।

सुषमा उल्झन आ निरर्थकतामे जीवन बीता देने रहितैथि, एकटा घटना हुनका जीवन नहि बदलि नहि देने रहति तऽ। डाक्टर शिव नारायणक एकटा रोगी हुनका घर आएल, जकर हाथ जरि गेल छल। सुषमा पुछलन्हि, 'हाथ कोना जरि गेल अछि ?'

'एकटा समाजिक संस्था, बाढि पीड़ितक लेल शिविर लगौने अछि। ओतए भोजन बनबैत छी। चुल्हापर चढ़ल भात उतारए काल ओ तसला हाथे पर खसि पड़ल आ ओहिमे पाकि गेल,' रोगी बाजल।

सुषमाकेँ लागल जेना हुनका जीबाक अवसर भेट गेल हुए। सोचलन्हि, पतिकेँ सेवा बहुत कऽ लेलहुँ बच्चा बाहर चलि गेल अछि, बेचू घर सम्हारि लैत अछि। साहस तऽ नहि छल जे पतिसँ पुछैथि, तैयो दोसर दिन शिविरमे ओ चलि गेलीह।

शिव नारायणकेँ पता चलल तऽ ओ आपत्ति कएलन्हि, 'सुषमा शहरमे करीब-करीब सभ लोक हमरा चिन्हैत अछि। आइए बहुत लोक हमरा टेलिफोन कऽ कऽ कहलन्हि जे शिविरमे अहाँ दिआ भोजन बना रहल छथि।'

'खाली बैसि कऽ उबएसँ बढ़िया किछु समाज सेवा कऽ ली,' सुषमा मुहँ नीचा कएने बजलीह।

'फिल्डक समस्या अहाँकेँ नहि बुझल अछि, देखू ई सभ छोड़ि दिअ सभ निरर्थकक बात छैक।'

पतिक आपत्तिक बादो सुषमा जाएब नहि छोड़लीह। सेवा भावक

कारण ओ जल्दिए समितिक कार्य समितिमे चलि अएलीह । एक दिन गरीबसभक टोलमेसँ काज कऽ कऽ घर अएलीह तऽ शिव नारायण घरेमे उपस्थित छलथि ।

'सुषमा सफाई सिखएके नामपर अहाँ घरोमे कोनो संक्रमण आनि लेब ।'

'संक्रमण ! फेर गरीब टोलक लोक जीबैत कोना आछि ?'

'ओकरसभक शरीर संक्रमणकेँ अनुकूल बनि जाइत अछि । अहाँ मेडिकलक बात नहि बुझबैक ।'

'बुझल अछि ....।'

'तखन अहाँ अस्पतालो देखू । हम राजीनामा दैत छी, ' शिव नारायण झझकि कऽ बजलाह ।

'हमर कहएकेँ मतलब ई नहि छल । हमरा काजसँ अहाँक रुटीन प्रभावित नहि हएत आ नहि घर ।'

'थाकल हारल घर अबैत छी तऽ मैडम बेपत्ता रहैत अछि । इहे अहाँक अछि व्यवस्था ?'

'एकर दोषी हम नहि छी । अहाँकेँ आबए जाएकेँ समय निश्चित नहि अछि ।'

'समय निश्चित करबाक लेल रोगीकेँ छोड़ल नहि जा सकैत अछि । ओ दोसर डाक्टर लग चलि जाएत । हजारो रुपैयाकेँ नोक्सान हएत, लोक सोचत डाक्टर शिव नारायणकेँ कोनो समये नहि अछि ।'

शिव नारायणक तामस बढ़ि रहल छल । सुषमा स्थितिके बुझि चुप भऽ गेलीह । ओ हरेक समय ध्यान रखैत छलीह जे पतिकेँ आत्मसम्मानपर चोट नहि पहुँचए आ हुनक व्यक्तित्व सेहो बनल रहय । सीमित शब्दमे ईमान्दारी आ सही तरिका सँ बात करैत छलीह । इहे हुनकर शक्ति बनैत गेल । ओ कतेको संस्थामे काज करए लगलीह । हुनकर नेतृत्वमे महिलासभ नव-नव काज सिखलक । उत्पादनक सामान बिकाएल, सांस्कृतिक गतिबिधि शुरु भेल, महिला विरुद्धक घरेलु हिंसासभकेँ अन्त करएकेँ पहल शुरु भेल कूल मिला कऽ काजक परिणाम बढ़िया आबि

रहल छल । तलाकक जिद्दमे रहल दम्पतिकेँ सलाह दऽ कऽ मेलो करौलन्हि ।

उत्कृष्ट समाज सेवाक लेल सुषमा प्रजातन्त्र दिवसपर पुरस्कृत सेहो भेलीह । एकर समाचार हुनकर फोटो सहित पत्रिका सभमे छपल छल । जतए-ततै हुनके प्रशंसा भऽ रहल छल । एकटा डाक्टर मित्र शिव नारायणकेँ फोन कएलन्हि, 'आजुक पत्रिकामे मैडमकेँ तस्विर देखलहुँ, सोचलहुँ अपनेकेँ बधाई दऽ दी ।'

'हँ सर, ओ कार्यक्रमसभमे प्रमुख अतिथि सेहो बनैत छथि, हम तऽ छोट छिन डाक्टर ।'

'ई अहाँक उदारता अछि डाक्टर साहेब । अपने हुनका रोकितहुँ तऽ हुनकर प्रतिभा कोना निखरति । एहिमे अहाँक सेहो सहयोग रहल अछि ....।'

सुषमाकेँ बढ़ैत पहिचान आ लोकप्रियता शिव नारायणकेँ बिचलित कऽ देने छलन्हि ।

कमजोर आ हीनसन देखएबाली सुषमा सुन्दर देखाए लागल छलीह आ इम्हर शिव नारायण अस्थिर, असहज आ अशान्त रहए लगलथि । दुनूकेँ घर आबए जाएकेँ समयक तारतम्य नहि छल, एहि द्वारे आब बेचू हुनका भोजन परैसि कऽ दैत छल । असगरे खाथि काल सुषमाक बात स्मरण अबैत छलन्हि, 'समयपर आएल करु, हम भोजनपर अहाँकेँ प्रतीक्षा करैत रहब ।'

पत्निक कहल बातकेँ अर्थ आब बुझएमे आबि रहल छलन्हि । आब ओ स्वयं चाहैत छलथि जे सुषमा समयपर घर आबैथि, मुदा आब सुषमा ब्यस्त छथि । ओहि वर्ष नगरपालिकाक चुनावमे मेयर पदक लेल सुषमाकेँ उठाओल जाए बहुत ठामसँ दबाब आबि रहल छल । ई सुनि कऽ शिव नारायण आओर तिलमिला गेला, 'चुनावमे ठाढ़ नहि होएब, अहाँकेँ बुझल अछि राजनीतिक माहौल केहन अछि ?'

'जी बुझल अछि । कार्यालयमे किछु गोटे आएल रहथि । हम अस्वीकार कऽ देलहुँ । हम अपने काजसँ प्रशन्न छी, राजनीति नहि करए चाहैत

छी ।'

शिव नारायण भीतरे-भीतर जड़ि गेल रहथि । आइ नहि तऽ की काल्हिओ पत्निक मोनमे राजनीतिक महत्वाकांक्षा उठि गेल तऽ !

दोसर साल हुनकर बदली सर्लाही जिल्लामे भऽ गेल । हुनका लागल सुषमाकेँ बढ़ैत उचाईकेँ रोकबाक लेल इहे सही अवसर अछि । एहिसँ पहिने ओ नहि जानि कतेको बेर दौड़ बरहा कऽ कऽ बदली रोकबौने रहथि । मुदा एहि बेर बदलीकेँ खबरि अबिते ओ कहए लगला, 'सुषमा सामान बान्हु ?'

'हम कहिओ घर छोड़ि कऽ अहाँ संगे नहि गेल छी । अहाँ अपन बदली अस्वीकृत करबा लिअ ।'

'प्रयास कएने छलहुँ, मुदा नहि भेल ।'

'देखू, हमरा तऽ एतहि रहबाक आदत भऽ गेल अछि । एतहि बहुत काज अछि ।'

शिव नारायण बेटाकेँ टेलिफोन कएलन्हि, 'तोहर माँ जिद्दी होइत जा रहल छौक ।'

'माँकेँ काज करए दिऔक । अहाँ असगरे चलि जाउ । मलंगवा बहुत दुरो नहि अछि, दू तीन घण्टाकेँ ड्राइविङ्ग कऽ अहाँ साप्ताहिक छुट्टीमे घर आबि सकैत छी ।'

हुनका लागल बच्चा सेहो सुषमाक पक्षमे ठाढ़ अछि । ओ अपन व्यस्ततामे इहो नहि देखलन्हि जे कखन हुनकर बच्चा बड़का भऽगेल । कखनो बच्चाकसँग समय नहि बितौलन्हि । ओकर पढाई लिखाई वा कैरियर लऽ गम्भीरतासँ नहि सोचलन्हि । बच्चासँ सेहो बातचित औपचारिक होइत छल, तोहर पढाई कोना चलैत छौक ? काल्हि राति अबेरसँ किए एलहएँ ...?

बच्चा सेहो पापासँ एहिना औपचारिक बात करैत छल । पापा काज कोना चलैत अछि ? मर्निङ्ग वाक जाइत छी वा नहि । माँकेँसँग बेटा सेहो स्वयंकेँ मजगुत बना लेलक, शायद एहि द्वारे ओ सुषमाकेँसँग चलबाक लेल नहि कहि सकलथि असगरे चलि गेलथि । छुट्टीमे कहिओ अबैथि,

कहिओ नहिओ अबैथि। रिटायरे भऽ कऽ घुरलथि।

.....आइ अचानक सभ स्मरण भऽ रहल छल। ओ अपन चारु दिस एकटा गोलक घेरा बना लेने छलथि, जाहिमे कनियाँ आ बच्चाक प्रवेश निषेध छल।

आब ओ असगरे छथि। अस्पताल जाइत नहि छथि, रोगी घर नहि अबैत छन्हि, बेटा अपन-अपन जीवनमे मस्त अछि आ पत्नि सेहो अपना काजमे मग्न छथि। कतेको बेर घेराकेँ तोड़एकेँ प्रयास कएलन्हि मुदा पुरुष अहम आगा आबि गेल।

सोचैत छलथि, पत्निक संग भोरमे मर्निङ्गवाक करी, चाह पीबि, टिभी देखी मुदा ....।

'मालिक.....' बेचू तेसर बेर हुनका कहलक।

'भोजन लगा देने छएँ बेचू ?' ओ चौंककऽ उठला।

'मालिक किछु लोक अहाँसँ भेटए आएल अछि।'

'हमरासँ ....नहि ... नहि, सुषमासँ भेटए आएल हएत।'

'नहि मालिक, ओसभ अपनहिसँ भेट करए आएल छथि।'

शिव नारायण घरक आगामे रहल पार्कमे अएलाह। ओहिठाम पहिनेसँ कुर्सीपर बैसल तीन गोटे हुनका देखि कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

'प्रणाम डाक्टर साहेब।'

'प्रणाम-प्रणाम बैसल जाओ....।'

औपचारिक सम्बोधनक बाद एक गोटे बाजल, 'मैडम अपनेकेँ कहने हएती जे महिला हिंसा विरुद्धक सप्ताहव्यापी अभियान चलि रहल अछि। उद्योग वाणिज्य संघक हलमे एकटा कार्यक्रम कऽ रहल छी, एहिमे कतेको संस्था सहभागि अछि अपने आदेश दी तऽ अपनेकेँ हमसभ प्रमुख अतिथि बनाबए चाहैत छी।'

'सुषमा तऽ किछु नहि कहलन्हि अछि ?'

'ओ चाहैत छथि हम सभ पहिने अपनेसँ आदेश लऽ ली। ओ कहैत छलीह जे अपनेके सहयोगेसँ एतेक काज कऽ रहल छथि। सर, अपने मैडमके बहुत प्रोत्साहन कएलहुँ अछि। अपने पुरुष मानसिकताकेँ

बढ़िया जेकाँ स्पष्ट कऽ सकैत छिऐक ताहि द्वारे हमसभ प्रमुख अतिथि बनाबए चाहैत छी ।

अनुमति लऽ कऽ आयोजक चलि गेल ।

शिव नारायण पार्कमे ओहिना बैसल रहलथि । सुषमाक उदारता आइ हुनका अपन उचाइकेँ बहुत छोट कऽ देने अछि । अचानक माघ महिनाक रौद बेसी गरमा देने छल । नजरि पार्कमे लहलहाइत वनस्पति सभ पर पड़ल ।

सुषमाक व्यक्तित्वक छाप पार्कसँ भानसघर धरि देखाइ दऽ रहल छल । सहीमे ओ असगरे लम्बा समय बितौलन्हि अछि ।

'मालिक भोजन लगा दिअ ?' बेचू फेर बाजल ।

'मैडमकेँ आबए दही ।'

घरमे अएलाक बाद हरेक दिन जेकाँ सुषमा पुछलीह, 'भोजन कएलहुँ ?'

'नहि किछु गोटे आबि गेल छल ।'

'हँ, ओ सभ चाहैत छथि अहाँ कार्यक्रमक प्रमुख अतिथि बनी ।'

'ई प्रस्ताव अहाँ दैतहुँ तऽ हमरा बढ़िया लगैत ।'

'हम कहितहुँ तऽ अहाँ स्वीकार करितियै ?'

सुषमाक असमंजसताक देखि शिव नारायण लज्जित जेकाँ लागि रहल छलथि, 'हँ शायद ....पता नहि केहन घमण्ड अछि हमरामे । हम अहाँकेँ कहिओ सहयोग नहि कएलहुँ मुदा लोक सोचैत अछि जे हम महान छी ।'

बदललसन बुझा रहल छलन्हि शिव नारायणक मुखमुद्रा । स्वर सेहो नरम छलन्हि ।

सुषमा साहस पाबि कऽ कहलन्हि, 'सहयोग तऽ अहाँ करबे कएलहुँ अछि, एक शब्दमे मना कऽ देने रहितहुँ तऽ हम सहिमे असहाय भऽ गेल रहितहुँ ।'

डाक्टर शिव नारायण सुषमा दिस एना तकलथि जेना आब पुरान राग द्वेषसभ धोआ गेल हुए । शायद सुषमो इहे चाहैत छलथि ।

बादल

बससँ उतरलाक बाद उदित छोटसन बजारमे इम्हर उम्हर तकलन्हि। आइ हुनका अपना गामक किओ नजरि नहि आबि रहल छल। गाम पहुँचएकें जल्दिमे ओ पान धरि खाए लेल सेहो नहि रुकलथि। आइ पहिलबेर हुनका संग एना भेल अछि। एकटा युवक कनहापर झोरा लटका कऽ हुनके गामक बाट दिस जाइत देखाइ देलक। जानमे जान अएलन्हि। लगलन्हि गामेकें कोनो युवक हएत....सालक बाद कहिओ–कहिओ तऽ अबैत छी कतएसँ चिन्हब एक दोसरकें।

'हौ भाई कनी इम्हर सुनअ.....गिद्धा गामक लेल कोनो गाड़ी नहि हेतैक?'

'अंकल गाड़ी तऽ आइ इम्हरकें लेल बन्द अछि। काल्हि जे पानि पड़ल, एहिमे जतए ततए सड़क टुटि गेल,' युवक बहुत आदरकें संग जवाव देलक।

'तोरो उम्हरे जाएकें छअ ...।'

'नहि-नहि....।'

'आइ हमरा गामक किओ देखाइ नहि दऽ रहल अछि ....।'

'कतएसँ देखाइ देत।'

'किए ....।'

'अंकल आइ काल्हि पैदल के चलैत अछि। हमरा तऽ मजबुरी अछि। हमरासँग चलबाक अछि तऽ पुरनका बाटे चलू, हम माड़रिक रहएबला छी।'

'चलह एहि बहाने पुरान याद ताजा भऽ जाएत ....करीब १० वर्ष भऽ

गेल अछि, एहि बाट पर चलला ।'

दुनू गोटे बात करैत–करैत ओहि छोटसन नदी लग पहुँच गेला जतएसँ हुनकर बाट अलग–अलग भऽ जाइत अछि । युवक हाथ जोड़ैत बाजल,'ठीक छैक अंकल ......प्रणाम ।'

'ठीक छैक बाबू....।' थाकल हारल आवाजमे उदित बजला आ पुलक किनारपर बनल पुलियापर बैसि रहलथि ।

संगी सेहो आँखिसँ ओझेल भऽ गेल । जतए धरि नजरि पहुँचबैत किओ नजरि नहि आबि रहल छल । आब हुनका आगामे अचानक ठाढ़ भऽ गेल करीब १ किलो मिटरकेँ चढ़ाइ जकरा देखि उदितकेँ दिनेमे चाँन तारा नजरि आबए लागल छल ।

मोने मोन अपना आपकेँ धिक्कारए लगला । नहि जानि कोन विपतमे गाम आबएकेँ सोचलहुँ, हमरासँ बढ़िया तऽ शिला छलीह जे एक शब्दमे कहि देने छलीह, 'बर्षातक मौसममे ओ गाम...अहाँकेँ जेबाक अछि तऽ जाउ ....हमरा नहि जाएकेँ अछि । की भेलैक यदि काकाजी बेमार छथि तऽ हुनकर बच्चासभ तऽ हुनका लग पहुँच गेल हेतन्हि ने ।'

शिला सलाह दैत कहने रहथि, 'हमर सलाह मानु तऽ रहए दिऔक अहूँ, बादमे देखल जएतैक तहिआधरि मौसमो ठीक भऽजाएत ।'

हुनकर बात मानि लेने रहितहुँ .....नहि ...नहि ....पहिनहो हुनकर बात मानि कऽ.....हम ....पछता रहल छी । हम ओ काकाकेँ कोना बिसरि सकैत छी जिनका बदौलत अपन पूरे परिवारसँग विराटनगर जेहन शहरमे ठीकठाक जेकाँ शान्तसँ दूटा रोटी खा रहल छी । दू दिन पहिने जखन चन्द्र शेखर बतौलक काका गम्भीर बेमार छथि, बचएकेँ कोनो सम्भाबनाधरि नहि छन्हि । मोनमे मात्र इहे इच्छा भेल कमसँ कम अन्तिमो क्षणमे हुनकर दर्शनो कऽ सकीह ।

सभ किछु भेलाक बादो हुनका लेल किछु नहि कऽ सकलहुँ । एकबेर विराटनगर आनि लैतहुँ तऽ की भऽ जएतैक ? जिनका खराब लगैत .....लागए दैतहुँ ....स्टेटस... पड़ोसी .... गवार.....छी..छी...। ओहि दिन अस्थिरे सँ कहुना हिम्मत जुटा कऽ कहने रहथि काका, आइयो हुनकर

कहब एक एक शब्द स्मरण अछि ।

'बेटा तहनमे ....तोहर काकी जे छौक ने....ई महिलासभकेँ सेहो ....कनीक नीक बात देखलक ....लऽ अबैत अछि नव-नव समस्या ....।'

कनीक लम्बा श्वास लैत ओ आगा कहलन्हि, 'कृष्णाष्टमी देखबाक लेल ....कहि रहल अछि ।'

'एतेक बातक लेल अहाँ एतेक ....किए नहि भादवमे हम चलि आएब आ लऽ जाएब अहाँ दुनू गोटेकेँ अपनासँग । एक डेढ़ हप्ता बढ़िया जेकाँ विराटनगर ....अहाँ आ .....काकी ।'

ओहि समय कतेक सहजतासँग बाजि देने छलहुँ । पहिलबेर एतेक खुशी भऽ कऽ काकीकेँ तेजीसँ सिढ़ी चढ़ैत देखलहुँ । ओ शायद पूरा बात सुनि लेने छलीह । पूरे ५ सालधरि कृष्णाष्टमीक सपना देखैत रहलीह आ एकदिन खबरि आएल काकी एहि संसारसँ चलि गेलीह ।

अपना आपकेँ धिक्कारैत ओ पुरान आदतसँ मजबुर एकटा बड़का पाथर उठा कऽ नदीमे फेकि देलन्हि । जे नदीक तेज बहाबमे नहि जाइन कतए बिलिन भऽ गेल । ओना ओ छोटसन नदीमे बहुत कम पानि होइत छल ।

स्कूल अबैत जाइत जखन कहिओ पेट खराब होइत छल तऽ पानिक खोजिमे बहुत नीचा गेलाक बाद पानि भेटैत छल । आइ ओहे नदी अपन उफान पर अछि । ओकर सोरक आगा ओ पाथरकेँ छप्पधरि नहि सुनाइ देलक । आब हिम्मतकऽ सामना करबाक लेल ठाढ़ छल चढ़ाइ ई ओहे चढ़ाइ अछि जकरा तीस बर्ष पूर्व स्कूलसँ अबैत प्रत्येक दिन पार करैत छलाह । कहिओ ध्यान सँ देखबे नहि कएलहुँ, ई छोटसन नदी ...ई बाट...आ ...ई चढ़ाइ आइ एतेक डेराओन कोना भऽ गेल ? सडककेँ काल्हिए टुटबाक छल ।

हे भगवान ! मोनमे डर ...एना लागल एहि बाटपर किओ चलबे नहि कएलक अछि । फेर मस्तिष्कमे ओहे पुरान आइडिया । ओहि समय कहिओ समय पास करबाक छल वा घर जल्दि नहि जएवाक होइत छल तऽ बाटमे घोड़ाकेँ केश खोजैत छलहुँ.... आ भेटिओ जाइत छल । उपर पहुँचलाक

बाद गनैत छलहुँ तऽ बहुते केश भऽ जाइत छल जाहिमे बराबर फस्ट अबैत छलहुँ। मुदा आइ तऽ बन्जर सड़कपर खच्चरोकेँ चलला बर्ष बीत गेल हएत। जहिआसँ गामधरि ग्राभेल सड़क पहुँचल अछि। खच्चरबला सभ अपन–अपन खच्चर बेचि देलन्हि तैयो दश पन्द्रह डेगपर आइयो केश भेट रहल अछि। एहि प्रकारे धार पार करैत–करैत बहुत केश जम्मा भऽ गेल जकरा ओ गनलथि नहि। आब उदित राहतक नम्हर श्वास लेलन्हि ...।

चलू एकटा युद्ध तऽ जीत लेलहुँ। आब तऽ सीधा बाट अछि। धारमे अपन पुरान दिन जेकाँ ओ बड़का पाथर पर सुति आकाशकेँ देखि रहल रहथि। आइ कमसँ कम मौसम हुनका पर अपन कृपादृष्टी बना कऽ रखने अछि। सूर्य दिनभरि बादलसँग आसपास खेला रहल अछि। बादल रंग बिरंगक रंगसँ अलग–अलग आकृति बनाबएमे व्यस्त अछि, लगैत अछि आइ ओकरो कोनो मस्ती सुझल छैक। बड़का बादल छोट बादलकेँ दबाकऽ अपनामे समाहित कऽ रहल अछि। छोटका बादल कतबो अपना आपकेँ बचाबएकेँ कोशिस कऽ रहल छल मुदा पूरा प्रयास एकक्षणमे छोट साबित भऽ रहल अछि। उदित किछु क्षणक लेल बिसरि गेला की ओ कतए छथि तखने किछु परिचित घण्टीक आवाज कानमे पड़लन्हि। ओ एकदम धरफरा कऽ उठि गेलाह। आगामे आइरपर घास चरैत-चरैत...टन...टन..घण्टी बजबैत एक जोड़ा बरद हुनका दिस बढ़ि रहल छल।

प्रसन्नताक कोनो ठेकान नहि रहल एकरा देखैत। बरद एकदम नजदिक आबि गेल छल। पाछुसँ पेना लेने ओकर मालिक सेहो आबि रहल छल।

'लाल भाई प्रणाम,' कहैत-कहैत भोला उदितके जोड़सँ पजिया लेलन्हि।

'परिवारमे सभ कुशल छअ ने ?'

'हँ लाल भाइ।'

'काकाकेँ देखए आएल हएबऽ लाल भाई।'

'हँ केहन छन्हि हुनकर स्वास्थ्य ....?'

'स्वास्थ्य आब कहाँ ....।'

'मतलब की ....?'

'भेल तऽ एखन किछु नहि...मुदा कहल नहि जा सकैत छअ ....कतेक दिनक औरदा छन्हि ।'

'भोला तो तऽ जनैत छअ हमरा लेल बाबूजीसँ बढि कऽ छथि ओ ....मात्र एक बेर अन्तिम दर्शन ....।'

'ई सभ बस उपरबालाकेँ खेल छअ....लाल भाई जे अपनेक भाग्यमे हेतऽ...।'

आब दुनू बीचक वार्तालापमे पसरल मौनताके छोड़ि रहल छल मात्र स्वरवद्ध ढंगसँ बाजि रहल बरदक घण्टी । किछु दूर धरि दुनू गोटे एहिना चललथि फेर भोला बाटमे किछु पात तोड़लथि ओहि सँ चिलम बनौलन्हि । कन्हापर टाँगल भोरामेसँ तम्बाकु निकालि ओहिमे भरलथि । दूटा पाथरक बीच उज्जर रुइ जेहन किछु खास पत्तिक निचला सतहमे रखलन्हि । लोहाक खास टुकरा सँ ओकरा जोड़सँ रगरलन्हि आ भऽ गेल आगि तैयार । ओकरा चिलममे भरल तम्बाकु उपर राखि जोड़–जोड़सँ सोट मारए लगला । धुवाँक एक बड़का सन गोल मुहँसँ छोड़ैत अहुँ...अहुँ ...खोखैत-खोखैत उदित दिस तकला आ बजला, 'की कहिअ लाल भाई बेकार अछि एतएकेँ जिनगी...हम तऽ अपन पाएरमे स्वयं कुरहरि मारने छी । बाबू तऽ बहुत प्रयास कएलन्हि मुदा हमरा गाममे की लिखल छल । नेपालगञ्जमे जाहि विभागमे हमर नोकरी लागल छल ओहि संगहि काज करएबला तोरे जेकाँ मालदार भऽ गेल मुदा हम जतएकेँ ततहि... ।'

आब दोसर सोट पहिनेसँ बेसी जोड़सँ घिचलन्हि जे स्पष्ट देखाइ दऽ रहल छल,भोलाक तनाएल गालपर ।

उदितसँ भोला तीने सालक छोट छला मुदा १५ सालसँ बड़के लगैतसन बुभाइत छला । एहि बेर धुवाँक फुकना पहिनेसँ बड़का होबएकेँ सँग–सँग खोकी सेहो देर धरि भेल । खोखैत–खोखैत आब हुनकर आँखि सेहो लाल भऽ गेल ।

आब गाम स्पष्ट देखाई देबए लागल छल । गाममे पहिनेकेँ अपेक्षा पक्की घर बनि गेल छल । पक्की घरक बीचक दुरी सेहो कम भऽ गेल

छल ।

'लाल भाइ आब गाम पहुँचएमे कनिके देर लागत, जहिआसँ सड़क बनल अछि इम्हर किओ तकबो नहि करैत अछि। नहि तऽ एखनधरि पूरे गाममे खबरि पहुँच गेल रहथि जे आइ फलना गाम आबि रहल छथि। हमहुँ माड़रि गेल छलहुँ ई बरद आनए लाए ....।'

उदितकेँ आब भोलाक बातमे कोनो इन्ट्रेष्ट नहि रहि गेल रहन्हि। हुनकर मोन तऽ एहि बातसँ बेसी डेराएल छल, जे गाम कहिओ बच्चाक हल्लासँ ...कहिओ जोड़सँ बजल रेडियो टेप रेकर्डरसँ....कहिओ ककरो आपसी झगड़ासँ.....वा कहिओ ककरो नोक्सान भेलापर गारिसँ गुञ्जैत रहैत छल आइ पूरे शान्त किए अछि ? गामक नजदिक पहुँचते आब उदितकेँ अपन घर सेहो देखाइ देबए लागल जाहिमे लोककेँ भीड़ सेहो बुझा रहल छल। ओ ई सभ ध्यानसँ देखिए रहल रहथि की ओहि घरसँ जोड़–जोड़सँ कानएके आवाज आबए लागल। उदित सडकपर राखल कोनो ईटा खपड़ासँ टकरा खसहेवाला रहथि की भोला हुनका पकड़ि लेलक। आब बरदक घण्टी हुनकासँ दूर चलि गेल छल। सूर्य सेहो पहाड़क पारसँ देखएकेँ प्रयास कऽ रहल छल। मुदा हुनकर दृष्टि आब अकाशे धरि सीमित रहि गेल छल। जे आब अपन लालीमासँ मात्र आकाशमे पसरल बेरंग बादलमे रंग भरएकेँ प्रयास कऽ रहल छल।